सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

CELEBRATING 75 YEARS OF INDIA'S INDEPENDENCE

फोटो प्रदर्शनी
PHOTO EXHIBITION

आयोजक
केंद्रीय संचार ब्यूरो
फोटो सहयोग: फोटो प्रभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

Organised by
Central Bureau of Communication
Photo Courtesy : Photo Division
Ministry of Information & Broadcasting
Govt. of India

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

अनेकता में एकता

Unity in Diversity

भारत शुरू से ही बहु-आयामी संस्कृति, वेषभूषा, खान-पान इत्यादि का देश रहा है। विभिन्न धर्मों और समुदाय के लोग शांति और सह- अस्तित्व के साथ यहाँ रहते आए हैं। भारतवासियों को देख कर कोई नहीं कह सकता कि इनमें किसी तरह का मतभेद है। यह हमारी हजारों सालों की उपलब्धि है। यही समरसता है, यही अनेकता में एकता है, जो प्रायः किसी दूसरे देश में दुर्लभ है। इसी से हमारा देश सोने की चिड़िया बना और इसकी समृद्धि की चर्चा सारी दुनिया में फैलती चली गई।

India has been a country of multi-dimensional culture, attire, food, etc. from the very beginning. People of different religions and communities have lived here in peace and co-existence. Looking at the people of India, no one can say that there is any difference between them, which is an achievement of thousands of years. This is harmony; this is unity in diversity, which is often not found in any other country. Hence our country flourished into a unique nation and the word of its prosperity went on spreading all over the world.

Central Bureau of Communication (CBC)- Ministry of Information and Broadcasting, Government of India

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

यूरोपीय व्यापारियों का भारत आगमन

European merchants arrived in India

भारत की समृद्धि की चर्चा जैसे-जैसे विदेशों में फैली, व्यापारियों के लिए यह आकर्षण की वजह बनती गई। मध्य-एशिया और चीन से तो भारत का व्यापार सिंधु घाटी सभ्यता के समय से ही चला आ रहा था, जो यूनान तक जा पहुंचा था। 16वीं शताब्दी में यूरोप के देशों के लिए भारत से व्यापार को बेहद उत्सुकता पैदा हो गई थी। इस सिलसिले में पुर्तगाली, डच, (हालैंड या नीदरलैंड), फ्रांसिसी और अंग्रेज हमारे देश में आए। भारत से व्यापार के सिलसिले में इन यूरोपीय देशों के आपस में झगड़े होते रहे और आखिर में अंग्रेज यानी ब्रिटिश व्यापारी के रूप में विजयी रहे।

As the talk of India's prosperity spread abroad, it became a reason of attraction for the traders. India's trade with Central-Asia and China was going on since the time of the Indus Valley Civilization, which reached to Greece. In 16th century, European countries had great interest to trade with India. Following which the Portuguese, Dutch, (Holland or Netherlands), French and British landed in our country. This lead to a fight among the European countries to conquer the trading benefits in India and in the end the British Businessmen were victorious.

वास्को डी गामा, एक पुर्तगाली खोजकर्ता और समुद्र के रास्ते भारत पहुंचने वाले पहले यूरोपीय थे, (1497-1499)

Vasco da Gama, was a Portuguese explorer and the first European to reach India by sea, (1497–1499)

जोसेफ मार्क्विस डुप्लेक्स (1 जनवरी 1697 -10 नवंबर 1763) फ्रांसीसी भारत के गवर्नर-जनरल और रॉबर्ट क्लाइव के प्रतिद्वंद्वी थे।

Joseph Marquis Dupleix (1st January 1697 – 10 November 1763) was Governor-General of French India and rival of Robert Clive

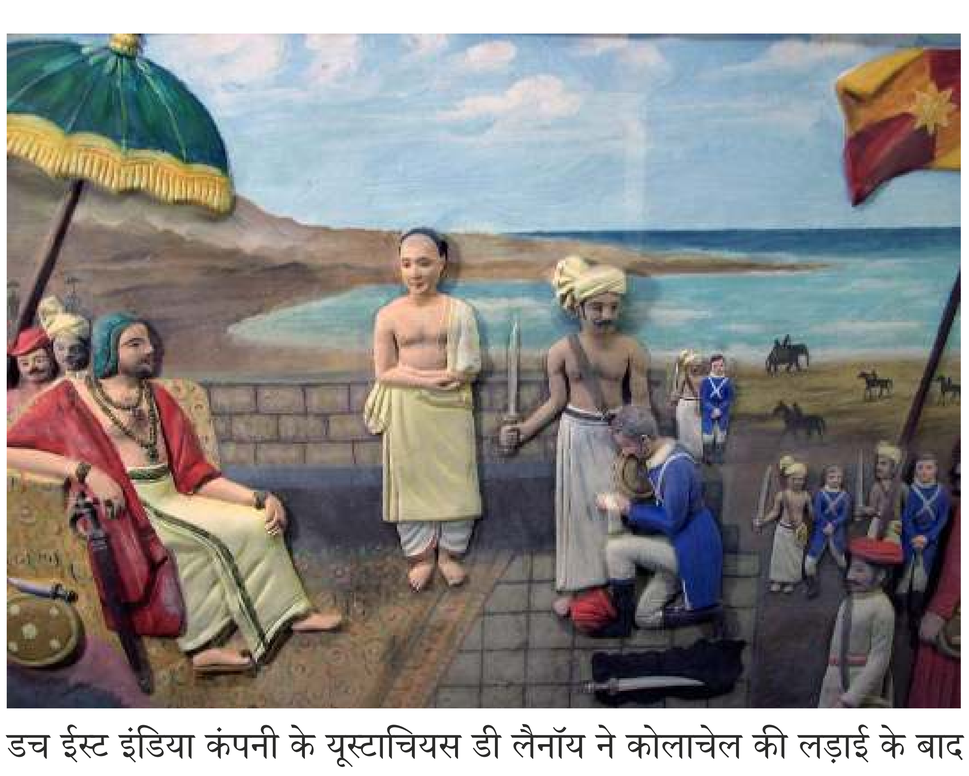

डच ईस्ट इंडिया कंपनी के यूस्टाचियस डी लैनॉय ने कोलाचेल की लड़ाई के बाद त्रावणकोर के भारतीय साम्राज्य के महाराजा मार्तंड वर्मा के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।

Eustachius De Lannoy of the Dutch East India Company surrenders to Maharaja Marthanda Varma of the Indian Kingdom of Travancore after the Battle of Colachel.

आज़ादी का अमृत महोत्सव
#AmritMahotsav

ईस्ट इंडिया कंपनी
East India Company

भारत की समृद्धि की चहुंओर चर्चा सुनकर ब्रिटेन के व्यापारियों ने 31 दिसंबर, 1600 ईस्वी में 'ईस्ट इंडिया कंपनी' नाम से एक व्यापारिक कंपनी बनाई। इस कंपनी को ब्रिटेन की महारानी ने भारत के साथ व्यापार की अनुमति और संरक्षण दिया। कैप्टेन विलियम हाकिंस 1609 ई. में ब्रिटिश क्राउन की तरफ से भारत पहुंचा। इन्होंने मुगल शासक जहांगीर से भेंट की और अंग्रेजों के लिए व्यापार में कुछ रियायतें प्राप्त करने की कोशिश की। साल 1615 ई. में थॉमस रो भारत आया। ईस्ट इंडिया कंपनी को मुगल शासन की तरफ से व्यापार में कुछ रियायतें दी गईं। इसमें सूरत बंदरगाह के अलावा बंगाल के रास्ते भी व्यापार करने की छूट दी गई।

After exploring the enormous wealth and business opportunities in India, the British merchants formed a trading company called 'East India Company' on 31st December, 1600 AD. This company was accorded permission and protection by the Queen of Britain to do trade in India. Captain William Hawkins reached India on behalf of the British Crown in 1609 AD. He met the Mughal ruler Jahangir and persuaded him to avail concessions in trading for the British. Meanwhile Thomas Roe came to India in the year 1615 AD. The East India Company was offered few concessions in trade by the Mughal rule. Apart from Surat port, it was allowed to trade through Bengal also.

कैप्टेन विलियम हाकिंस 1609 ई. में ब्रिटिश क्राउन की तरफ भारत पहुंचा।

Captain William Hawkins reached India on behalf of the British Crown in 1609 AD

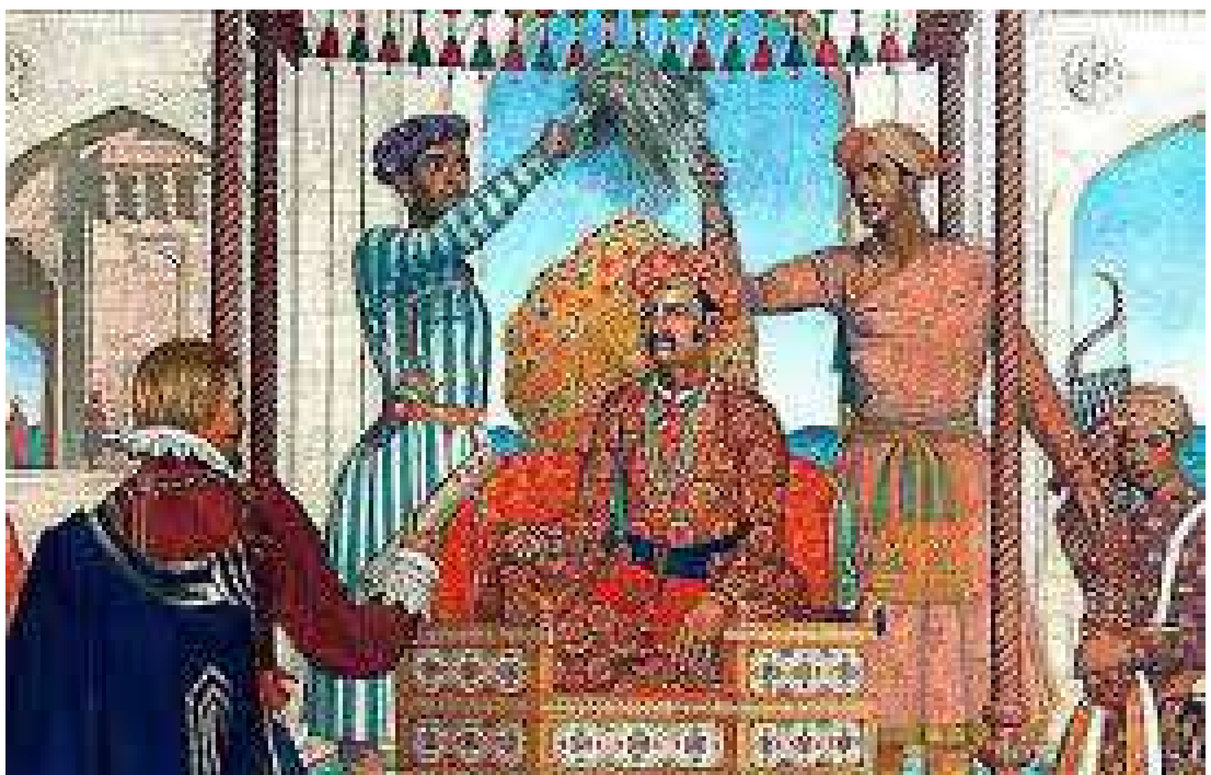

कैप्टेन विलियम हाकिंस ने मुगल शासक जहांगीर से भेंट की और अंग्रेजों के लिए व्यापार में कुछ रियायतें प्राप्त करने की कोशिश की।

Captain William Hawkins met the Mughal ruler Jahangir and tried to get some concessions in trade for the British

थॉमस रो के प्रयासों से ईस्ट इंडिया कंपनी को मुगल शासन की तरफ से व्यापार में कुछ रियायतें दी गईं।

With the efforts of Thomas Roe, the East India Company was given some concessions in trade on behalf of the Mughal rule.

आज़ादी का अमृत महोत्सव
#AmritMahotsav

प्लासी का युद्ध

Battle of Plassey

ईस्ट इंडिया कंपनी ने इन व्यापारिक छूटों का फायदा उठाया और सूरत, कलकता में अपनी कोठियां स्थापित कर लीं। शीघ्र ही कंपनी ने भारत की अंदरूनी कमजोरियों को समझ लिया और इसने अपनी कोठियां बढ़ानी शुरू कर दी। मुगल सत्ता की तरफ से मिली छूट का कंपनी ने दुरुपयोग करना शुरू कर दिया। इतना ही नहीं कंपनी भारतीय राजनीति में भी दखल-अंदाजी करने लगी। इसने स्थानीय सैनिक भी भर्ती करने शुरू कर दिए।
ऐसे ही अन्य तात्कालिक कारणों के चलते वर्ष 1757 में प्लासी नामक स्थान पर युद्ध हुआ। जिसमें एक ओर थी ईस्ट इंडिया कंपनी और दूसरी ओर बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला की सेना। षड्यंत्र और नवाब के लोगों से कंपनी की मिली-भगत के कारण सिराजुद्दौला की हार हुई। यहीं से ईस्ट इंडिया कंपनी व्यापारिक कंपनी से शासक बन बैठी।

The East India Company took advantage of these trade concessions and established its units at Surat and Calcutta. Soon the company understood the shortcomings such as strife among the rulers and started expanding its tentacles. The company not only started abusing the exemption given by the Mughal power but also started interfering in Indian political affairs. They began to recruit local soldiers too.
These developments led to the famous war Battle of Plassey in 1757 which was fought between the East India Company and the army of Siraj-ud-Daula, the Nawab of Bengal. Conspiracy and treason defeated Siraj-ud-daula. And that was the period from when the East India Company declared itself as the rulers of India which began as a trading company.

बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला
Siraj-ud-daula, the Nawab of Bengal

ईस्ट इंडिया कंपनी ने इन व्यापारिक छूटों का फायदा उठाया और सूरत, कलकता में अपनी कोठियां स्थापित कर लीं। ऐसी ही सूरत में स्थापित कोठी।

The East India Company took advantage of these trade concessions and established its cells at Surat, Calcutta. The kothi established in such a condition.

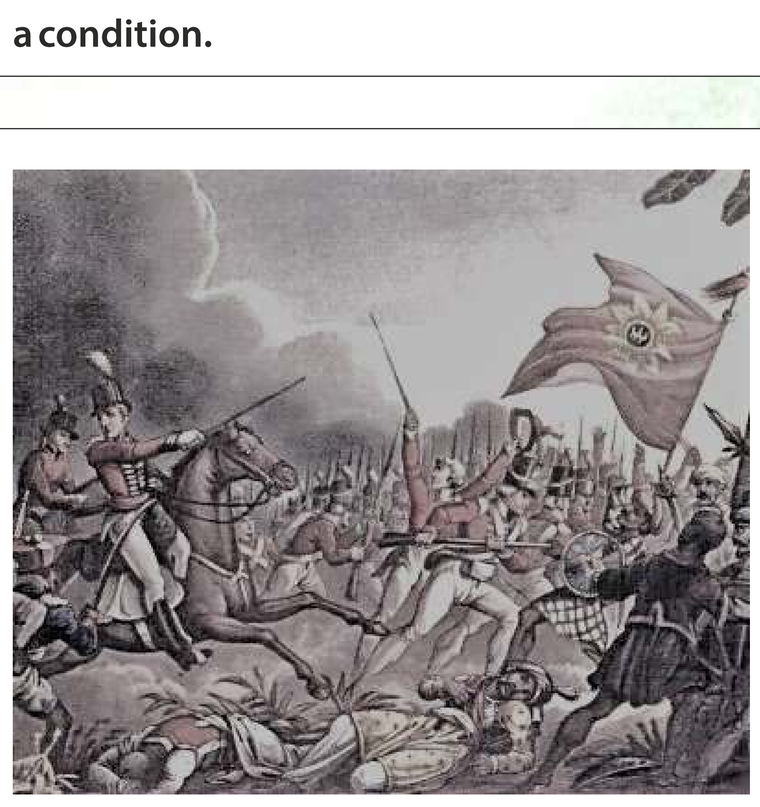

प्लासी का युद्ध
Battle of Plassey

अंग्रेजों के विरुद्ध आंदोलन का शुरुआती दौर

कंपनी की नीति पहले दिन से ही साम-दाम-दंड-भेद के जरिए ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने की थी। शासक बनने के बाद भी इसका यही चरित्र रहा। देश में केन्द्रीय सत्ता के रूप में मुगल शासन नामभर को रह गया था। राजे-रजवाड़ों के रूप में अनेक देशी रियासतें आपस में लड़ती रहती थीं। ईस्ट इंडिया कंपनी ने इन्हीं कमजोरियों का फायदा उठा कर देश के कई भागों में अपने पांव जमा लिए।

कंपनी ने भारत की धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक गतिविधियों में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया था। यही कारण था कि कंपनी के शासन के खिलाफ शीघ्र ही स्थानीय स्तर पर विरोध और आंदोलन शुरू हो गए थे। वर्ष 1857 के पहले स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि के रूप में देश में बड़े पैमाने पर आंदोलन हुए। इनमें बंगाल में फकीर आंदोलन (1776-77), सन्यासी आंदोलन (1770-1820), पाड्यगारों का आंदोलन (1801-1805), वेल्लोर आंदोलन (1806), नायक आंदोलन (1806), त्रावणकोर आंदोलन (1808), चेरो आंदोलन (1802), बरेली-अलीगढ़ के आंदोलन (1816-1817), उड़ीसा के पायकों का आंदोलन (1821), कित्तूर का आंदोलन (1824), असम में अहोम आंदोलन (1824), पाल और कुर्ग आंदोलन (1832-37), बहाबी आंदोलन (1830-31), गोंड आंदोलन (1833-57), कोल आंदोलन (1824-1850) प्रमुख थे।

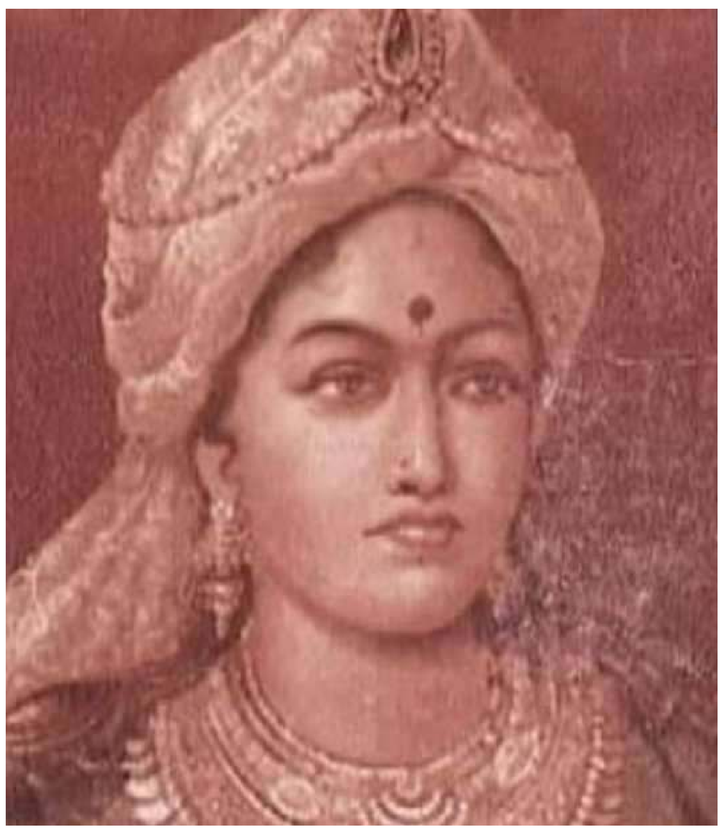

वेलु नाचियार : भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ युद्ध छेड़ने वाली पहली भारतीय रानी - 1796

Velu Nachiyar : The first Indian queen to wage war with the East India Company in India

ऊ तिरोत सिंग : अंग्रेजों को नोंगक्लाव से निकलने का आदेश देने वाले - 1832-33

U Tirot Sing : Who ordered the british to leave Nongkhlaw - 1832-33

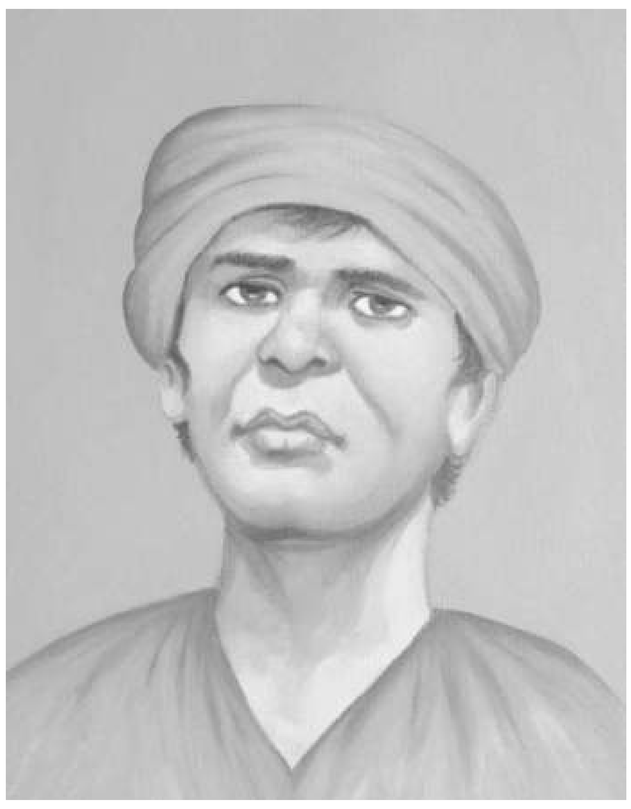

बुद्धू भगत: छोटा नागपुर के कोल आदिवासियों के आंदोलन का नेतृत्व किया (1792-1832)

Budhu Bhagat: Led the movement of Kol tribals of Chota Nagpur (1792-1832)

संन्यासी आंदोलन (1770 -1820)

Sanyasi Movement (1770 -1820)

बख्शी जगबंधु: भारत में कंपनी शासन के खिलाफ पाइका आंदोलन का नेतृत्व किया (1773-1829)

Bakshi Jagabandhu: Led the Paika Rebellion against Company rule in India (1773-1829)

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

The early phase of the movement against the British

Since the company's policy from day one was to earn maximum gain through Sam-Dam-Dand-Bheda. The same attitude reflected in their policy in ruling the country too. The Mughal rule as the central authority in the country remained for name sake. Many princely states were fighting among themselves during this period. Taking advantage of this, East India Company spread its wings in many parts of the country.

The company started interfering in the religious, social, economic and administrative activities of the country, which became the reason for the movements to start against the Company's rule. Even before the first freedom struggle which is considered to have happened in 1857, there were several movements in the country. These included the Fakir movement in Bengal (1776-77), the Sanyasi movement (1770-1820), the Palyagar movement (1801-1805), the Vellore movement (1806), the Nayak movement (1806), the Travancore movement (1808), the Chero movement (1802).), Bareilly-Aligarh Movement (1816–1817), Paikas Movement of Orissa (1821), Kittur Movement (1824), Ahom Movement in Assam (1824), Pal and Coorg Movement (1832–37), Bahabi Movement (1830–31), Gond movement (1833–57), Kol movement (1824–1850) were prominent.

कित्तूर की रानी चेन्नम्मा : 1824 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की लैप्स नीति के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया

Rani Chennamma of Kittur : Led a revolt against the laps policy of the British East India Company in 1824

लसित बोरफुकन : ऊपरी असम के पहले बोरबरुआ (फु-के-लूंग) और अहोम सेना के कमांडर-इन-चीफ - 1672

Lachit Borphukan : The first Borbarua (Phu-Ke-Lung) of upper-Assam and Commander-in-Chief of the Ahom army - 1672

वेल्लोर आंदोलनकारियों की स्मृति में हज़रत मक्कन जंक्शन पर बना स्तंभ।

Pillar at Hazrat Makkan Junction made in memory of Vellore agitators.

वीरपांडिया कट्टबोमन : ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की संप्रभुता को स्वीकार करने से इनकार कर दिया और उनके खिलाफ युद्ध छेड़ दिया (1799)

Veerapandiya Kattabomman : He refused to accept the sovereignty of the British East India Company and waged a war against them (1799)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि

Background of Freedom Movement

ये आंदोलन ऐसे ही नहीं हुए थे। इन आंदोलनों की पृष्ठभूमि में इस देश की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपरा की भावना काम कर रही थी। भारत में सुधारों की प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी। सामाजिक और धार्मिक कुरीतियों के विरुद्ध देश में वातावरण बनना शुरू हो चुका था। इसमें राजा राममोहन राय, ज्योतिबा फुले, रामकृष्ण परमहंस, देवेन्द्र नाथ टैगोर, दादा भाई नौरोजी, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानन्द के साथ-साथ सावित्री बाई फुले और पंडिता रमाबाई की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

The cultural and spiritual tradition of this country was facing lot of changes during this period and that led to these movements. The process of reforms had started in India which was the reason behind the atmosphere that was created in the country against social and religious evils. The role of Raja Ram Mohun Roy, Jyotiba Phule, Ramakrishna Paramhansa, Devendra Nath Tagore, Dadabhai Naoroji, Swami Vivekananda, Swami Dayanand along with Savitri Bai Phule and Pandita Ramabai was important in this process.

राजा राम मोहन राय : ब्रह्म समाज के संस्थापक, सती प्रथा के खिलाफ अधिनियम बनबाया

Raja Ram Mohan Roy : Founder of Brahmo Samaj, enacted an act against the practice of Sati

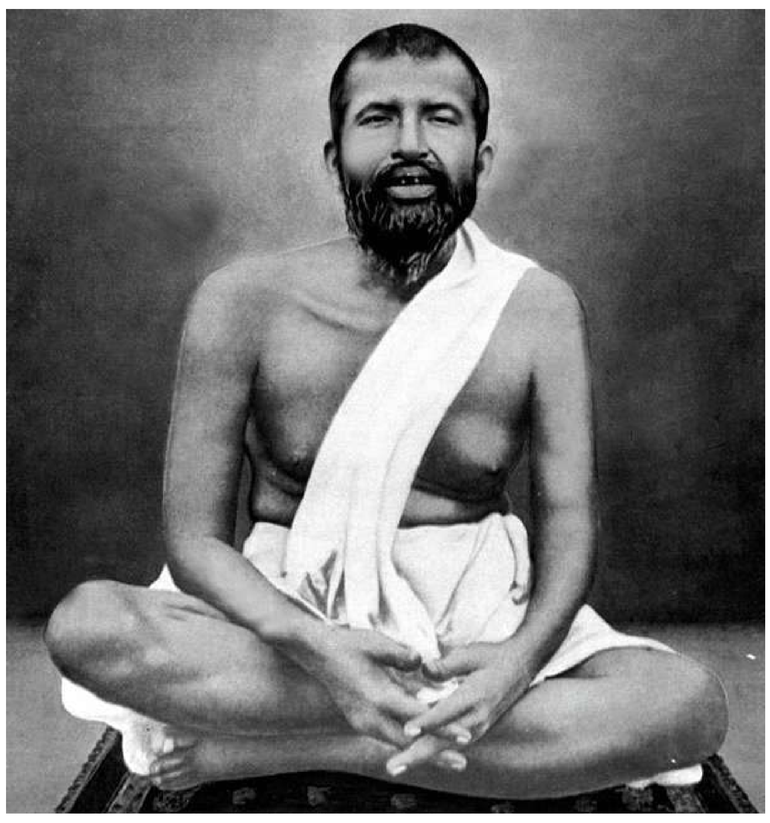

रामकृष्ण परमहंस : स्वामी विवेकानंद के गुरु, अद्वैत के सिद्धांतकार

Ramakrishna Paramhans : Guru of Swami Vivekanand, Theorists of advaita

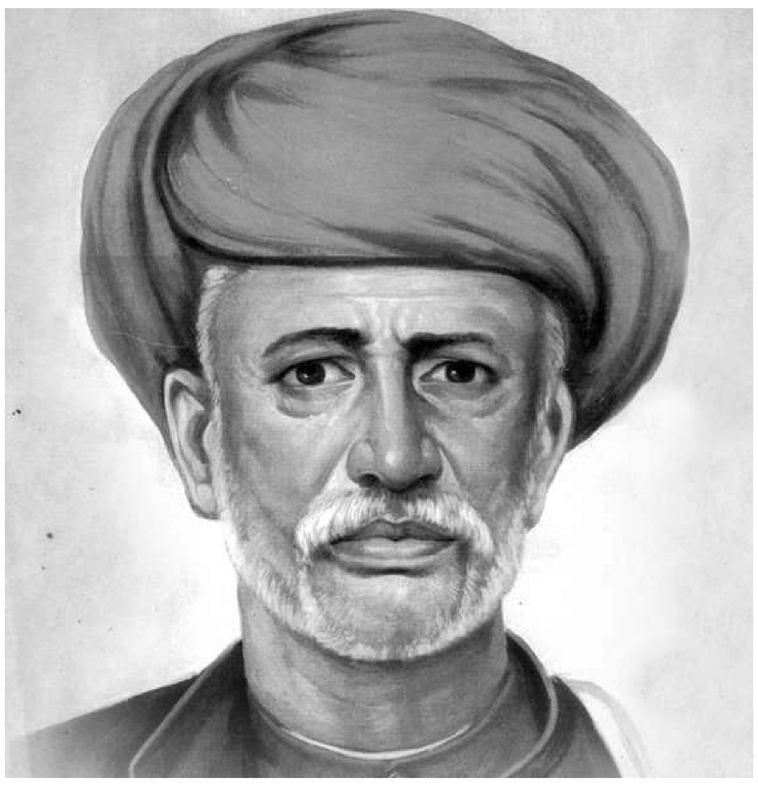

ज्योतिराव फुले : अस्पृश्यता और जाति प्रणाली के उन्मूलन के लिए संघर्ष किया

Jyotirao Phule : Fought for the abolition of untouchability and caste system

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि

Background of Freedom Movement

स्वामी दयानंद सरस्वती : सबसे पहले स्वराज का आह्वान किया- "भारतीयों के लिए भारत"

Swami Dayanand Saraswati : First called for Swaraj- "India for Indians"

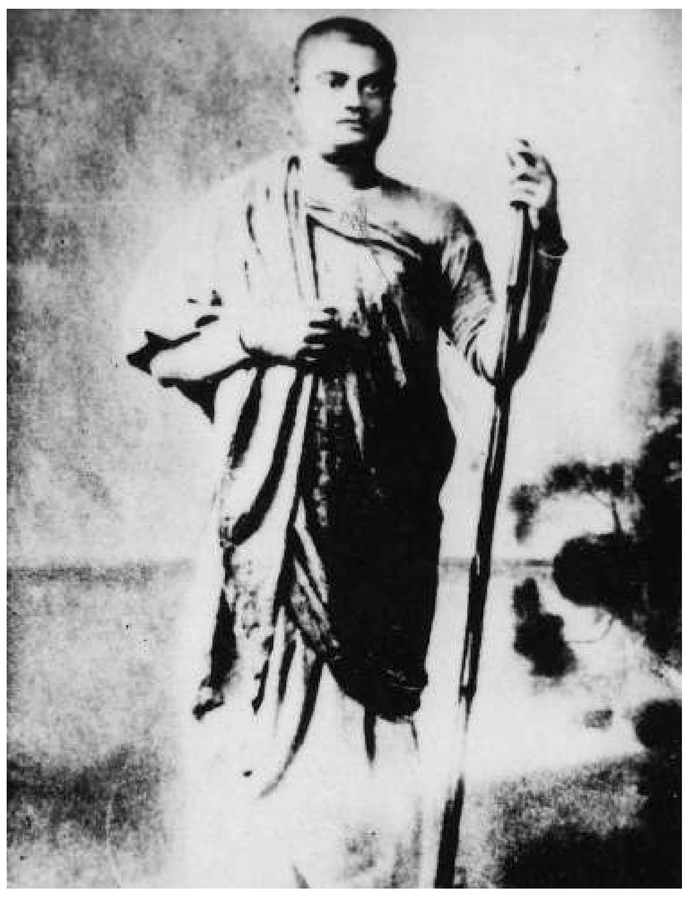

स्वामी विवेकानंद : कलकत्ता (अब कोलकाता) के पास रामकृष्ण मिशन की स्थापना करने वाले भारतीय राष्ट्रवाद के प्रेरणा स्तंभ

Swami Vivekananda : Motivational pillars of Indian nationalism establishing the Ramakrishna Mission near Calcutta (now Kolkata)

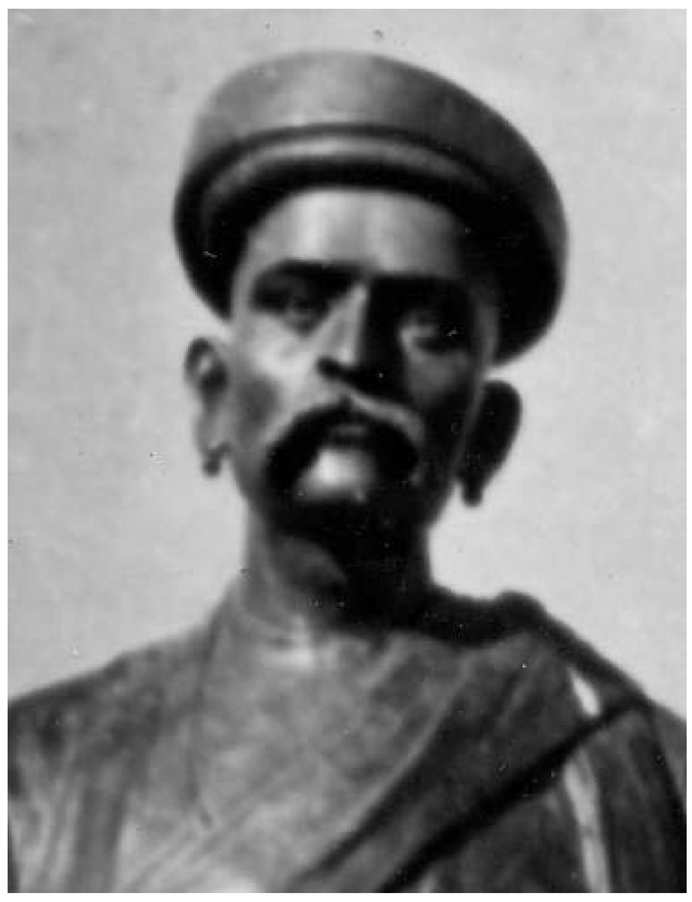

काशीनाथ त्र्यंबक तेलंग : बॉम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन की सह-स्थापना की

Kashinath Trimbak Telang : Co-founded the Bombay Presidency Association

सावित्री बाई फुले : भारत की पहली महिला शिक्षिका, इन्होंने अपने पति ज्योतिराव फुले के साथ लड़कियों के लिए विद्यालय खोला

Savitri Bai Phule : India's first female teacher, she opened a school for girls with her husband Jyotirao Phule

ईश्वर चंद्र विद्यासागर : सन 1856 में हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम लागू करवाया

Ishwar Chandra Vidyasagar : His efforts led to enactment of Hindu Widow Remarriage Act in 1856

महादेव गोविंद रानाडे : तत्कालीन अग्रणी समाज सुधारक

Mahadev Govind Ranade : Erstwhile leading social reformer

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि

Background of Freedom Movement

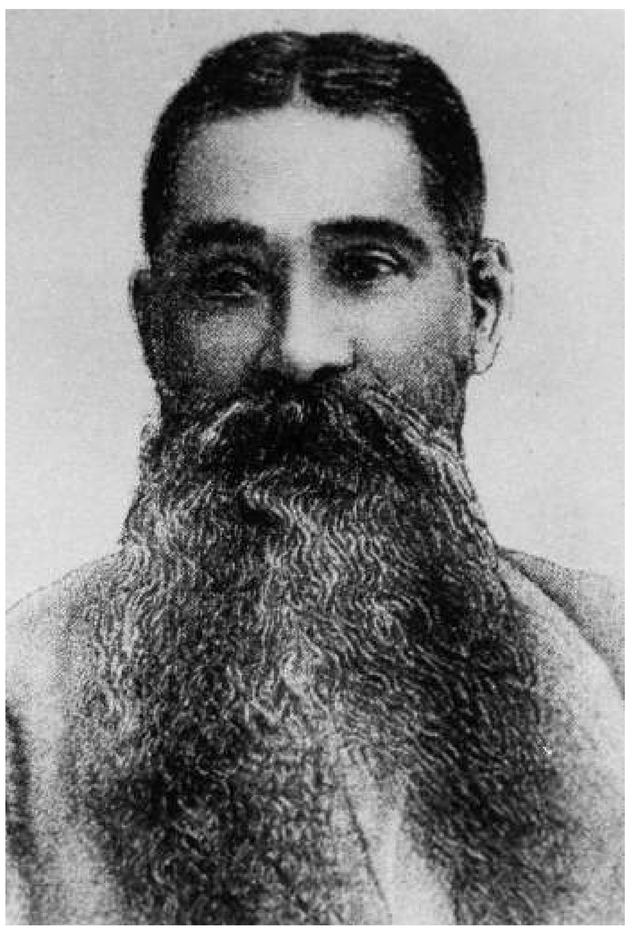

डब्ल्यू. सी. बैनर्जी : भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष - 1885

W.C. Banerjee : President first Session of the Indian National Congress – 1885

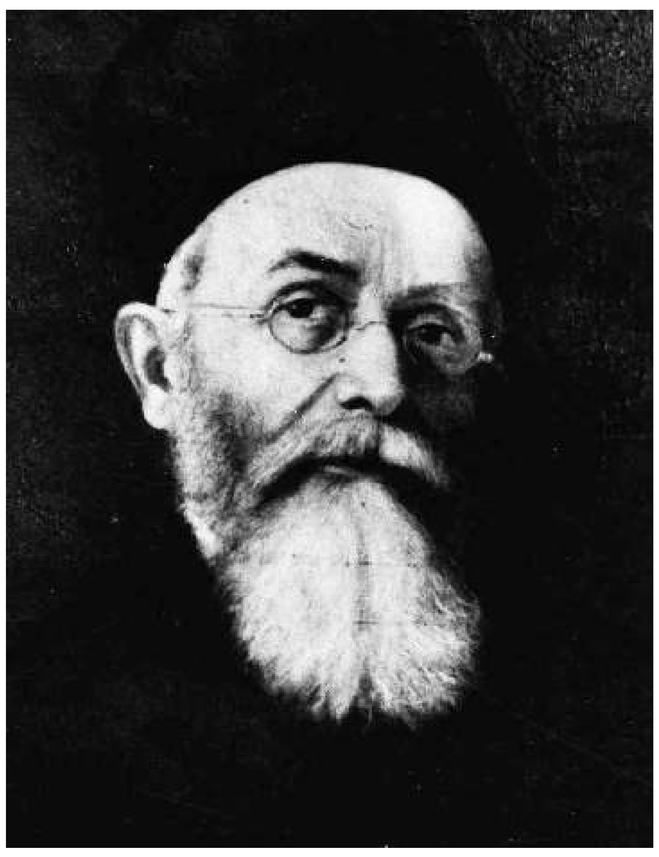

दादाभाई नौरोजी : प्रसिद्ध अर्थशास्त्री उनका काम भारत से ब्रिटेन तक धन-निष्कासन सिद्धान्त पर केंद्रित था

Dadabhai Naoroji : Eminent economist, his work focused on the principle of extortion from India to Britain.

देबेंद्रनाथ टैगोर : दार्शनिक और धार्मिक सुधारक, ब्रह्म समाज में सक्रिय।

Debendranath Tagore : Philosopher and religious reformer, active in the Brahmo Samaj.

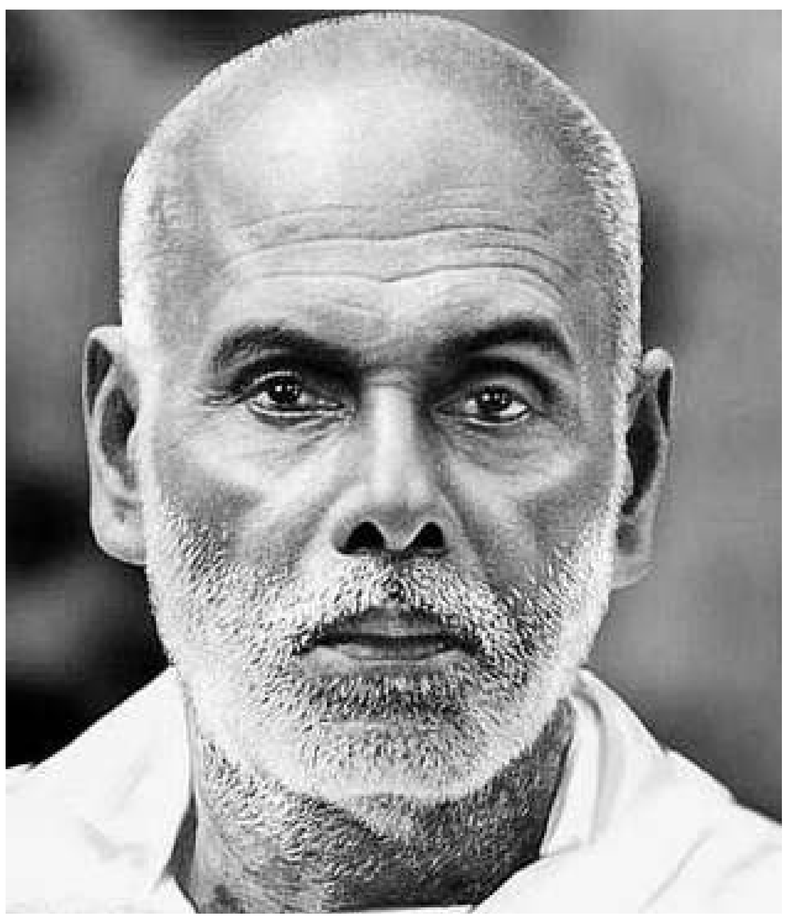

नारायण गुरु : केरल में अरविपुरम आंदोलन शुरू किया, आध्यात्मिक संत और समाज सुधारक

Narayana Guru : Launched Aravipuram Movement in Kerala, Spiritual saint and social reformers

पंडिता रमाबाई : महिला शिक्षा के बढ़ावे के लिए आर्य महिला समाज की स्थापना की

Pandita Ramabai : Founded Arya Mahila Samaj to promote women education

आजादी की पहली लड़ाई

The First War of Independence

भारतीय नवजागरण और सामुदायिक स्तर पर हुए इन आंदोलनों का ही प्रभाव था कि साल 1857 में देशभर में एक बड़े आंदोलन का उदय हुआ, जिसे भारतीय इतिहास में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में जाना जाता है।

जनता के मन में सुलग रही रोष की ज्वाला आज़ादी की पहली लड़ाई के रूप में जल उठी। 1857 का यह संग्राम देशवासियों के राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक स्तर पर एकजुट होने के कारण संभव हुआ।

Because of the impact of such movements at the community level leading the Indian renaissance, a major movement in the year 1857 emerged across the country, which is known as the first freedom struggle in Indian history.

The flame of anger burning in the minds of the people lit up as the first struggle for freedom. This war of 1857 was possible due to the political, economic, social and religious unity among the people.

अंग्रेजों से लड़ती हुई रानी लक्ष्मी बाई

Rani Laxmi Bai Fighting against Britishers

झलकारी बाई : लक्ष्मी बाई की सहयोगी

Jhalkari Bai : Laxmi Bai's Companion

बेगम हजरत महल : 1857 के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ भाग लिया

Begum Hazarat Mahal : Participated against the British East India Company during the Indian War of Independence of 1857

नाना साहिब : 1857 के भारतीय विद्रोह के दौरान कानपुर में विद्रोह का नेतृत्व किया

Nana Sahib : Led the rebellion in Kanpur during the Indian Rebellion of 1857

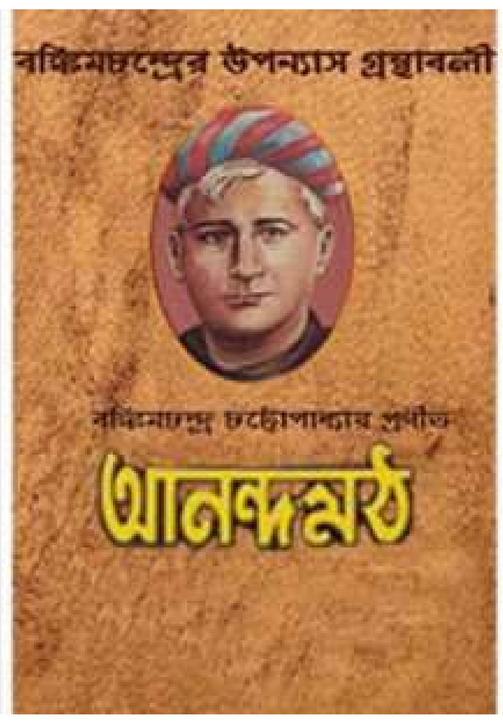

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

आजादी की पहली लड़ाई

The First War of Independence

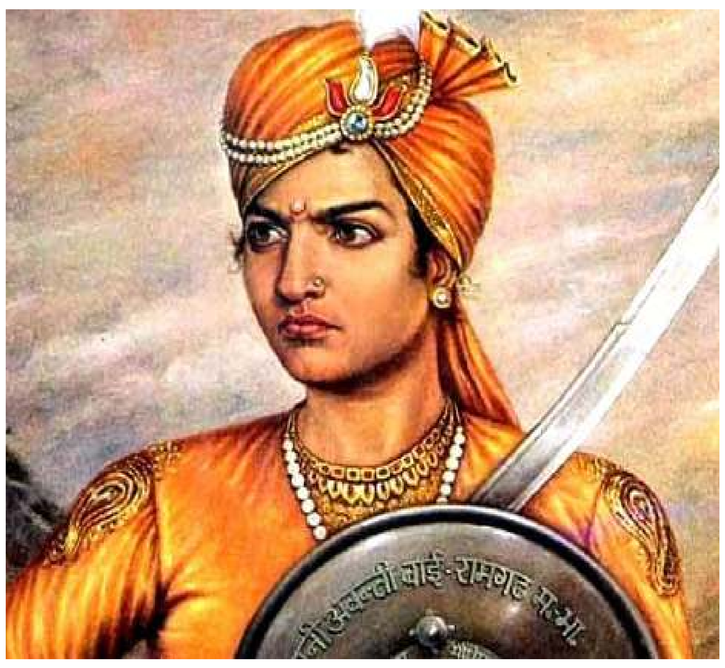

अवंतीबाई लोधी : 1857 के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की सेनानी और मध्य प्रदेश में रामगढ़ (वर्तमान डिंडोरी) की रानी

Avantibai Lodhi : Freedom Fighter of the first war of India's independence, 1857 and queen of Ramgarh (present-day Dindori) in Madhya Pradesh

तात्या टोपे : प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के सबसे प्रभावी जनरल

Tatya Tope : Most effective general of the First War of Independence

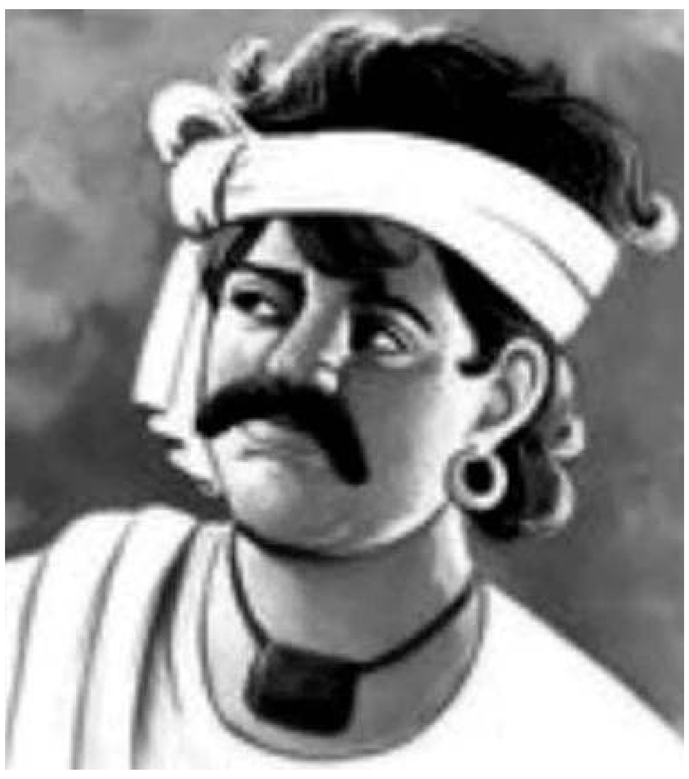

मातादीन भंगी : जिन्होंने राइफलों में चर्बीयुक्त कारतूस की बात कह कर सिपाहियों में आक्रोश की भावना भर दी

Matadin Bhangi: Who filled a sense of resentment among the soldiers by talking about the greased cartridges in the rifles

मंगल पांडे : जिन्होंने चर्बीयुक्त कारतूस चलाने से मना कर दिया, इसमें इनकी रेजिमेंट ने इनका साथ दिया और सिपाहियों में विरोध की चिंगारी भड़क उठी

Mangal Pandey : Who refused to carry cartridges containing fat, his regiments supported them and spark of fight against oppressive company rule erupted among the soldiers.

वीर सुरेंद्र साय : स्वतंत्रता सेनानी जिन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ लड़ते हुए अपने जीवन का बलिदान दिया (1884)

Veer Surendra Sai : Freedom fighter who sacrificed his life fighting against the British East India Company (1884)

उदा देवी : 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की एक प्रमुख योद्धा, जिन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ लड़ाई लड़ी

Uda Devi : A prominent warrior of the First War of Independence of 1857, who fought against the British East India Company

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

राष्ट्रीय जागरण की लहर

The Nation Awake

1857 के आंदोलन के दमन के कुछ ही समय के बाद ऐतिहासिक महत्व के ऐसे संवैधानिक परिवर्तन हुए जिनके फलस्वरूप भारत का शासन व्यापारी कंपनी के चंगुल के छूट कर इंग्लैंड के राज-सिंहासन के हाथों में आ गया।

Soon after the suppression of 1857 movement, came momentous constitutional changes transferring the administration and governance of India from the petty trading company to the crown of England.

1857 के कंपनी राज के विरुद्ध भारतीयों के आंदोलन के बाद देश का शासन सीधे ब्रिटिश क्राउन के अंतर्गत आ गया और महारानी विक्टोरिया भारत की शासक घोषित कर दी गई

After the movement of Indians against the Company Raj of 1857, the rule of the country came directly under the British Crown and Queen Victoria was declared the ruler of India.

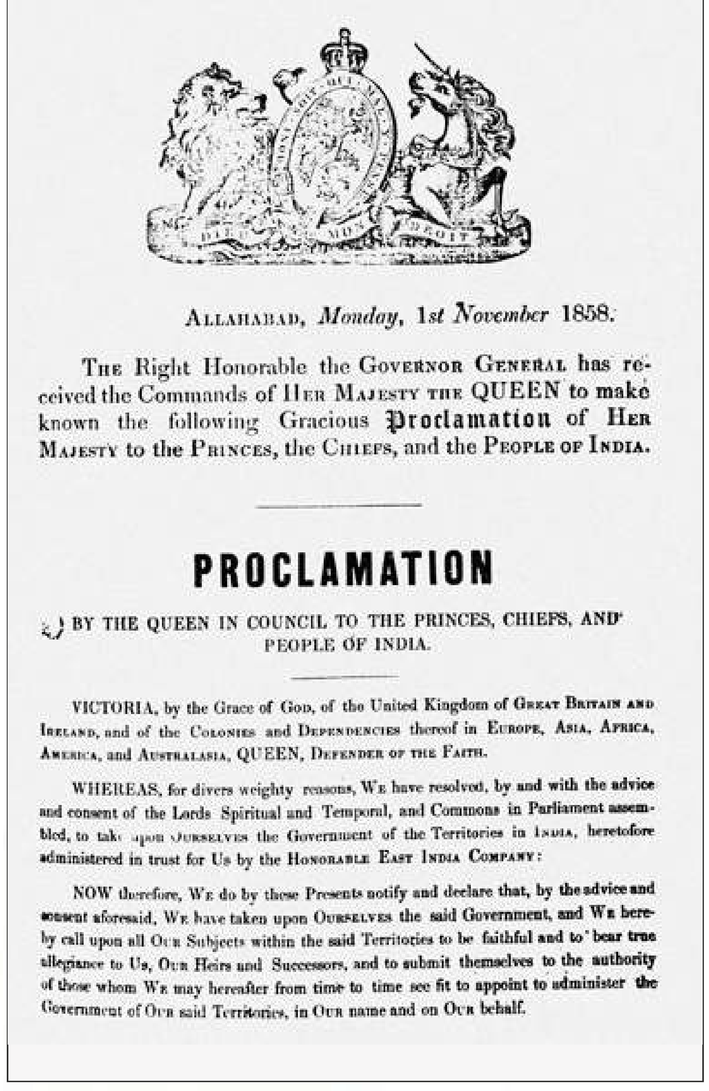

ALLAHABAD, *Monday*, 1*st November* 1858.

THE Right Honorable the GOVERNOR GENERAL has received the Commands of HER MAJESTY THE QUEEN to make known the following Gracious **Proclamation** of HER MAJESTY to the PRINCES, the CHIEFS, and the PEOPLE OF INDIA.

PROCLAMATION

BY THE QUEEN IN COUNCIL TO THE PRINCES, CHIEFS, AND PEOPLE OF INDIA.

VICTORIA, by the Grace of GOD, of the United Kingdom of GREAT BRITAIN AND IRELAND, and of the COLONIES and DEPENDENCIES thereof in EUROPE, ASIA, AFRICA, AMERICA, and AUSTRALASIA, QUEEN, DEFENDER OF THE FAITH.

WHEREAS, for divers weighty reasons, WE have resolved, by and with the advice and consent of the Lords Spiritual and Temporal, and Commons in Parliament assembled, to take upon OURSELVES the Government of the Territories in INDIA, heretofore administered in trust for US by the HONORABLE EAST INDIA COMPANY:

NOW therefore, WE do by these Presents notify and declare that, by the advice and consent aforesaid, WE have taken upon OURSELVES the said Government, and WE hereby call upon all OUR Subjects within the said Territories to be faithful and to bear true allegiance to US, OUR Heirs and Successors, and to submit themselves to the authority of those whom WE may hereafter from time to time see fit to appoint to administer the Government of OUR said Territories, in OUR name and on OUR behalf.

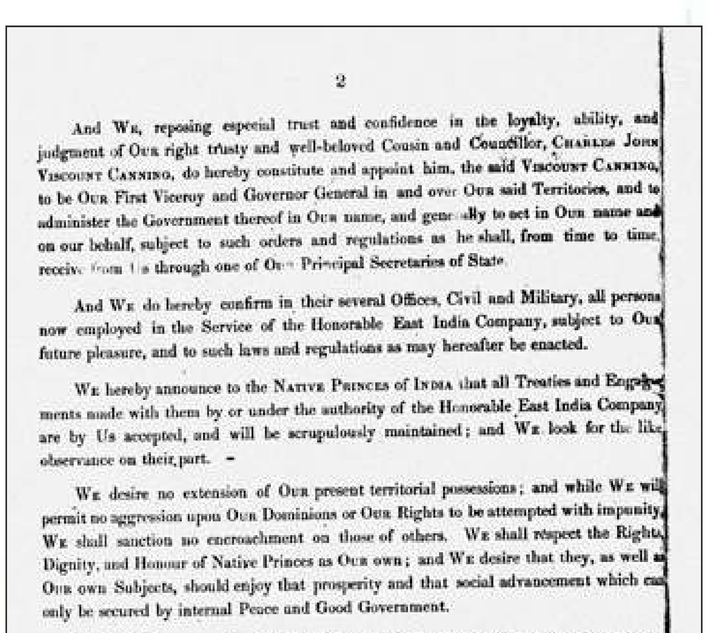

2

And WE, reposing especial trust and confidence in the loyalty, ability, and judgment of OUR right trusty and well-beloved Cousin and Councillor, CHARLES JOHN VISCOUNT CANNING, do hereby constitute and appoint him, the said VISCOUNT CANNING, to be OUR First Viceroy and Governor General in and over OUR said Territories, and to administer the Government thereof in OUR name, and generally to act in OUR name and on our behalf, subject to such orders and regulations as he shall, from time to time, receive from US through one of OUR Principal Secretaries of State.

And WE do hereby confirm in their several Offices, Civil and Military, all persons now employed in the Service of the Honorable East India Company, subject to OUR future pleasure, and to such laws and regulations as may hereafter be enacted.

WE hereby announce to the NATIVE PRINCES of INDIA that all Treaties and Engagements made with them by or under the authority of the Honorable East India Company are by US accepted, and will be scrupulously maintained; and WE look for the like observance on their part.

WE desire no extension of OUR present territorial possessions; and while WE will permit no aggression upon OUR Dominions or OUR Rights to be attempted with impunity, WE shall sanction no encroachment on those of others. WE shall respect the Rights, Dignity, and Honour of Native Princes as OUR own; and WE desire that they, as well as OUR own Subjects, should enjoy that prosperity and that social advancement which can only be secured by internal Peace and Good Government.

WE hold OURSELVES bound to the NATIVES of OUR INDIAN TERRITORIES by the same obligations of duty which bind US to ALL OUR other Subjects; and those obligations, by the blessing of ALMIGHTY GOD, WE shall faithfully and conscientiously fulfil.

Firmly relying OURSELVES on the truth of CHRISTIANITY, and acknowledging with gratitude the solace of Religion, WE disclaim alike the right and the desire to impose OUR convictions on any of OUR Subjects. WE declare it to be OUR Royal Will and Pleasure that none be in anywise favoured, none molested or disquieted, by reason of their religious faith or observances, but that ALL shall alike enjoy the equal and impartial protection of the Law; and WE do strictly charge and enjoin all those who may be in authority under US, that they abstain from all interference with the Religious Belief or Worship of any of OUR Subjects, on pain of OUR highest displeasure.

And it is OUR further will that, so far as may be, OUR Subjects, of whatever Race or Creed, be freely and impartially admitted to Offices in OUR Service, the duties of which they may be qualified, by their education, ability, and integrity, duly to discharge.

WE know and respect the feelings of attachment with which the NATIVES of INDIA regard the lands inherited by them from their ancestors, and WE desire to protect them in all rights connected therewith, subject to the equitable demands of the State; and WE will that, generally, in framing and administering the Law, due regard be paid to the ancient Rights, Usages, and Customs of India.

WE deeply lament the evils and misery which have been brought upon India by the acts of ambitious men who have deceived their countrymen by false reports, and led them

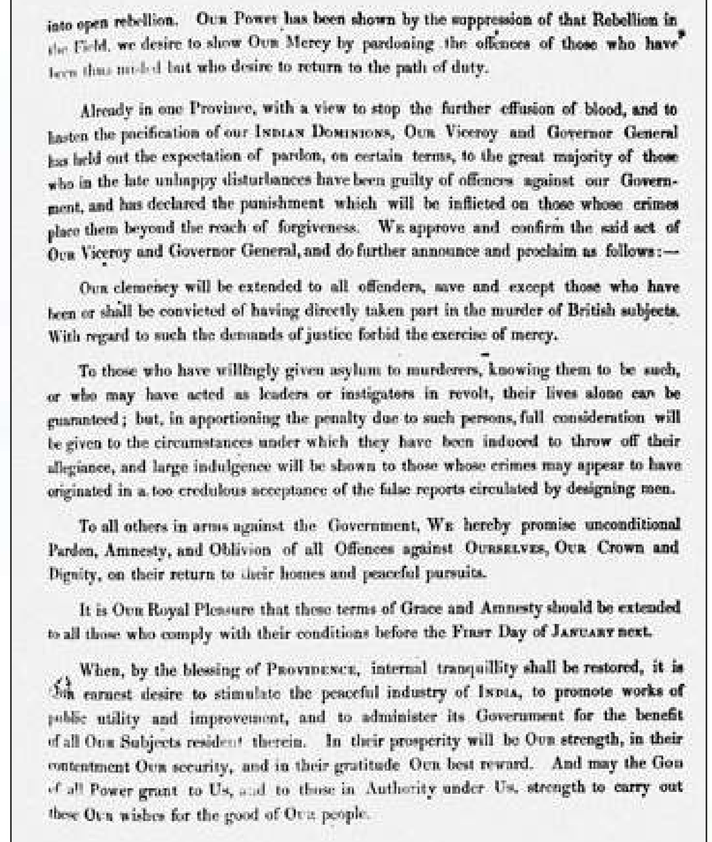

3

into open rebellion. OUR Power has been shown by the suppression of that Rebellion in the Field, we desire to show OUR Mercy by pardoning the offences of those who have been thus misled but who desire to return to the path of duty.

Already in one Province, with a view to stop the further effusion of blood, and to hasten the pacification of our INDIAN DOMINIONS, OUR Viceroy and Governor General has held out the expectation of pardon, on certain terms, to the great majority of those who in the late unhappy disturbances have been guilty of offences against our Government, and has declared the punishment which will be inflicted on those whose crimes place them beyond the reach of forgiveness. WE approve and confirm the said act of OUR Viceroy and Governor General, and do further announce and proclaim as follows:—

OUR clemency will be extended to all offenders, save and except those who have been or shall be convicted of having directly taken part in the murder of British subjects. With regard to such the demands of justice forbid the exercise of mercy.

To those who have willingly given asylum to murderers, knowing them to be such, or who may have acted as leaders or instigators in revolt, their lives alone can be guaranteed; but, in apportioning the penalty due to such persons, full consideration will be given to the circumstances under which they have been induced to throw off their allegiance, and large indulgence will be shown to those whose crimes may appear to have originated in a too credulous acceptance of the false reports circulated by designing men.

To all others in arms against the Government, WE hereby promise unconditional Pardon, Amnesty, and Oblivion of all Offences against OURSELVES, OUR Crown and Dignity, on their return to their homes and peaceful pursuits.

It is OUR Royal Pleasure that these terms of Grace and Amnesty should be extended to all those who comply with their conditions before the FIRST DAY of JANUARY next.

When, by the blessing of PROVIDENCE, internal tranquillity shall be restored, it is OUR earnest desire to stimulate the peaceful industry of INDIA, to promote works of public utility and improvement, and to administer its Government for the benefit of all OUR Subjects resident therein. In their prosperity will be OUR strength, in their contentment OUR security, and in their gratitude OUR best reward. And may the GOD of all Power grant to US, and to those in Authority under US, strength to carry out these OUR wishes for the good of OUR people.

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

अदम्य राजनीतिक इच्छाशक्ति

Indomitable Political Will

कानूनी तौर-तरीकों से आंदोलनों का युग तो शुरू हो गया था लेकिन पृष्ठभूमि में समानांतर राजनैतिक हिंसा का दौर भी चल रहा था, जो ब्रिटिश शासकों की निरंकुशता और मनमानी कार्रवाइयों की प्रतिक्रिया का परिणाम था। बंबई प्रेसिडेंसी में प्लेग महामारी से ग्रस्त लोगों के प्रति अधिकारियों के हृदयहीन बर्ताव और गवर्नर जनरल लार्ड कर्जन की निरंकुश नीतियों की तीव्र प्रतिक्रिया हुई। पहली राजनैतिक हत्यायें 1897 में हुई जब चापेकर बंधुओं, वासुदेव, बालकृष्ण और दामोदर ने दो ब्रिटिश अधिकारियों को मौत के घाट उतार दिया। उन्हें फांसी पर लटका दिया गया। बिहार तथा कुछ अन्य स्थानों में भी ऐसी ही घटनाएं हुई।

Though the era of legalised agitations were on, parallel political violence was also happening in the background, which resulted in the reaction of the autocratic and arbitrary actions of the British rulers. There was a strong reaction to the merciless treatment of the authorities towards the public affected by the plague epidemic and the autocratic policies of Governor General Lord Curzon in Bombay Presidency. The first political assassination occurred in 1897, when the Chapekar brothers, Vasudeo, Balkrishna and Damodar, executed two British officers. They were hanged to death. Similar incidents happened in Bihar and some other parts of the country.

चापेकर बंधु : वासुदेव, बालकृष्ण और दामोदर, जिन्होंने पुणे के ब्रिटिश प्लेग कमिश्नर, डब्ल्यू. सी. रैंड की हत्या की थी

Chapekar Brothers : Vasudeo, Bal Krishan and Damodar who had Assassinated the British Plague Commissioner of Pune, W. C. Rand

आज़ादी का अमृत महोत्सव
#AmritMahotsav

वन्दे मातरम् का उद्घोष –1905

Annuciation of Vande Mataram - 1905

बंग-भंग आंदोलन, जिसे ‘वंदे मातरम्’ आंदोलन के नाम से भी जाना जाता है, स्वदेशी की भावना और ब्रिटिश तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार को लेकर प्रखर बना। लेकिन लोगों की बेचैनी इतना ही कुछ करके शांत नहीं हुई उन्होंने क्रांतिकारी आंदोलन का मार्ग ग्रहण किया। कलकत्ता में प्रमथनाथ मित्र ने ‘अनुशीलन समिति’ और बीरेन घोष ने ‘जुगांतर’ का गठन किया। ऐसे ही दामोदर सावरकर 1904 में अभिनव भारत सोसाइटी नाम से क्रांतिकारी संगठन बना चुके थे। नासिक का ‘मित्र मेला’ दक्षिण भारत की भारत माता एसोसियेशन तथा अन्यत्र अनेक संगठनों की उपस्थिति से क्रांतिकारी आंदोलन आगे बढ़ चला। देश भक्त स्वाधीनता के लिए बलिवेदी पर न्यौछावर होने लगे। मुजफ्फरपुर में खुदी राम बोस को और नासिक में अनंत लक्ष्मण कान्हेरे को अंग्रेज सैनिकों की हत्या के अभियोग में फांसी दे दी गई।

The Bengal partition agitation which was also known as Vande Matharam revolution brought in the sentiment of the Swadeshi Movement and instigated the boycott of British and foreign goods and clothes. But the impatience of the people could not be contained only by such peaceful methods of agitation and found outlet in involving themselves in revolutionary Movements. In Calcutta, Pramathnath Mitra formed the Anushilan Samiti and Biren Ghosh formed the Jugantar. Similarly, Damodar Savarkar had formed a revolutionary organization named Abhinav Bharat Society in 1904. The Mitra Mela in Nasik, Bharat Mata Association in South India and the secret societies mushrooming elsewhere began to spearhead the revolutionary movement all over the country. The patriots paid the price with their blood. Khudi Ram Bose was hanged in Muzaffarpur and Anant Laxman Kanhere in Nasik for killing Britishers.

अनंत लक्ष्मण कान्हेरे : जिन्होंने नासिक के कलेक्टर आर्थर जैक्सन को गोली मारी

Anant Laxman Kanhere : Shot the Collector of Nashik, Arthur Jackson

खुदीराम बोस : मुजफ्फरपुर के मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड की हत्या का प्रयास किया, भारतीय स्वतंत्रता के सबसे कम उम्र के शहीदों में से एक

Khudiram Bose : Attempted to assassinate magistrate of Muzaffarpur Kingsford, one of the youngest martyrs of the indian Independence

प्रफुल्ल चाकी : मुजफ्फरपुर के मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड की हत्या का प्रयास किया

Prafulla Chaki : Attempted to assassinate magistrate of Muzaffarpur Kingsford

बंकिमचंद्र चटर्जी : राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' के रचयिता

Bankimchandra Chatterji : Composed the National Song ‘Vande Mataram’

Central Bureau of Communication (CBC)- Ministry of Information and Broadcasting, Government of India

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

वन्दे मातरम् का उद्घोष –1905

Annuciation of Vande Mataram - 1905

प्रथमनाथ मित्र : अनुशीलन समिति के संस्थापक

Prathamnath Mitra: Founder of Anushilan Samiti

वीर सावरकर ने 1904 में अभिनव भारत सोसाइटी नाम से क्रान्तिकारी संगठन बनाया

Veer Savarkar formed a revolutionary organization named Abhinav Bharat Society in 1904.

अनुशीलन समिति का प्रतीक चिह्न : अखंड भारत के बंकिमचंद्र चटर्जी के विचारों से ओतप्रोत अनुशीलन समिति का गठन किया गया

Symbol of Anushilan Samiti: Anushilan Samiti was formed, inspired by the ideas of Bankim Chandra Chatterjee of Akhand Bharat.

अरविन्द घोष : अपने भाई के साथ 'जुगांतर' का नेतृत्व किया

Aurobindo Ghosh : Led the 'Jugantar' with his brother

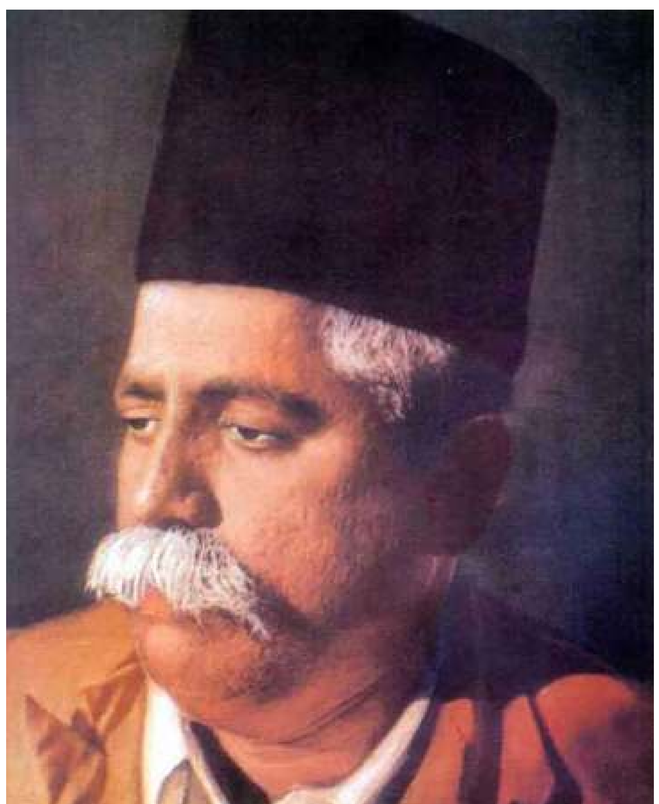

केशव बलिराम हेडगेवार : साल 1910 में अनुशीलन समिति के सदस्य बने

Keshav Baliram Hedgewar: Became a member of Anushilan Samiti in the year 1910

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

भारतीय क्रांतिकारी और गदर पार्टी

Indian Revolutionary and Ghadar Party

भारतीय क्रांतिकारियों के एक साहसिक समूह ने अन्य देशों से स्वाधीनता संग्राम का श्रीगणेश किया। इनमें मैडम भीकाजी कामा, श्याम जी कृष्ण वर्मा, लाला हर दयाल और अजीत सिंह का स्मरण दंत कथाओं के रोमांचक नायकों की तरह किया जाता है। एक अन्य ज्वलंत नाम है विनायक दामोदर सावरकर का, जो कैद से छूट कर जहाज से समुद्र में कूद गए जिस पर उन्हें भारत लाया जा रहा था। वे तैर कर मार्सेलीस पहुँच गए।

An enterprising group of Indian revolutionaries started the freedom struggle from other countries. Among these, Madam Bhikaji Cama, Shyam Ji Krishna Varma, Lala Har Dayal and Ajit Singh are remembered as exciting heroes of legend. Another vivid name is that of Vinayak Damodar Savarkar, who escaped from captivity and jumped into the sea from the ship on which he was being brought to India and swam to Marseilles.

विनायक दामोदर सावरकर : भारत की सामूहिक पहचान के लिए हिंदुत्व का शब्द गढ़ा

Vinayak Damodar Savarkar : Hindutva coined the term for the collective identity of India

लाला हरदयाल : गदर पार्टी के सह-संस्थापक

Lala Hardayal : Co- founded the Gadar party

सोहन सिंह भकना : ग़दर पार्टी के संस्थापक

Sohan Singh Bhakna : Founder of Ghadar Party

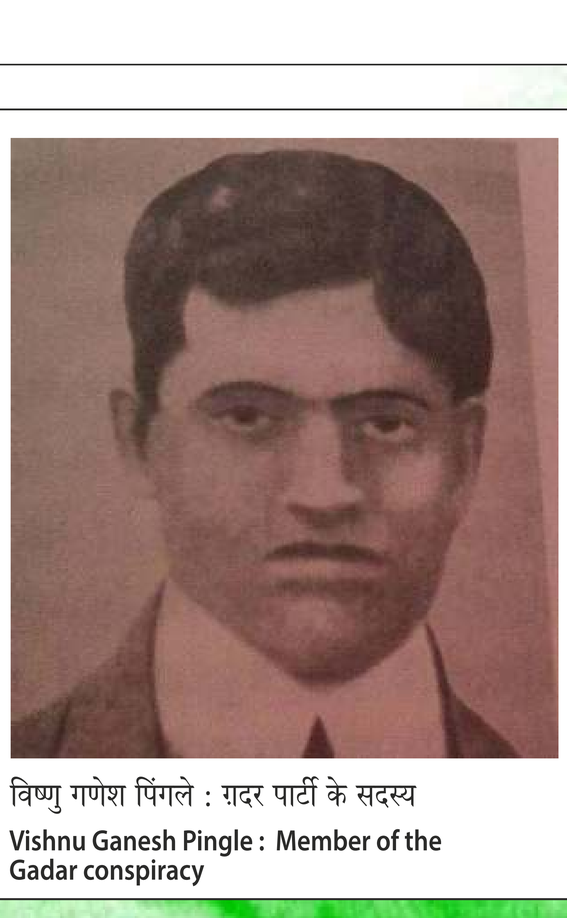

विष्णु गणेश पिंगले : ग़दर पार्टी के सदस्य

Vishnu Ganesh Pingle : Member of the Gadar conspiracy

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

भारतीय क्रांतिकारी और गदर पार्टी

Indian Revolutionary and Ghadar Party

फिरोजशाह मेहता : भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के संस्थापकों में से एक

Ferozshah Mehta : Among the founders of Indian Independence Movement

महात्मा अय्यनकाली : केरल में जाति उत्पीड़न को चुनौती देने वाले

Mahatma Ayyankali : Those who Challenging caste oppression in Kerala the ones

बिरसा मुंडा : बिहार में मिलेनियर आंदोलन का नेतृत्व किया

Birsa Munda : Spearhead behind the Millenarian movement in Bihar

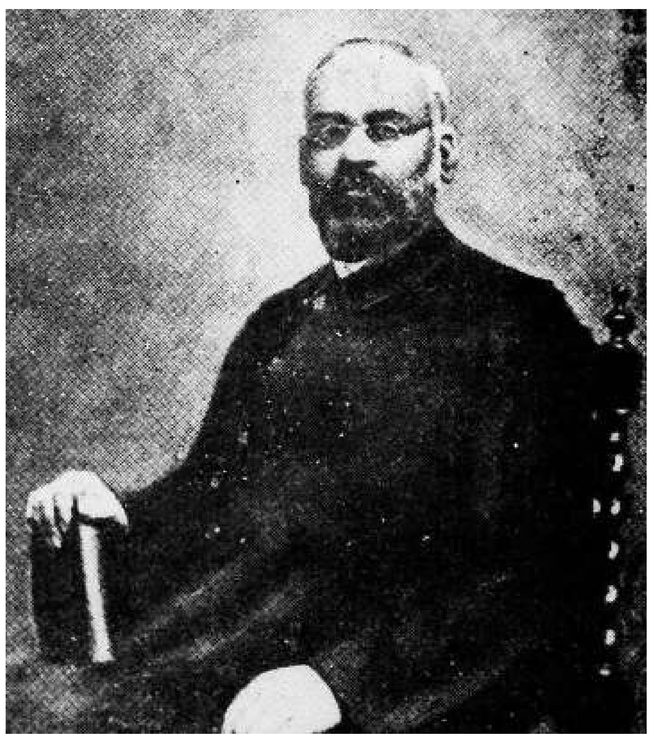

श्यामजी कृष्ण वर्मा : होम रूल सोसाइटी और "इंडिया हाउस" की स्थापना की

Shyamji Krishna Varma : Founded Home Rule Society and “India House"

बाबा गुरदित्त सिंह : भारतीयों को कनाडा में भेजने का प्रयास किया गया

Baba Gurdit Singh : Attempted to immigrate Indians to Canada

अजीत सिंह : पगड़ी संभाल जट्टा आंदोलन का नेतृत्व किया

Ajit Singh : Led the Pagdi Sambhal Jatta movement

करतार सिंह सराभा : गदर पार्टी के प्रमुख सदस्य

Kartar Singh Sarabha : Leading luminary member of the Ghadar Party

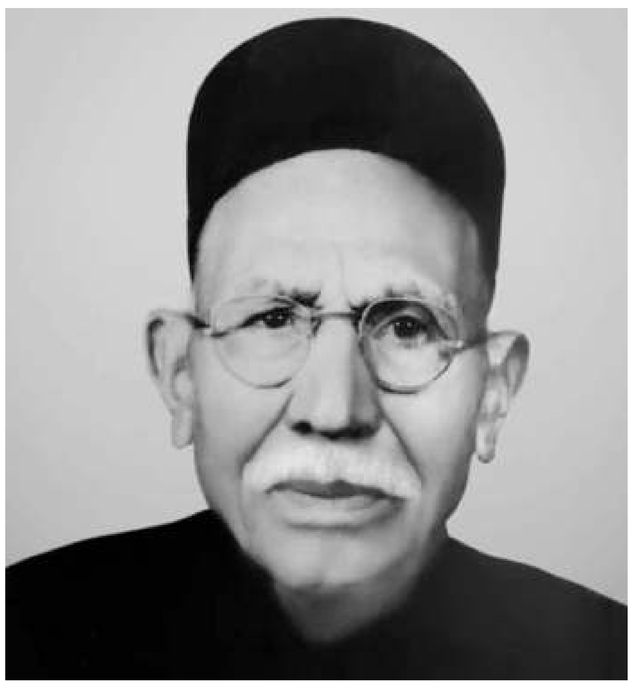

मंगू राम मुग्गोवालिया : ग़दर पार्टी के सदस्य और सामाजिक समानता के लिए काम करने वाले

Mangu Ram Mugowalia : Member of Ghadar Party who worked for social equality

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

भारतीय क्रांतिकारी और गदर पार्टी

Indian Revolutionary and Ghadar Party

लाल बाल पाल : स्वदेशी का समर्थन और ब्रिटिश वस्तुओं के एकाधिकार का विरोध किया

Lal Bal Pal : Promoted self-reliance and opposed British goods monopoly

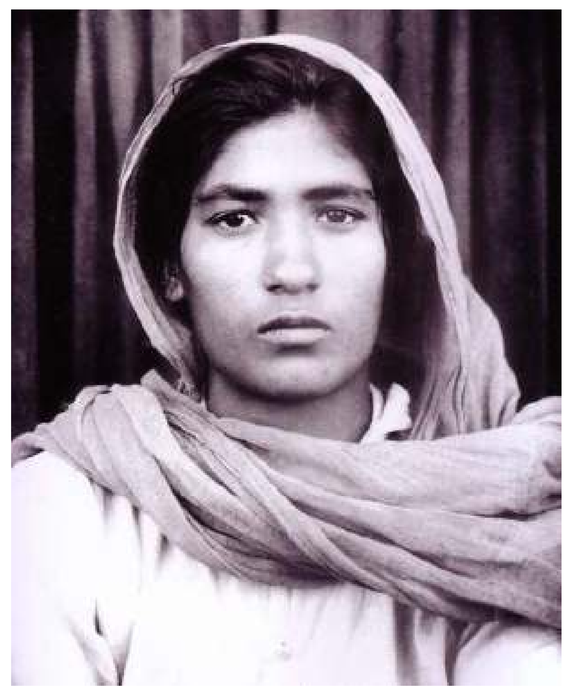

गुलाब कौर : ग़दर पार्टी की सदस्या

Gulab Kaur : Member of Ghadar Party

सुबोध मलिक : राष्ट्रीय शिक्षा परिषद के सह संस्थापक

Subodh Malik : Co Founded the National Council for Education

मदन लाल ढींगरा : विदेश में पहले भारतीय शहीद जिन्होंने कर्जन वायली की हत्या की

Madan Lal Dhingra : First Indian martyr outside India who assassinated Curzon Wyllie

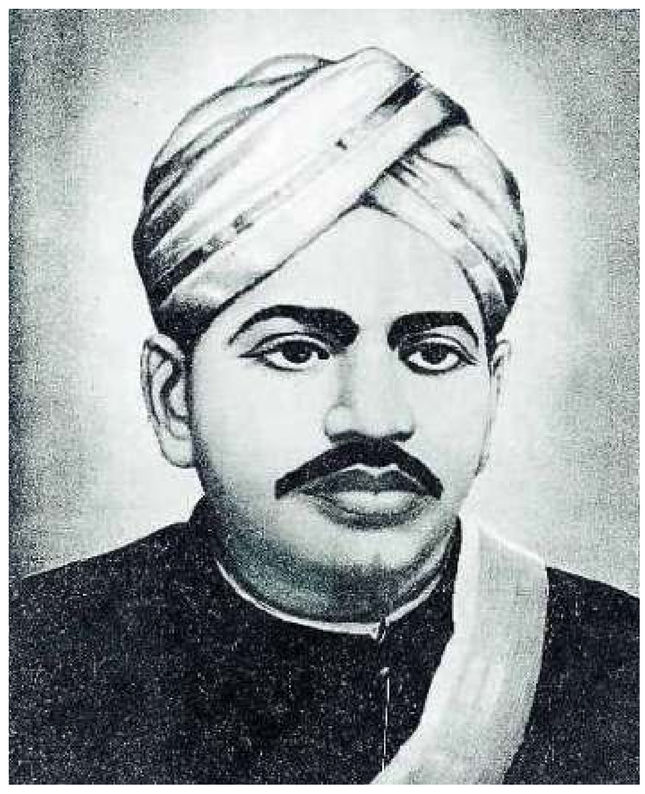

वी.ओ. चिदंबरम पिल्लई : स्वदेशी स्टीम नेविगेशन कंपनी का शुभारंभ किया

V. O. Chidambaram Pillai : Launched Swadeshi Steam Navigation Company

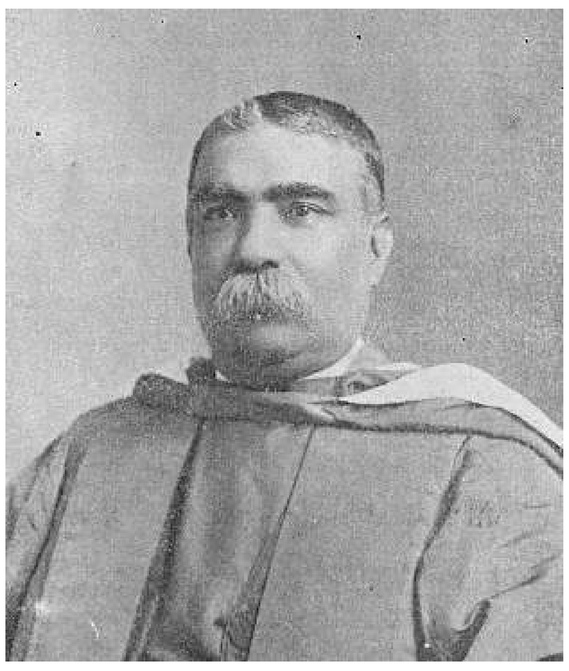

आशुतोष मुखर्जी : "बांग्लार बाग" ("बंगाल का बाघ") से जाने जाते थे

Ashutosh Mukherjee : Called "Banglar Bagh" ("Tiger of Bengal")

जितेंद्र नाथ मुखर्जी : बाघा जतिन के नाम से प्रसिद्ध रहे

Jitendra Nath Mukherjee : Be famous as Bagha Jatin

भवभूषण मित्रा : जुगांतर आंदोलन से जुड़े

Bhavabhushan Mitra : Associated with the Jugantar movement

गरम विचारधारा का उदय

Rise of “Garam” Ideology

बी. जी. तिलक

B. G. Tilak

Commutation of the sentence of transportation for six years passed on Bal Gangadhar Tilak to one of simple imprisonment for a like term.

No. 4796

JUDICIAL DEPARTMENT.

Bombay Castle, 9th September 1908.

RESOLUTION OF GOVERNMENT.

In exercise of the power conferred by Section 401 of the Code of Criminal Procedure, the Governor in Council is pleased to commute the sentence of transportation for six years passed upon Bal Gangadhar Tilak at the Criminal Sessions of the Bombay High Court on the 22nd July 1908, under Section 124A of the Indian Penal Code, to one of simple imprisonment for a like term.

Under Secretary to Government.

To

The Registrar, High Court, Appellate Side, Bombay (by letter),
The Clerk of the Crown,
The Chief Presidency Magistrate, Bombay,
The Commissioner of Police, Bombay,
The Inspector-General of Prisons,
The Superintendent of the Ahmedabad Central Prison,
The Government of Burma (by letter).
Jud 993.

No. of 1908.

Copy forwarded for information and guidance to

बाल गंगाधर तिलक को सजा का आदेश

Commutation of the sentence of transportation for six years passed on Bal Gangadhar Tilak to one of simple imprisonment for life term

सूरत अधिवेशन के तुरंत बाद एक जनसभा को संबोधित करते हुए तिलक - 1907

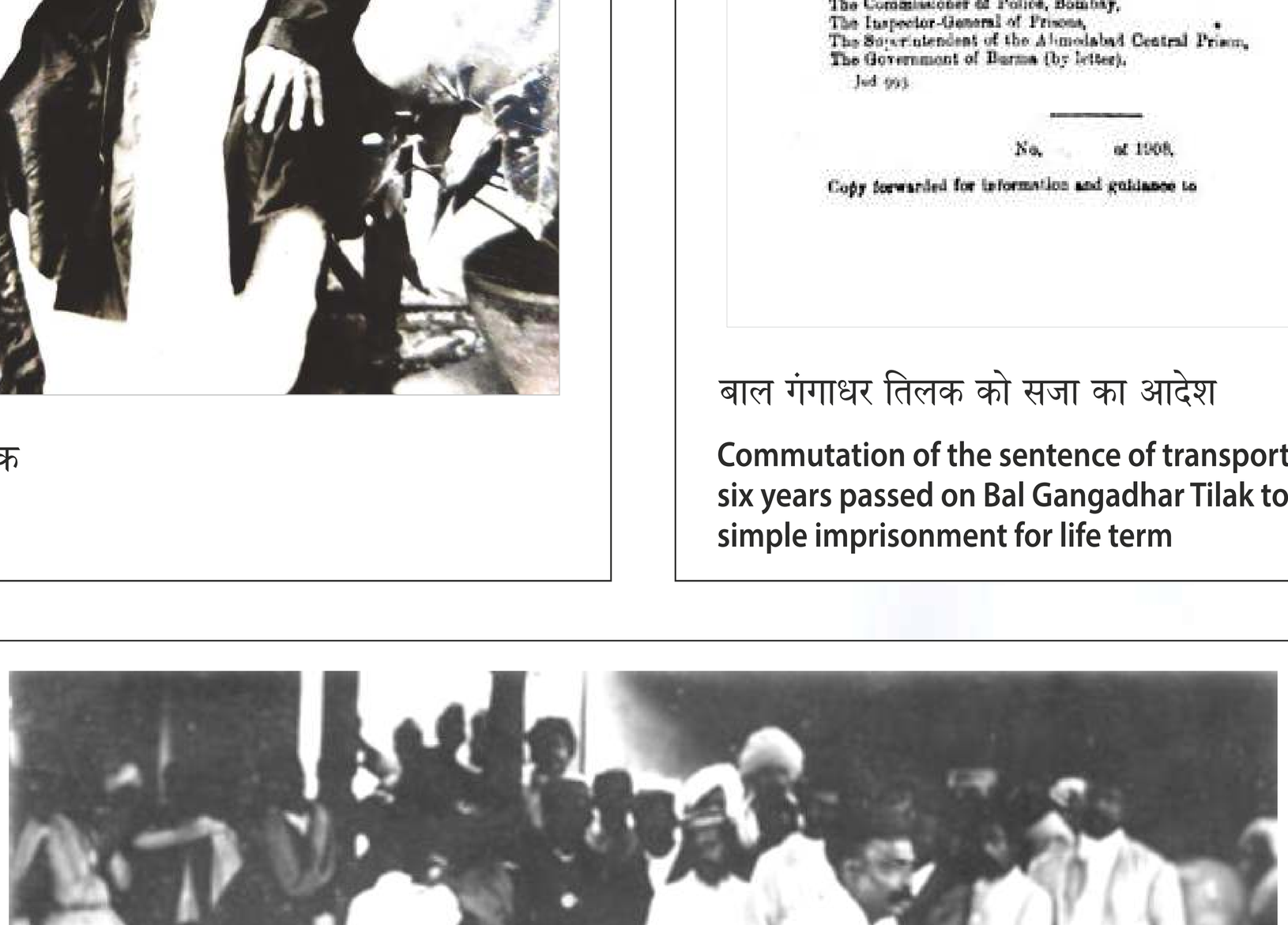

Tilak addressing a public meeting immediately after the Surat session - 1907

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है : तिलक

Swaraj is My Birthright : TILAK

तिलक का परीक्षण : 1908 में बाल गंगाधर तिलक पर राजद्रोह का अभियोग लगाया गया, जिसकी पैरवी उन्होंने स्वयं की

Trial of Tilak : In 1908, Bal Gangadhar Tilak was accused of sedition, which he himself advocated

सुब्रमण्यम सिवा : शुद्ध तमिल आंदोलन के समर्थित और प्रचारक

Subramaniam Siva : Supported & Propagated Pure Tamil Movement

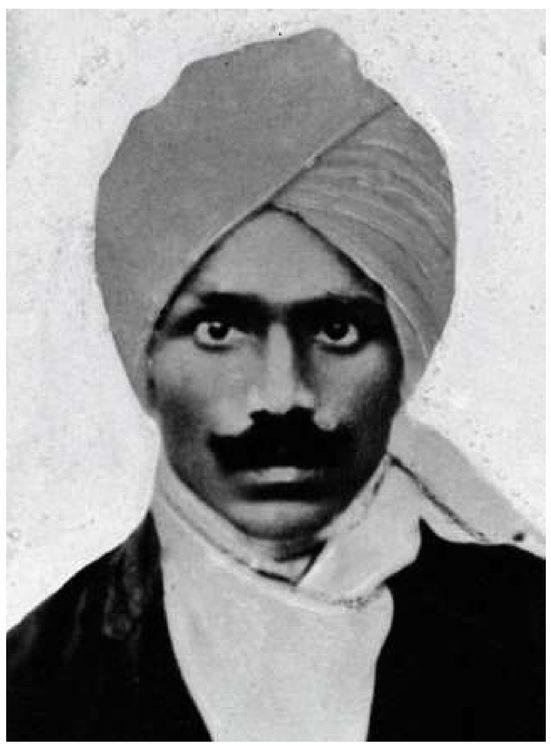

सुब्रमण्यम भारती : प्रसिद्ध तमिल कवि जिन्होंने महिलाओं की मुक्ति और बाल विवाह के खिलाफ लड़ाई लड़ी

Subramaniam Bharti : Famous Tamil Poet, Fought for women emancipation and against child marriage

रास बिहारी बोस : लॉर्ड हार्डिंग की हत्या पर दिल्ली षड्यंत्र केस का नेतृत्व किया

Rash Behari Bose : Headed the Delhi Conspiracy case to assassinate Lord Hardinge

वीर सावरकर के क्रांतिकारी कार्यों के लिए ब्रिटिश सरकार ने इन्हें दो बार आजीवन कारावास की सज़ा दी, यह विश्व इतिहास में एक अनोखी घटना है

For the revolutionary work of Veer Savarkar, the British government sentenced him to life imprisonment twice, this is a unique event in world history.

सत्यमेव जयते

आज़ादी का
अमृत महोत्सव
#AmritMahotsav

भारत का पहला ध्वज- 1907

First Indian Flag - 1907

भीकाजी कामा : विदेशी भूमि पर भारतीय ध्वज फहराने वाली पहली महिला

Bhikaiji Cama : First women to hoist Indian flag on foreign soil

22 अगस्त 1907 को जर्मनी के स्टटगार्ट में अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में भीकाजी कामा द्वारा "भारतीय स्वतंत्रता के ध्वज" का डिज़ाइन।

Design of the "Flag of Indian Independence" raised by Bhikhaiji Cama on 22 August 1907, at the International Socialist Conference in Stuttgart, Germany.

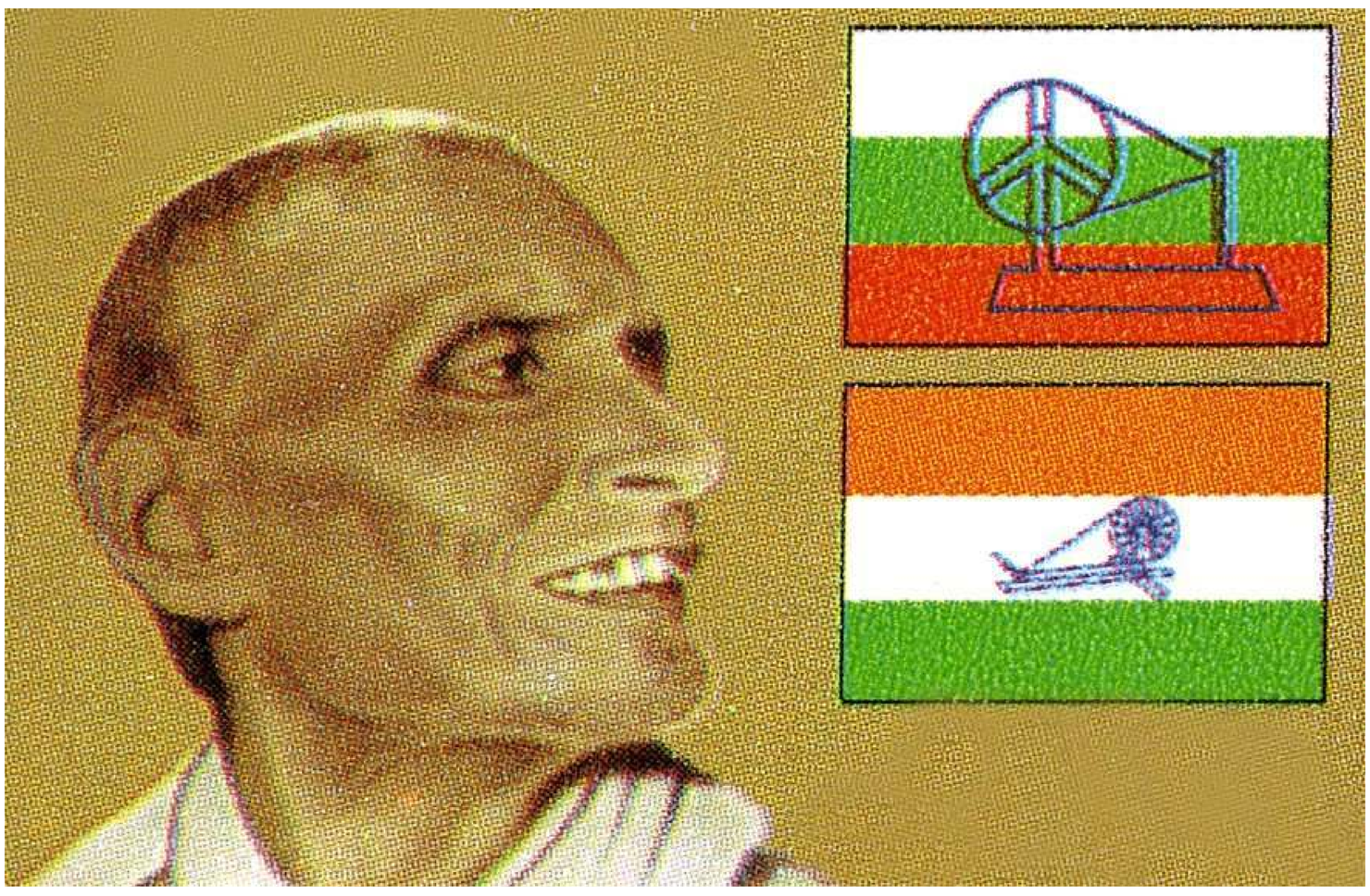

पिंगलि वेंकय्या : उस झंडे के डिजाइनर जिस पर भारतीय राष्ट्रीय ध्वज आधारित है

Pingali Venkayya : Designer of the Flag on which the Indian National Flag was based

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

समानान्तर भारत सरकार की स्थापना - 1915

Establishment of Parallel Government of India - 1915

विश्व के कुछ अन्य देशों की राजधानियों में भी क्रांतिकारी सक्रिय थे। बर्लिन में भारतीय स्वाधीनता समिति का गठन किया गया जिसके सचिव वीरेन्द्र नाथ चट्टोपाध्याय बने। काबुल में राजा महेन्द्र प्रताप, मौलाना बरकत उल्ला और मौलाना ओबैदुल्ला सिंह ने समानान्तर भारत सरकार की स्थापना की।

Revolutionaries were active in capitals of some other countries also across the world. An Indian Independence Committee with Virendranath Chattopadhyay as its Secretary was set up in Berlin. In Kabul, Raja Mohendra Pratap, Maulana Barkatulla and Maulana Obeidulla formed a provisional government of India.

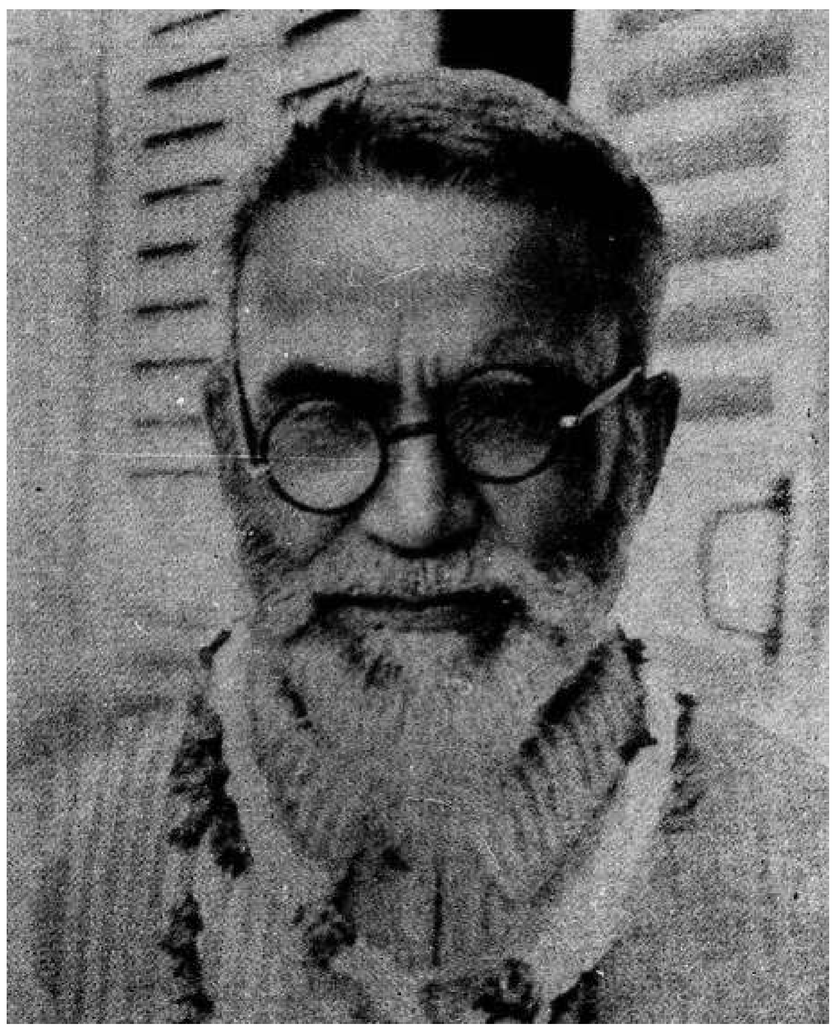

राजा महेंद्र प्रताप सिंह : काबुल में समानांतर सरकार की स्थापना की

Raja Mohendra Pratap Singh : Established a parallel govt. in Kabul

मोहम्मद बरकतुल्लाह : काबुल में समानांतर सरकार की स्थापना की

Mohamed Barakatullah : Established a parallel Govt. in Kabul

वीरेंद्रनाथ चट्टोपाध्याय : बर्लिन में भारतीय स्वाधीनता समिति का गठन किया

Virendranath Chattopadhyay : Indian Independence Committee formed in Berlin

सत्यमेव जयते

आज़ादी का
अमृत महोत्सव
#AmritMahotsav

महात्मा गांधी का अभ्युदय - 1915

भारत में जहां एक ओर क्रांतिकारी परिस्थितियां तेजी से बदल रही थी वहीं दूसरी ओर देश की जनता ऐसी निश्चित दिशा और नेतृत्व की बाट जोह रही थी जो उसे सफलता के अंतिम छोर तक ले जा सके। बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक के ऐसे भारतीय परिवेश में दक्षिण अफ्रीका में अपने बीस वर्ष के प्रवास के दौरान गांधी जी ने सामाजिक कर्तव्य के एक साधन के रूप में सत्याग्रह के अप्रतिम अस्त्र का प्रयोग किया। उन्होंने अपने भारतीय भाइयों को उनके अधिकार दिलाने के लिए इस साधन का उपयोग सफलतापूर्वक किया था। इसके लिए उनकी ख्याति विश्व भर में फैल गई थी। भारत भूमि पर उन्होंने 9 जनवरी, 1915 को पदार्पण किया।

स्वदेश वापसी पर अपनी पत्नी कस्तूरबा के साथ गांधी जी, 1915
Gandhiji with his wife Kasturba on his return Home, 1915

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

Advent of Mahatma Gandhi - 1915

On one hand the revolutionary situation was changing rapidly in India, the people of the country were waiting eagerly for such a specific direction and strong leadership, which could lead them to success on the other. During the second decade of the last century Mohan Das Karam Chand Gandhi came to India from South Africa. During his 20 years stint in a foreign land he had developed his unique weapon of Satyagraha as an instrument of social action. He effectively deployed this approach for winning the rights of his Indian brethren, himself becoming a world celebrity in the process. He arrived in India on January 19, 1915.

भारत भ्रमण के दौरान ग्रामीणों के साथ बातचीत करते हुए गांधी जी, 1916

Gandhi interacting with villagers during his tour of India, 1916

गांधी जी के राजनीतिक गुरु : गोपालकृष्ण गोखले

Gandhi ji's Political Guru : Gopalakrishna Gokhale

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

होम रूल लीग की स्थापना - 1916

Establishment of Home Rule League - 1916

जुलाई, 1918 में ब्रिटिश सरकार द्वारा मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार लागू करने पर भी भारतवासियों की आकांक्षाएं पूरी नहीं हो पाईं। श्रीमती ऐनी बेसेंट और लोकमान्य तिलक ने दो अलग-अलग होम-रूल लीग की स्थापना कर 'स्वराज्य' के लिए जन मानस को संगठित किया।

The Montagu Chelmsford reforms introduced by the British Government in July, 1918 failed to satisfy Indian aspirations. Dr. Annie Besant and Lok Manya Tilak launched two separate Home Rule Leagues to mobilise the people for Swaraj.

श्रीमती एनी बेसेंट

Mrs. Annie Besent

बाल गंगाधर तिलक

Bal Gangadhar Tilak

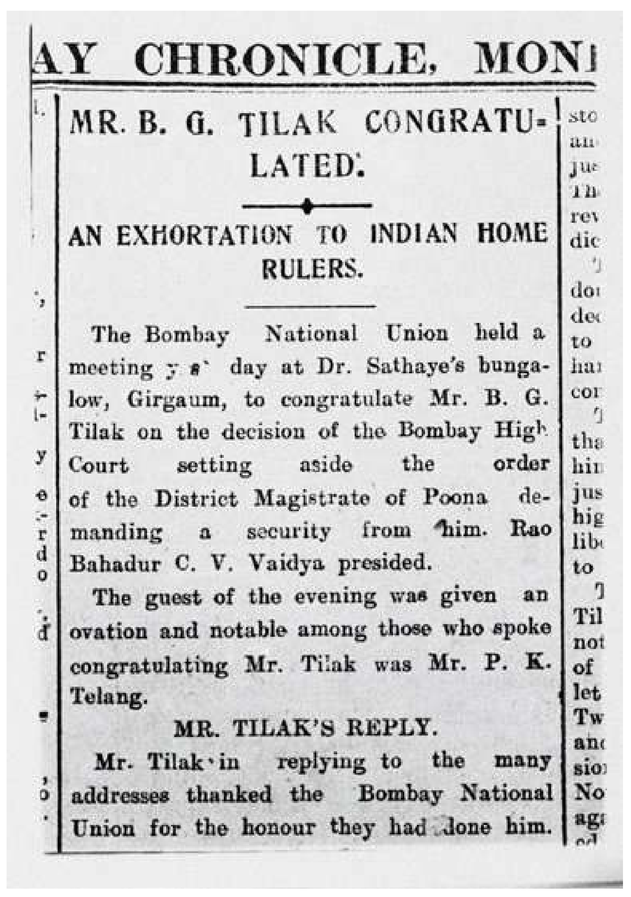

AY CHRONICLE, MONI

MR. B. G. TILAK CONGRATULATED.

AN EXHORTATION TO INDIAN HOME RULERS.

The Bombay National Union held a meeting yesterday at Dr. Sathaye's bungalow, Girgaum, to congratulate Mr. B. G. Tilak on the decision of the Bombay High Court setting aside the order of the District Magistrate of Poona demanding a security from him. Rao Bahadur C. V. Vaidya presided.

The guest of the evening was given an ovation and notable among those who spoke congratulating Mr. Tilak was Mr. P. K. Telang.

MR. TILAK'S REPLY.

Mr. Tilak in replying to the many addresses thanked the Bombay National Union for the honour they had done him.

भारतीय शासकों के लिए बॉम्बे क्रॉनिकल-एक उद्बोधन

Bombay chronicle-An exhortation to Indian Home Rulers

पुणे में होम रूल की बैठक में बी. जी. तिलक और श्रीमती एनी बेसेंट, 22.5.1916

Home Rule Meeting at Pune on 22.5.1916. B.G. Tilak and Mrs. Annie Besant are seen there

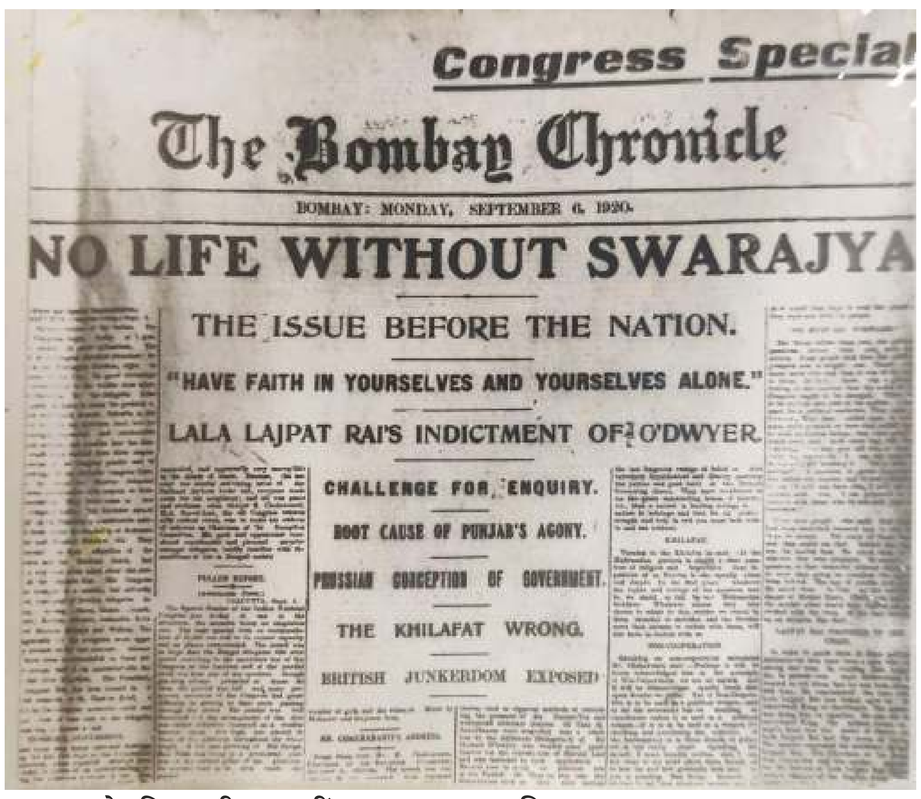

Congress Special

The Bombay Chronicle

BOMBAY: MONDAY, SEPTEMBER 6, 1920.

NO LIFE WITHOUT SWARAJYA

THE ISSUE BEFORE THE NATION.

"HAVE FAITH IN YOURSELVES AND YOURSELVES ALONE."

LALA LAJPAT RAI'S INDICTMENT OF O'DWYER.

CHALLENGE FOR ENQUIRY.

ROOT CAUSE OF PUNJAB'S AGONY.

PRUSSIAN CONCEPTION OF GOVERNMENT.

THE KHILAFAT WRONG.

BRITISH JUNKERDOM EXPOSED

स्वराज्य के बिना जीवन नहीं (समाचार पत्र की कतरन)

No Life without Swarajya (Newspaper Clippings)

Central Bureau of Communication (CBC)- Ministry of Information and Broadcasting, Government of India

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

चंपारण सत्याग्रह - 1917

Champaran Satyagrah - 1917

भारत में गांधी जी के सत्याग्रह के अमोघ अस्त्र का प्रथम प्रयोग बिहार के चंपारण जिले के नील की खेती करने वाले किसानों को दुर्दशा से उबारने के लिए किया गया। किसानों के हितों की रक्षा का चमत्कारिक प्रभाव पड़ा। चंपारण सत्याग्रह ने भारतवासियों में यह भावना भर दी कि बिना हथियार के भी शक्तिशाली एवं क्रूर शासन के विरुद्ध मुकाबला किया जा सकता है।

In India, Gandhiji's weapon of Satyagraha was put to its first test in Champaran District of Bihar for redressing the plight of indigo cultivators. The victory of the Kisan's cause had an electrifying effect. It demonstrated to the fellow countrymen that a gathering of unarmed people were not defenceless even against a mighty empire.

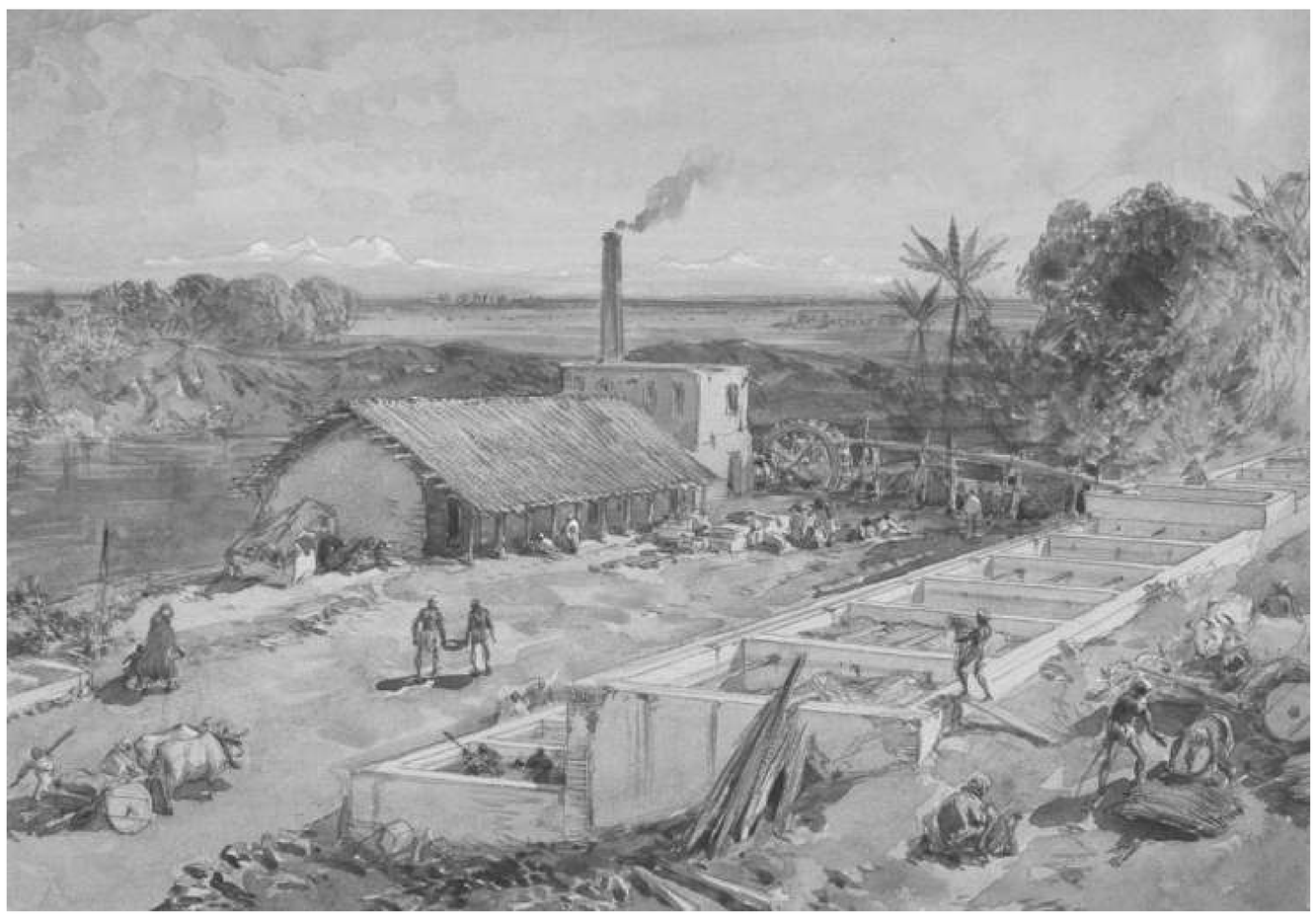

चंपारण में नील की खेती से किसानों की दुर्दशा

Plight of farmers due to indigo cultivation in Champaran

चंपारण स्टेशन पर गाँधीजी, 1917

Gandhiji at Champaran Station, 1917

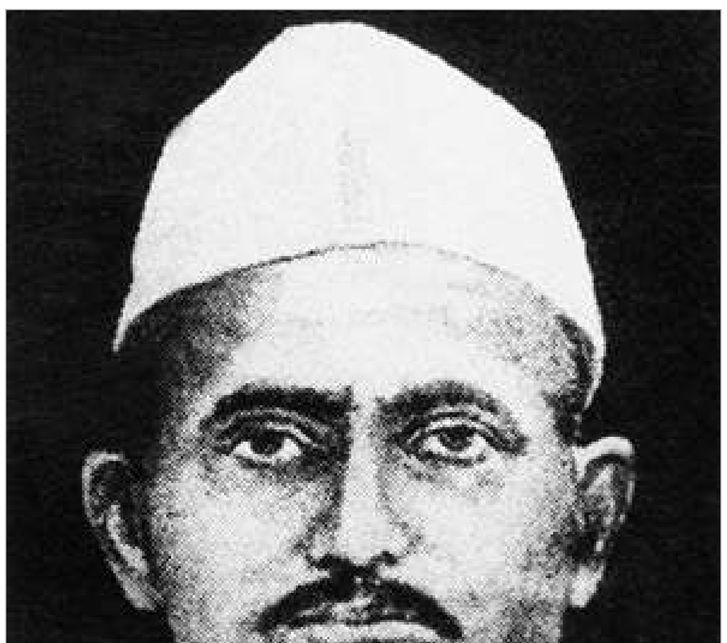

राजकुमार शुक्ल जिनके अथक प्रयास गाँधी जी को चम्पारण लाने में सफल रहे

Rajkumar Shukla whose tireless efforts were successful in bringing Gandhiji to Champaran

चंपारण सत्याग्रह के दौरान बाएं से बैठे हुए राजेन्द्र प्रसाद और अनुग्रह नारायण सिन्हा,
खड़े दिखाई दे रहे हैं रामनवमणि प्रसाद और शम्भूशरण वर्मा

**During Champaran Satyagraha :
Sitting from Left to Right : Rajendra Prasad and Anugrah Narayan Sinha,
Standing from left to Right : Ramnavmani Prasad and Shambhusharan Varma**

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

खेड़ा सत्याग्रह - 1918

Kheda Satyagrah - 1918

गांधी जी की अगुवाई में बंबई में मिल मजदूरों ने अहिंसक तरीके से अधिक मजदूरी के लिए आंदोलन किया। सत्याग्रह के सिद्धांतों पर आधारित गुजरात के खेड़ा जिले में कर विरोधी अभियान का नेतृत्व सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किया।

Mill workers in Bombay under the leadership of Gandhiji agitated for higher wages in a non-violent manner. Sardar Vallabhbhai Patel led the anti-tax campaign in Kheda district of Gujarat based on the principles of Satyagraha.

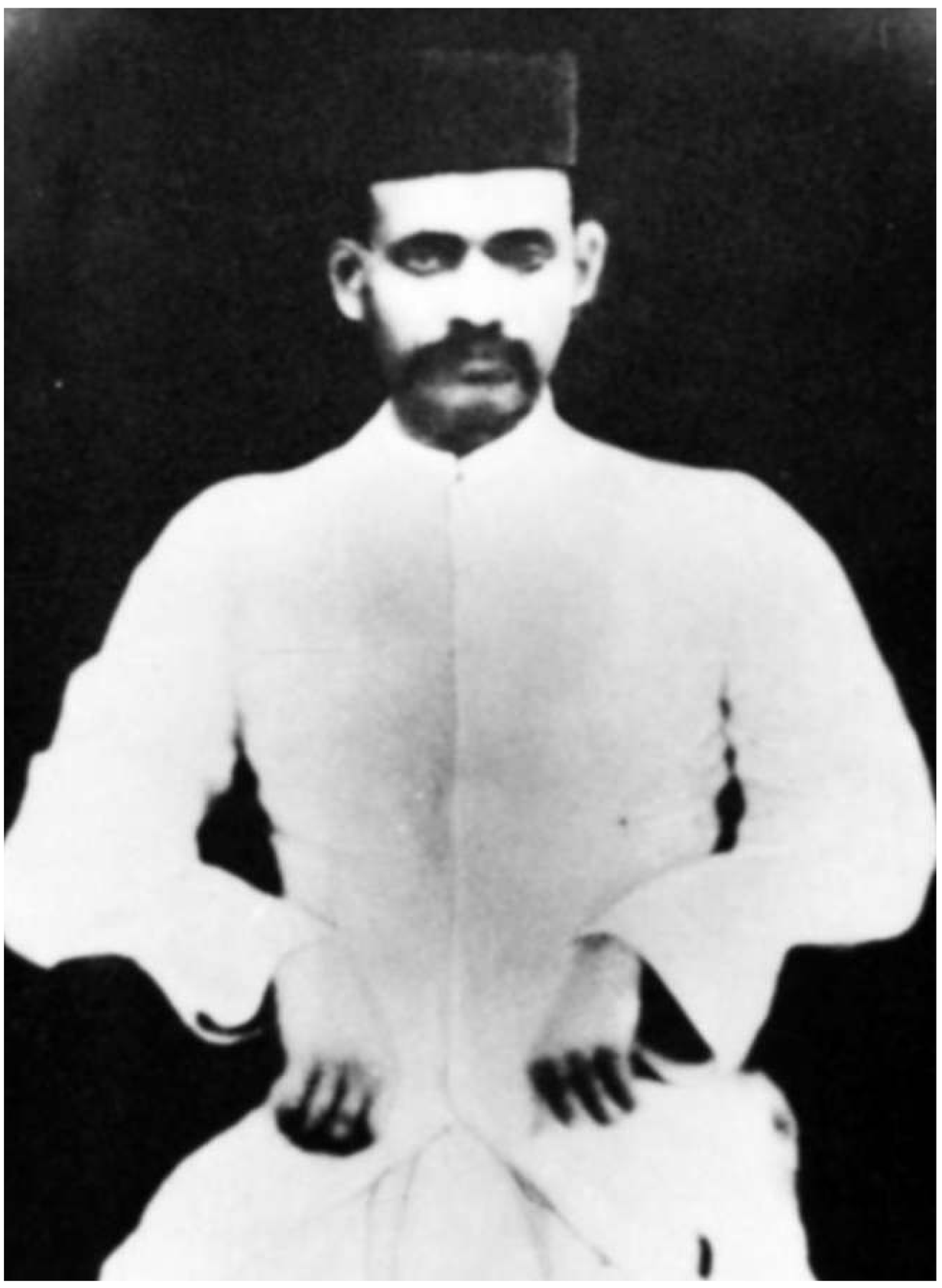

खेड़ा सत्याग्रह के समय सरदार वल्लभभाई पटेल

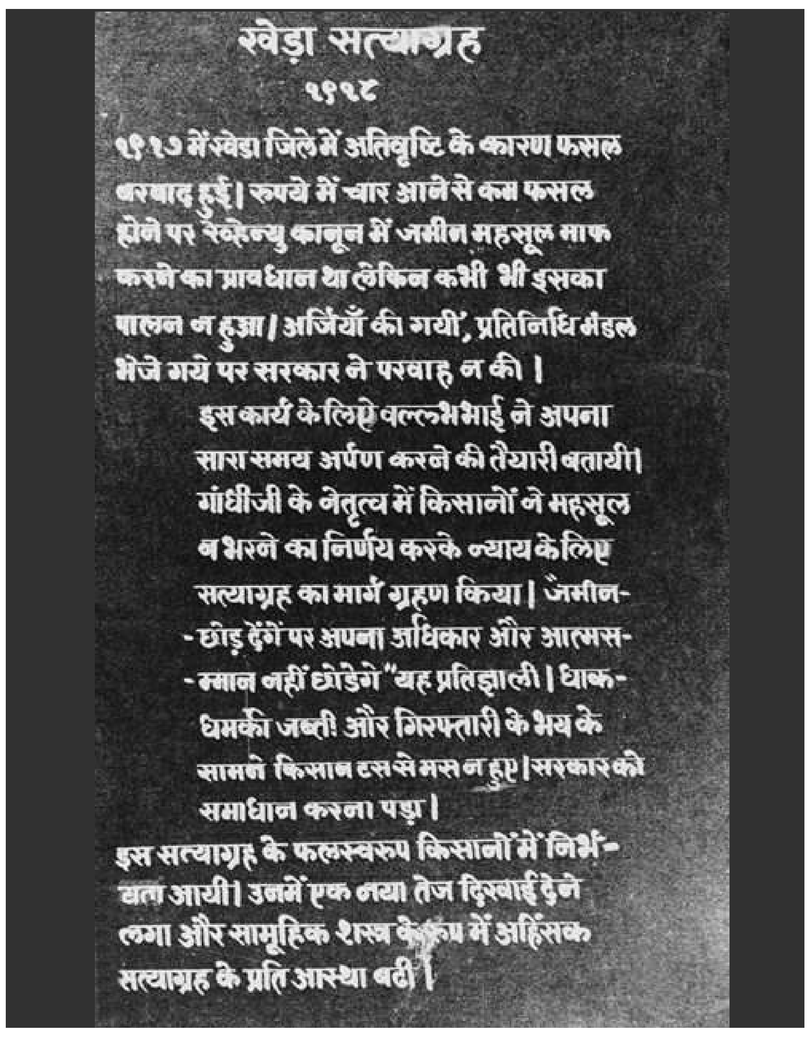

Sardar Vallabhbhai Patel at the time of Kheda Satyagraha

खेड़ा सत्याग्रह

१९१८

१९१७ में खेड़ा जिले में अतिवृष्टि के कारण फसल बरबाद हुई। रुपये में चार आने से कम फसल होने पर रेवेन्यु कानून में जमीन महसूल माफ करने का प्रावधान था लेकिन कभी भी इसका पालन न हुआ। अर्जियाँ की गयीं, प्रतिनिधि मंडल भेजे गये पर सरकार ने परवाह न की।

इस कार्य के लिए वल्लभभाई ने अपना सारा समय अर्पण करने की तैयारी बतायी। गांधीजी के नेतृत्व में किसानों ने महसूल न भरने का निर्णय करके न्याय के लिए सत्याग्रह का मार्ग ग्रहण किया। "जमीन-छोड़ देंगे पर अपना अधिकार और आत्मसम्मान नहीं छोड़ेंगे" यह प्रतिज्ञा ली। धाक-धमकी जब्ती और गिरफ्तारी के भय के सामने किसान टस से मस न हुए। सरकार को समाधान करना पड़ा।

इस सत्याग्रह के फलस्वरूप किसानों में निर्भयता आयी। उनमें एक नया तेज दिखाई देने लगा और सामूहिक शस्त्र के रूप में अहिंसक सत्याग्रह के प्रति आस्था बढ़ी।

खेड़ा सत्याग्रह - 1918 (हिंदी समाचार पत्र कतरन)

Kheda Satyagraha – 1918 (Hindi Newspaper Clippings)

KAIRA DISTRESS.

"SERVANTS OF INDIA" REPORT.

"NEED FOR REAL AND TANGIBLE SYMPATHY."

We have received the text of a lengthy report on the agricultural situation in Matar Taluka, Kaira District, which has been prepared by Messrs. Devdar, Joshi and Thakkar, of the Servants of India Society. The report is too lengthy for full publication in our columns but we give below extracts from the more important portions:—

For the purpose of this inquiry on which we started on the 24th of Janary 1918, it was felt very necessary to obtain as much useful and reliable information as possible in the matter of the alleged failure of the Kharif crop from the people and also from the officers of Government. We were, therefore, advised to secure as much co-operation from Government officials as may be necessary and even some sort of guidance at their hands, if available in our work. So a kind friend in Bombay introduced us to the Hon. Mr. Pratt, the Commissioner, N. D., in order that we may explain to him the nature of our mission and request him

अखबारों की कतरन - "भारत के सेवक खेड़ा पर रिपोर्ट"

Newspaper clippings – "Servants of India report on Kheda"

Central Bureau of Communication (CBC)- Ministry of Information and Broadcasting, Government of India

आज़ादी का अमृत महोत्सव
#AmritMahotsav

जलियांवाला बाग नरसंहार - 1919

Jallianwala Bagh Massacre - 1919

13 अप्रैल, 1919 को साम्राज्यवादियों ने एक ऐसा जघन्य अपराध किया जो भारत और मानवीय इतिहास में एक कलंक के रूप में दर्ज हो चुका है। कर्नल ओ. डायर ने जलियांवाला बाग के बाहर जाने वाले सभी रास्तों को बंद करा दिया और वहां उपस्थित निहत्थे लोगों पर बिना किसी चेतावनी के अंधाधुंध गोलियां दागनी शुरू कर दीं। कुल 1650 राउंड गोलियां चलाई गईं। जिसमें 379 बेगुनाह लोगों की जानें गईं और करीब 1200 व्यक्ति घायल हुए।

On April 13, 1919 a horrendous crime was committed by the imperialists against India and the humanity. Colonel O. Dyer let loose his gun without warning on an unarmed gathering of people at Jalianwalla Bagh after closing all the exits. Altogether 1650 rounds were fired killing 379 people and injuring nearly 1200.

Martial Law Order No. 1.

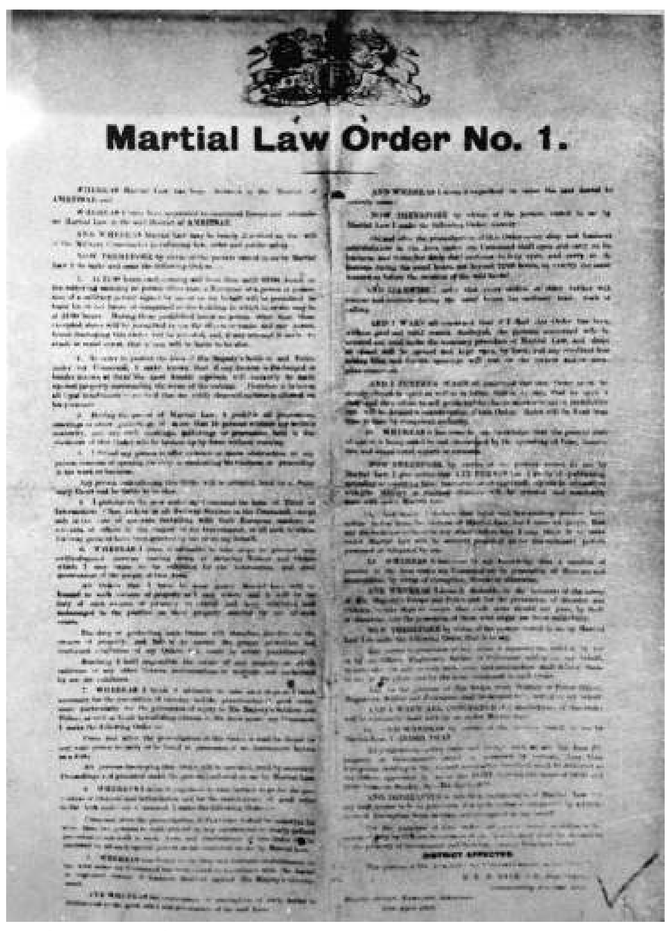

मार्शल लॉ ऑर्डर नंबर 1
Martial Law Order No. 1

ओ'डायर ने आदेश दिया कि भारतीयों को उस सड़क पर रेंगना होगा जिसमें मिस शेरवुड के साथ मारपीट की गई थी
O'Dyer ordered that Indians must crawl along the street in which Miss Sherwood was assaulted

वह लेन जिसके माध्यम से कर्नल ओ 'डायर ने प्रवेश किया
Lane through which Colonel 'O' Dyer entered

अमृतसर में सार्वजनिक बंदोबस्त
Public Flogging at Amritsar

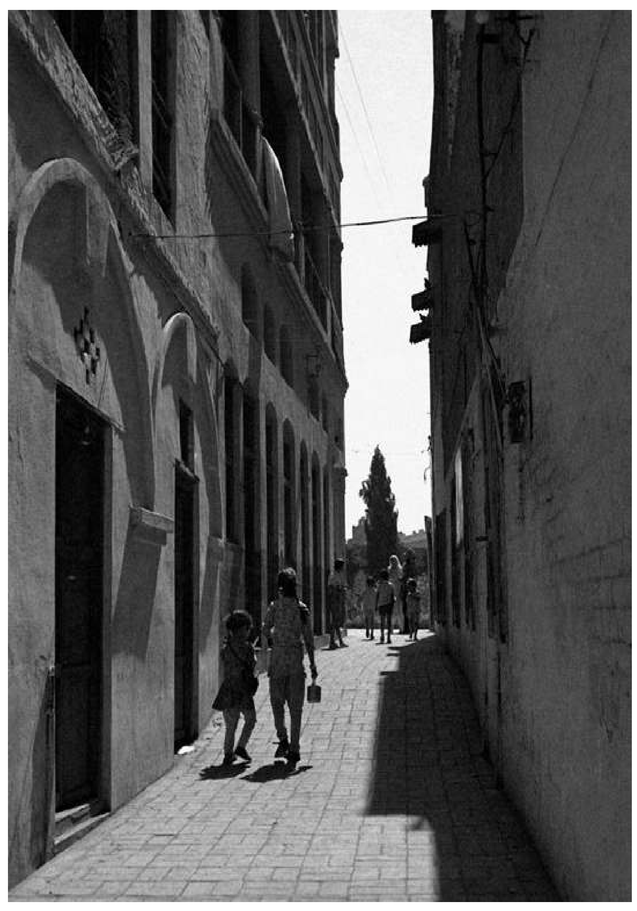

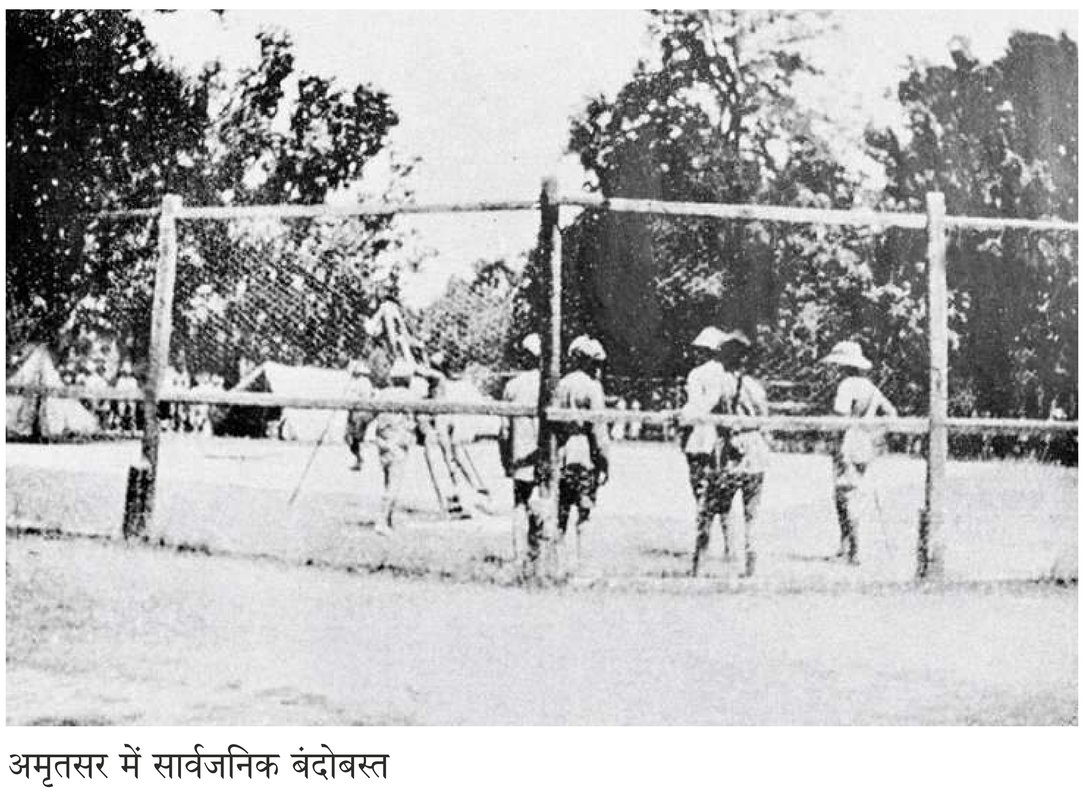

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

जलियांवाला बाग नरसंहार - 1919

Jallianwala Bagh Massacre - 1919

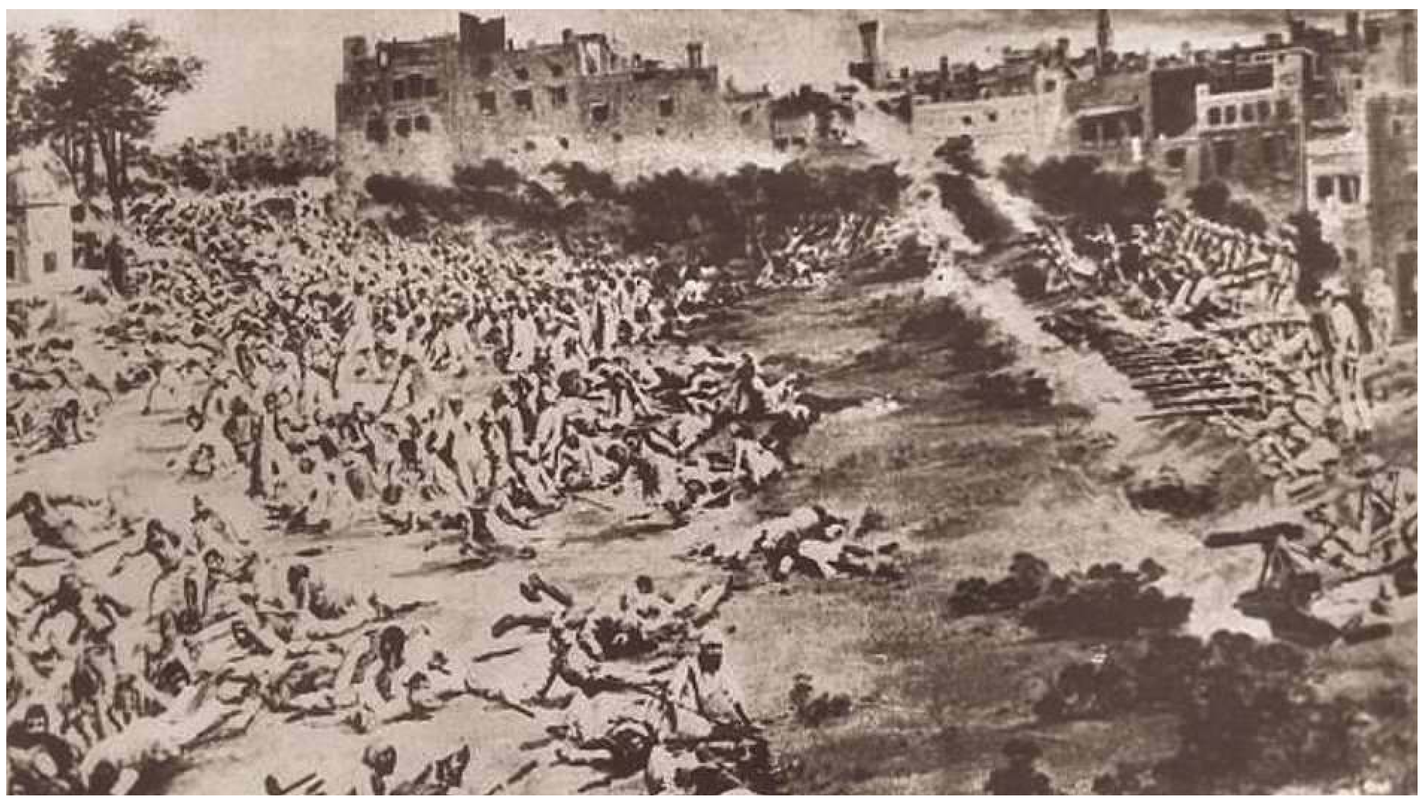

जलियांवाला बाग हत्याकांड का एक दृश्य, अमृतसर, 1919

A scene of the Jallianwala Bagh massacre, Amritsar, 1919

जलियांवाला बाग का वह कुआँ, जिसमें गोलियों से बचने के लिए लोग कूद गए, जिससे 120 लोगों की मृत्यु हुई थी

The well of Jallianwala Bagh, in which people jumped to avoid bullets. 120 people died in this.

सैफुद्दीन किचलू : मार्च 1919 में रौलट एक्ट के लागू होने के बाद पंजाब में इसके विरोध के लिए याद किया जाता है

Saifuddin Kitchlew : He is most remembered for the protests in Punjab after the implementation of Rowlatt Act in March 1919

आज जलियांवाला बाग

Jallianwala Bagh today

आज़ादी का अमृत महोत्सव
#AmritMahotsav

जलियांवाला बाग हत्याकांड का विरोध - 1919
Jallianwala Bagh Massacre Protest - 1919

From SIR RABINDRANATH TAGORE, Kt.

6, Dwarka Nath Tagore's Lane,
Calcutta, May 31st, 1919.

YOUR EXCELLENCY,

The enormity of the measures taken by the Government in the Punjab for quelling some local disturbances has, with a rude shock, revealed to our minds the helplessness of our position as British subjects in India. The disproportionate severity of the punishments inflicted upon the unfortunate people and the methods of carrying them out, we are convinced, are without parallel in the history of civilised governments, barring some conspicuous exceptions, recent and remote. Considering that such treatment has been meted out to a population, disarmed and resourceless, by a power which has the most terribly efficient organisation for destruction of human lives, we must strongly assert that it can claim no political expediency, far less moral justification. The accounts of insults and sufferings undergone by our brothers in the Punjab have trickled through the gagged silence, reaching every corner of India, and the universal agony of indignation roused in the hearts of our people has been ignored by our rulers,—possibly congratulating themselves for what they imagine as salutary lessons. This callousness has been praised by most of the Anglo-Indian papers, which have in some cases gone to the brutal length of making fun of our sufferings, without receiving the least check from the same authority,—relentlessly careful in smothering every cry of pain and expression of judgment from the organs representing the sufferers. Knowing that our appeals have been in vain and that the passion of vengeance is blinding the nobler vision of statesmanship in our Government, which could so easily afford to be magnanimous as befitting its physical strength and moral tradition, the very least that I can do for my country is to take all consequences upon myself in giving voice to the protest of the millions of my countrymen, surprised into a dumb anguish of terror. The time has come when badges of honour make our shame glaring in their incongruous context of humiliation, and I for my part wish to stand, shorn of all special distinctions, by the side of those of my countrymen, who, for their so-called insignificance, are liable to suffer a degradation not fit for human beings.

These are the reasons which have painfully compelled me to ask Your Excellency, with due deference and regret, to relieve me of my title of Knighthood, which I had the honour to accept from His Majesty the King at the hands of your predecessor, for whose nobleness of heart I still entertain great admiration.

Yours faithfully,
(Sd.) RABINDRANATH TAGORE.

वह पत्र जिसमें जलियांवाला हत्याकांड के विरोध में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने नाइटहुड की अपनी उपाधि छोड़ दी
To Protest against the Jallianwala Bagh massacre Rabindranath Tagore left his title of Knighthood. (Copy of that letter)

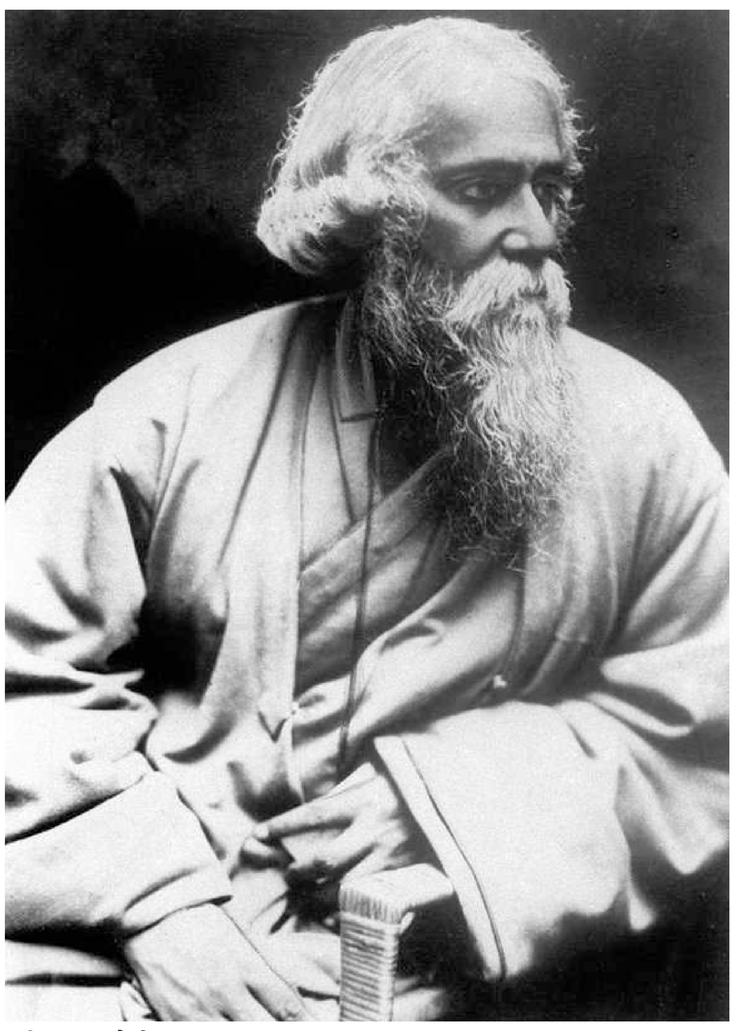

रवीन्द्रनाथ टैगोर
Rabindranath Tagore

उधम सिंह
Udham Singh

सरोजिनी नायडू
Sarojini Naidu

PANJAB - 1919
By SAROJINI NAIDU

How shall our love console thee or assuage
Thy piteous wounds? How shall our grief requite
The hate that scourges and the hands that smite
Thy loveliness with rods of bitter rage?
Lo! let thine anguish be our battle-gage
To wreck the terror of the tyrant's might
That mocks with ruthless scorn thy tragic plight,
And mars with shame thine ancient heritage!

O beautiful! O broken and betrayed!
Endure thou still, unconquered, unafraid,
O mournful queen! O martyred Draupadi!
The sacred rivers of thy stricken blood
Shall prove the five-fold stream of Freedom's flood
And guard the watch-towers of our Liberty!

पंजाब पर सरोजिनी नायडू की एक कविता - 1919
A Poem by Sarojini Naidu on Punjab – 1919

उधम सिंह : जिन्होंने लंदन में ओ'डायर की हत्या की
Udham Singh : Who killed O'Dyer in London

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

असहयोग आंदोलन - 1920

Non-Cooperation Movement - 1920

1921 में गांधी जी द्वारा संचालित असहयोग आंदोलन ने भारत को एक नई दिशा प्रदान की। अनेक कारणों ने एक साथ मिलकर एक प्रचंड रूप धारण कर लिया। गुंटूर में करों की अदायगी नहीं की गई। उत्तर प्रदेश के रायबरेली तथा फैजाबाद जिलों में जमींदारों को दिए जाने वाले गैरकानूनी टैक्स नहीं दिए गए। छोटा नागपुर के आदिवासियों द्वारा चौकीदारी देने से मनाही, पंजाब में गुरुद्वारों के प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार का उन्मूलन तथा देश के सभी हिस्सों में न्यायालयों और शैक्षिक संस्थानों के बहिष्कार किए गए। मोतीलाल नेहरू, सी.आर. दास, वल्लभ भाई पटेल और डा. राजेन्द्र प्रसाद जैसे प्रमुख विधिवक्ताओं ने अपनी वकालत छोड़ दी। विद्यार्थियों तथा शिक्षकों ने अपने स्कूलों और कॉलेजों में जाना बंद कर दिया। इस रिक्तता को भरने के लिए काशी विद्यापीठ, बिहार विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ आदि जैसी राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना की गई।

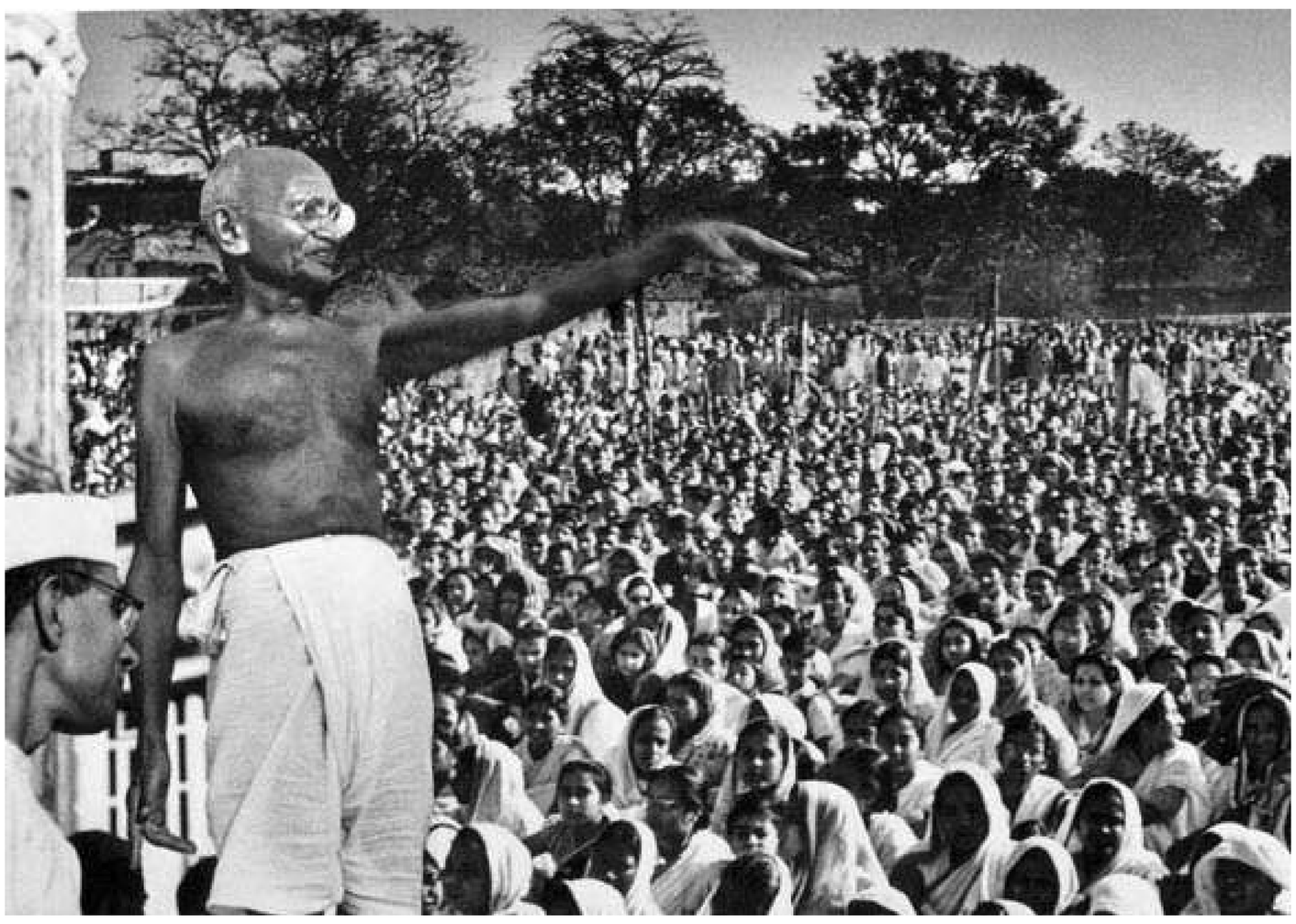

गांधीजी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन तेजी से फैलता चला गया

The non-cooperation movement under the leadership of Gandhiji spread rapidly.

कमलादेवी चट्टोपाध्याय : असहयोग आंदोलन का पता चलते ही वह तुरंत सेवा दल में शामिल होने के लिए भारत लौट आईं

Kamaladevi Chattopadhyay : Returned India immediately to join the Seva Dal as soon as she came to know the Non-Cooperation Movement

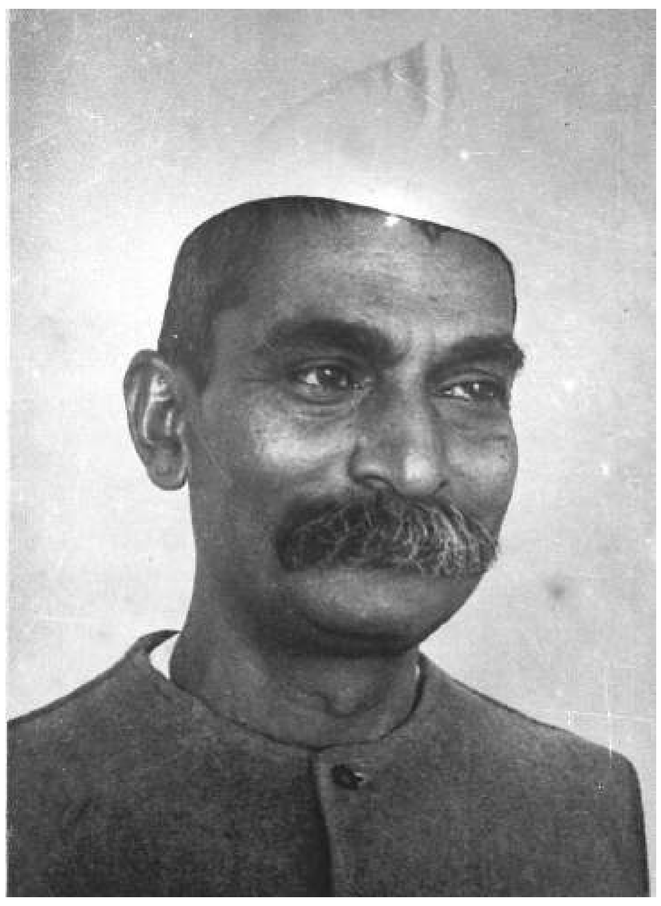

डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने वकालत छोड़ दी

Dr. Rajendra Prasad quit advocacy

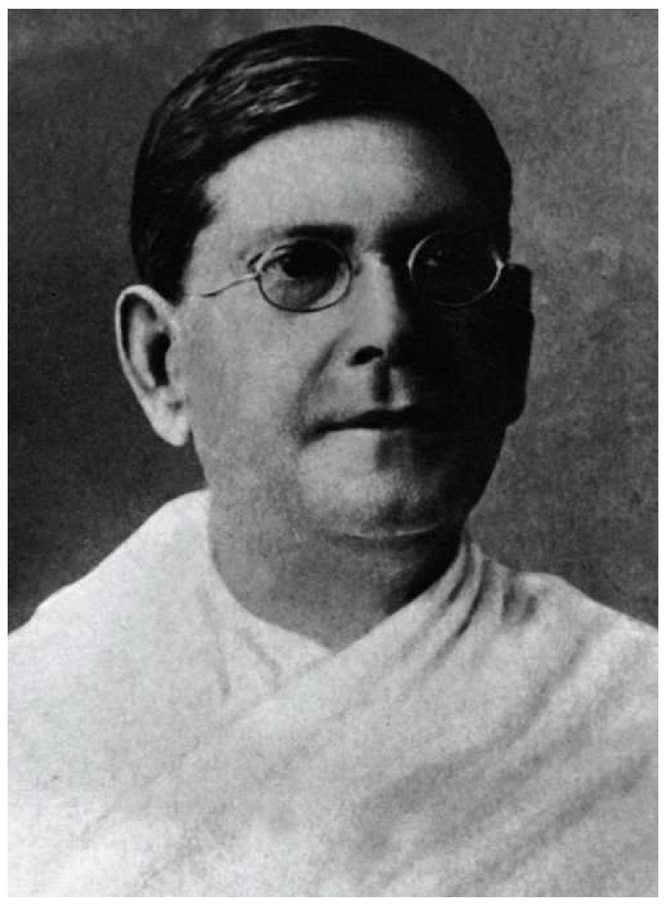

चित्तरंजन दास ने वकालत छोड़ दी

Chitranjan Das quit advocacy

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

असहयोग आंदोलन - 1920

Non-Cooperation Movement - 1920

The Non-cooperation Movement launched by Gandhiji in 1921 revealed a new path for India. It became a mighty torrent with a blend of various reasons. It was non-payment of taxes at Guntur, non-payment of illegal cess to Zamindars of Rai Barellie and Faizabad in Uttar Pradesh, non-payment of chowkidari by Adivasis of Chotta Nagpur, removal of corruption in administration of Gurudwaras in Punjab, boycott of courts and educational institutions in all corners. Leading lawyers like Moti Lal Nehru, C. R. Das, Sardar Vallabh Bhai Patel and Dr. Rajendra Prasad gave up their lucrative legal practice for the cause of the nation.

असहयोग आंदोलन के दौरान जन-भागीदारी

Public participation during the Non-Cooperation Movement

सरला देवी: 1921 में असहयोग आंदोलन में शामिल होने वाली पहली ओडिया महिला

Sarala Devi : First Odia woman to join the Non-cooperation movement in 1921

केशव बलिराम हेडगेवार, जिन्हें असहयोग आंदोलन में भाग लेने के कारण एक साल के लिए जेल की सजा हुई. बाद में इन्होने 1925 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना की

Keshav Baliram Hedgewar, who was Jailed for one year for his participation in the Non-cooperation Movement. Later he founded the Rashtriya Swayamsevak Sangh in 1925.

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

असहयोग आंदोलन - 1920

Non-Cooperation Movement - 1920

सरदार पटेल : उन्होंने गुजरात में इस आंदोलन को फैलाया

Sardar Patel : He spread this movement in Gujarat

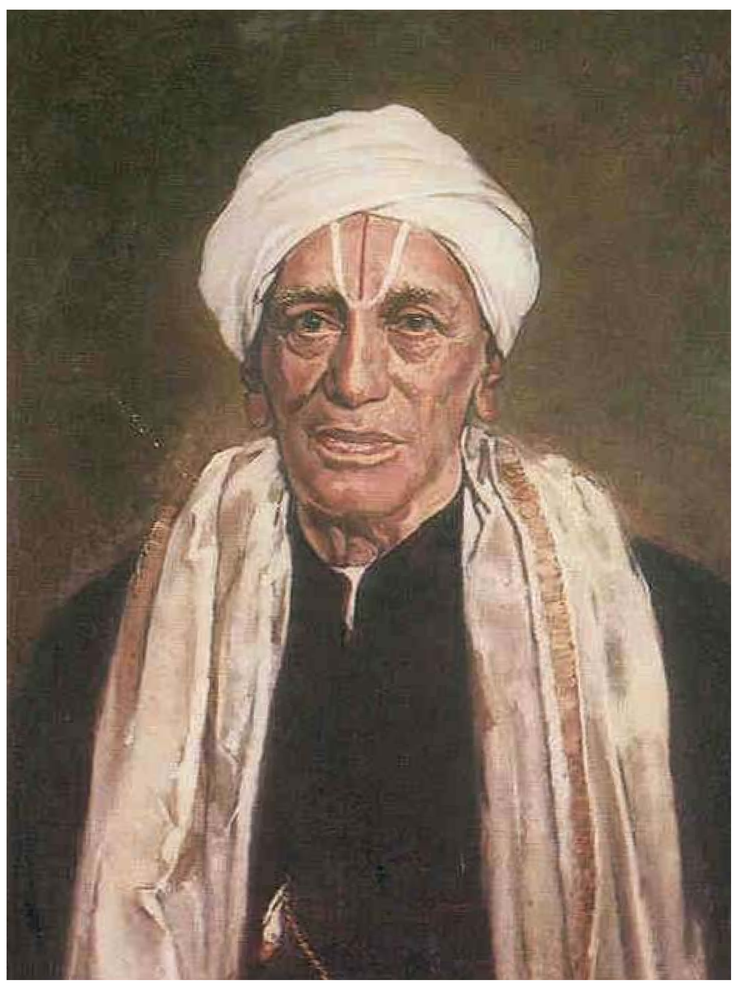

सी. विजयराघवाचारियर : दक्षिण भारत के शेर के रूप में प्रसिद्ध

C. Vijayaraghavachariar : Famous as the Lion of South India

गोविंद वल्लभ पंत : गांधीजी के आह्वान पर असहयोग आंदोलन में कूद पड़े

Govind Vallabh Pant : Non-cooperation movement jumped on Gandhiji's call

दुर्गाबाई देशमुख : असहयोग आंदोलन की प्रमुख नेता और वकील, सामाजिक कार्यकर्ता और राजनीतिज्ञ।

Durgabai Deshmukh: Prominent leader of the non-cooperation movement and lawyer, social worker and politician.

दुग्गीराला गोपालकृष्णाय : गुंटूर जिले के छोटे से शहर चिराला-परला में असहयोग आंदोलन का आयोजन किया

Duggirala Gopalakrishnayya : Organised the Non-Cooperation Movement in the small town of Chirala-Parala in Guntur district

आज़ादी का अमृत महोत्सव
#AmritMahotsav

असहयोग आंदोलन - 1920

Non-Cooperation Movement - 1920

बंबई में विदेशी कपड़ों की होली

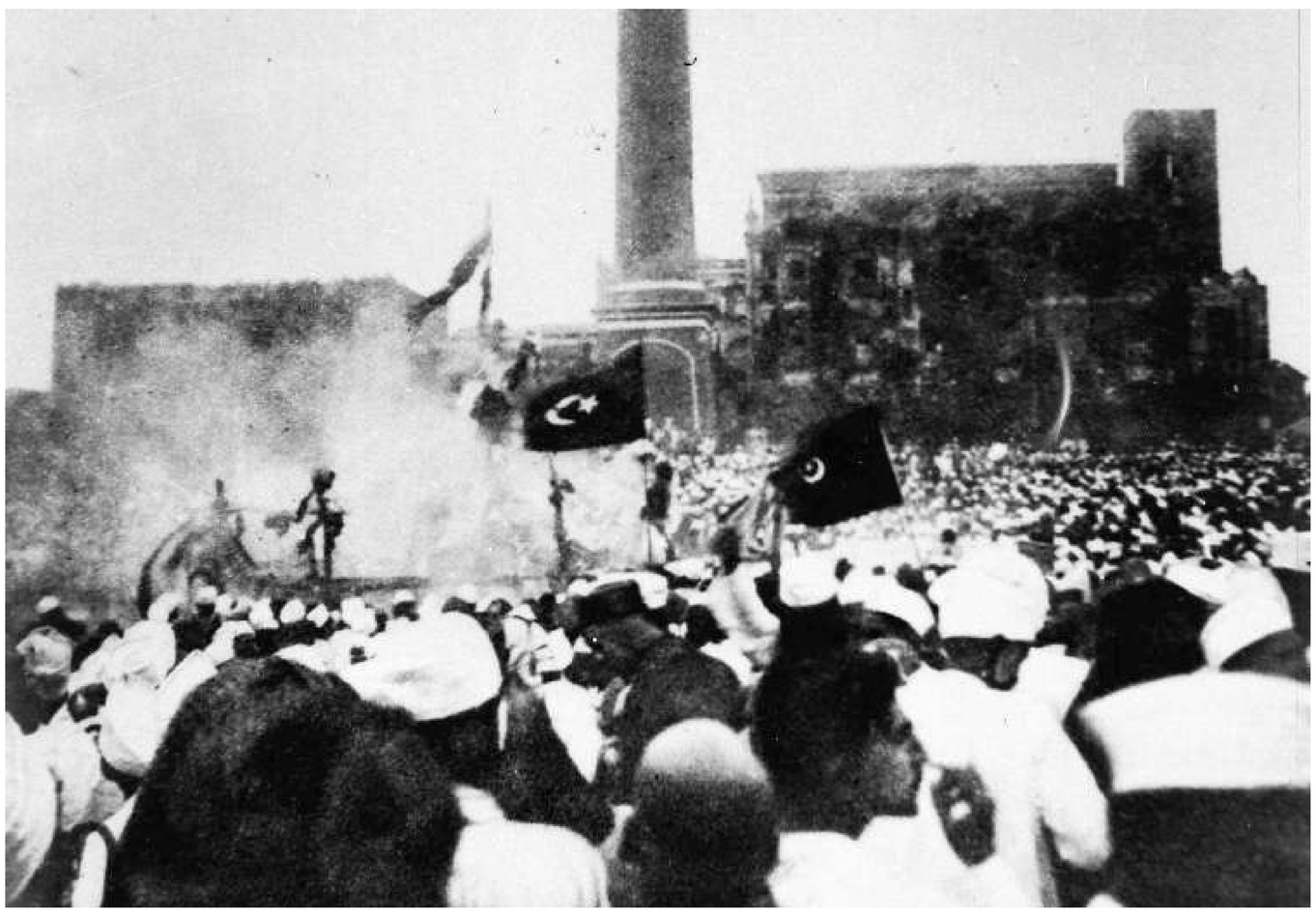

Agitation and burning of foreign cloth in Bombay

गणेश शंकर विद्यार्थी : हिंदी समाचार पत्र 'प्रताप' के संस्थापक

Ganesh Shanker Vidhyarthi : Founder of Hindi newspaper 'Pratap'

एन.सी. बारदोलाई : असहयोग आंदोलन में असम के प्रमुख नेता

N.C. Bardoloi : Prominent leader from Assam in the Non-cooperation movement

हसरत मोहनी : इंकलाब जिंदाबाद का नारा देने वाले

Hasrat Mohani : Those who raise the slogan of Inquilab Zindabad

पदम देव : असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लिया, ये 'हिमालयी रियासती प्रजा मंडल' के संस्थापक सदस्य थे।

Padam Dev: Participated in non-cooperation movement and civil disobedience movement, was the founder member of 'Himalayan princely state Praja Mandal'.

PUBLIC MEETING

AND

BONFIRE OF FOREIGN CLOTHES

Will take place at the Maidan near Elphinstone Mills
Opp. Elphinstone Road Station

On SUNDAY the 9th Inst. at 6-30 P. M.

When the Resolution of the Karachi Khilafat Conference and another Congratulating Ali Brothers and others will be passed.

All are requested to attend in Swadeshi Clothes of Khadi. Those who have not yet given away their Foreign Clothes are requested to send them to their respective Ward Congress Committees for inclusion in the

GREAT BONFIRE.

poster brought out during the non-cooperation movement

बंबई में विदेशी कपड़ों की होली

Agitation and burning of foreign cloth in Bombay

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

असहयोग आंदोलन - 1920

Non-Cooperation Movement - 1920

मलयपुरम सिंगारवेलु चेट्टियार : 'पूंजीवादी निरंकुशता' के खिलाफ अहिंसक असहयोग के पक्ष में थे

Malayapuram Singaravelu Chettiar : In favour of using non-violent non-cooperation against 'capitalistic autocracy'

सेनापति बापट : मूली बांध के निर्माण के खिलाफ तीन साल के किसान सत्याग्रह का नेतृत्व किया

Senapati Bapat : Led the three-year Farmers' Satyagraha against the construction of the Mulshi Dam

गुलजारीलाल नंदा: असहयोग आंदोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया

Gulzarilal Nanda: took part in the non-cooperation movement

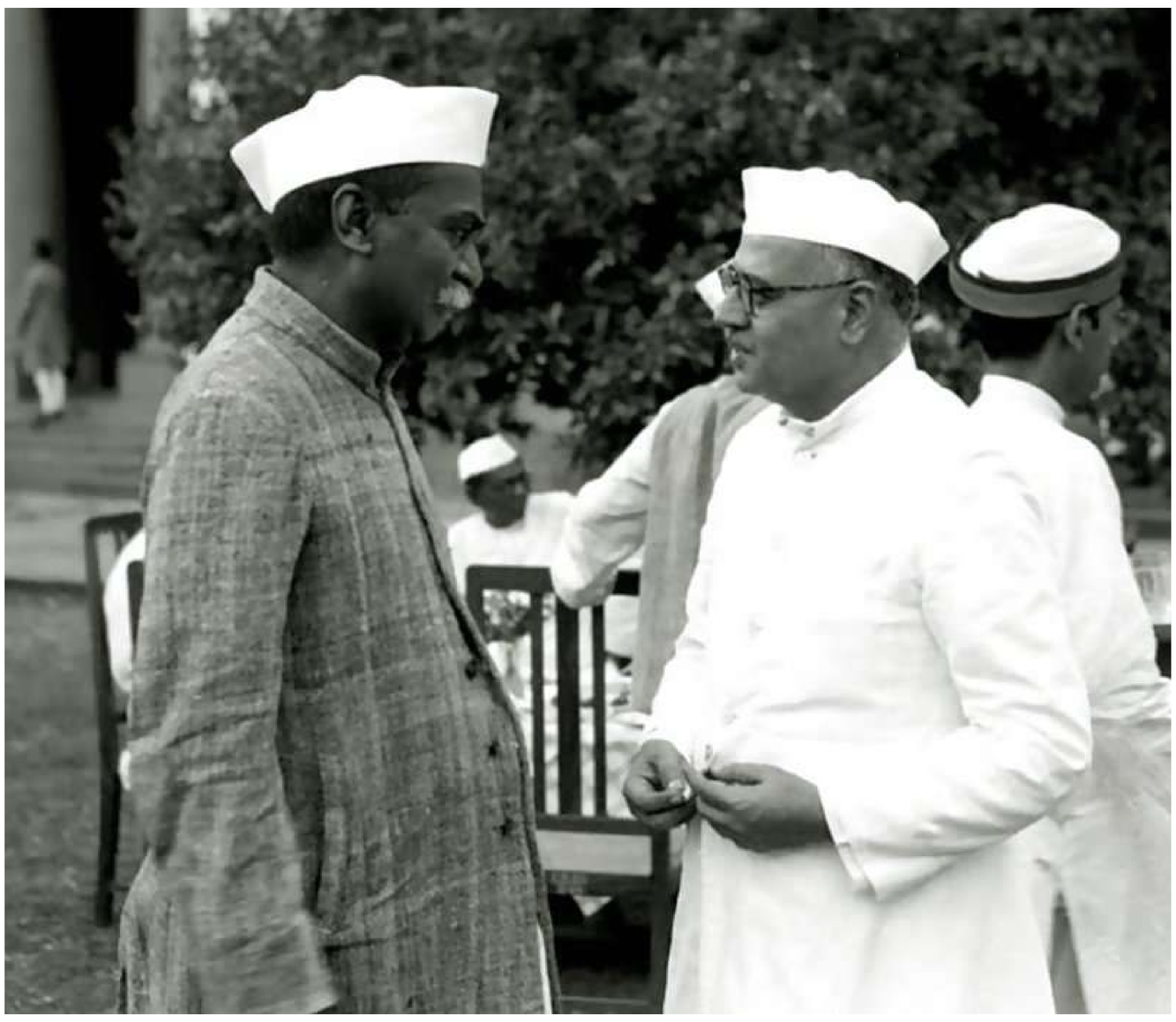

जयरामदास दौलतराम : गांधी के निकट सहयोगी और असहयोग आंदोलन को बढ़ावा देने वाले

Jairamadas Daulatram : Gandhi's close allies and promoters of the Non-Cooperation Movement

राजकुमारी अमृत कौर : गांधी की सचिव के रूप में 16 वर्षों तक काम किया।

Rajkumari Amrit Kaur : Worked as Gandhi's secretary for 16 years

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

असहयोग आंदोलन - 1920

Non-Cooperation Movement - 1920

टी. प्रकाशम : आंध्र केसरी (आंध्र का शेर) के रूप में जाना जाता है, असहयोग आंदोलन के दौरान, उन्होंने 30,000 आंदोलनकारियों के साथ गुंटूर में एक प्रदर्शन का आयोजन किया

T. Prakasam : Known as Andhra Kesari (Lion of Andhra), during the Non-Cooperation Movement, he organized a demonstration in Guntur with 30,000 agitators

स्वरुप रानी : 1920-30 दशक में भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में प्रमुख भूमिका निभाई

Swaroop Rani : Played a major role in India's Independence movement during 1920-30.

मुथुलक्ष्मी रेड्डी : एक महिला कार्यकर्ता और समाज सुधारक, जो एनी बेसेंट और महात्मा गांधी से प्रभावित थीं

Muthulakshmi Reddy : A woman activist and social reformer who was influenced by Annie Besant and Mahatma Gandhi

लाडो रानी जुत्शी : पंजाब की अग्रणी महिला क्रांतिकारी, जो 1919 से लगातार सक्रिय थीं

Lado Rani Zutshi : Leading woman revolutionary of Punjab, who was continuously active since 1919.

मोतीलाल नेहरू ने वकालत छोड़ दी

Motilal Nehru quit advocacy

उमाबाई कुंडापुर : 'भगिनी मंडल' की संस्थापक और हिंदुस्तानी सेवा दल की महिला विंग की नेता

Umabai Kundapur : Founder of the 'Bhagini Mandal' and the leader of women's wing of Hindustani Seva Dal.

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

खिलाफत आंदोलन - 1919-24

Khilafat Movement - 1919-24

असहयोग और खिलाफत आंदोलन साथ-साथ चल रहे थे। भारत में एक खिलाफत कमेटी का गठन किया गया। गांधी जी तथा कांग्रेस ने भी उनका साथ दिया। इस संघर्ष की चरम सीमा यह थी कि अली-बंधु और गांधी जी स्वराज तथा हिंदू-मुसलमान एकता का संदेश घर-घर पहुंचाने के लिए गांव-गांव घूमते रहे।

The Non-cooperation Movement was running concurrently with Khilafat Movement. A Khilafat Committee was formed in India, which was supported by Gandhiji and the Congress. The peak of the struggle saw the Ali Brothers and Gandhiji moving from village to village with the message of Swaraj and Hindu-Muslim unity.

हकीम अजमल खान

Hakim Ajmal Khan

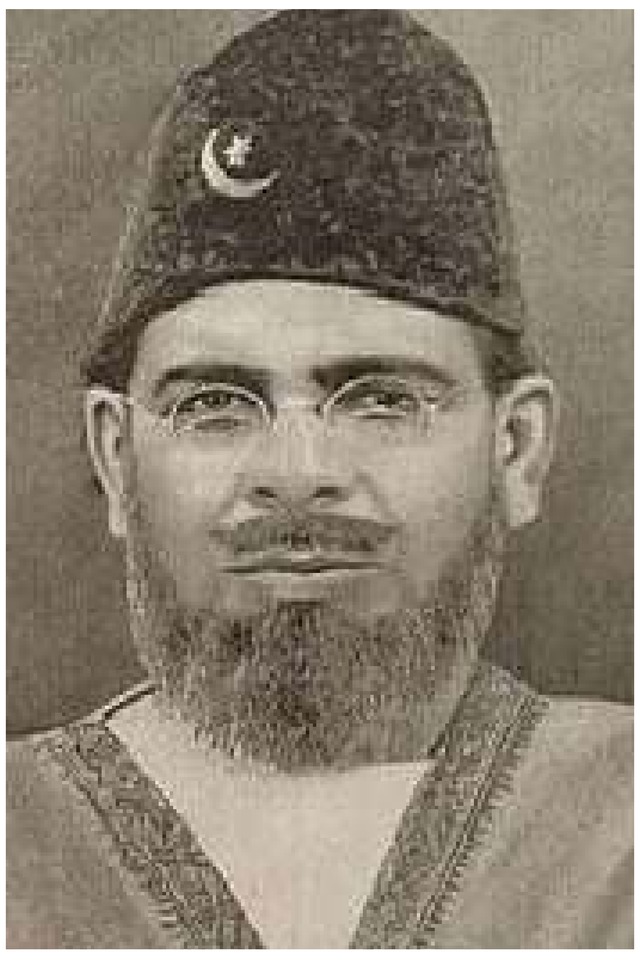

मौलाना मोहम्मद अली

Moulana Mohhammad Ali

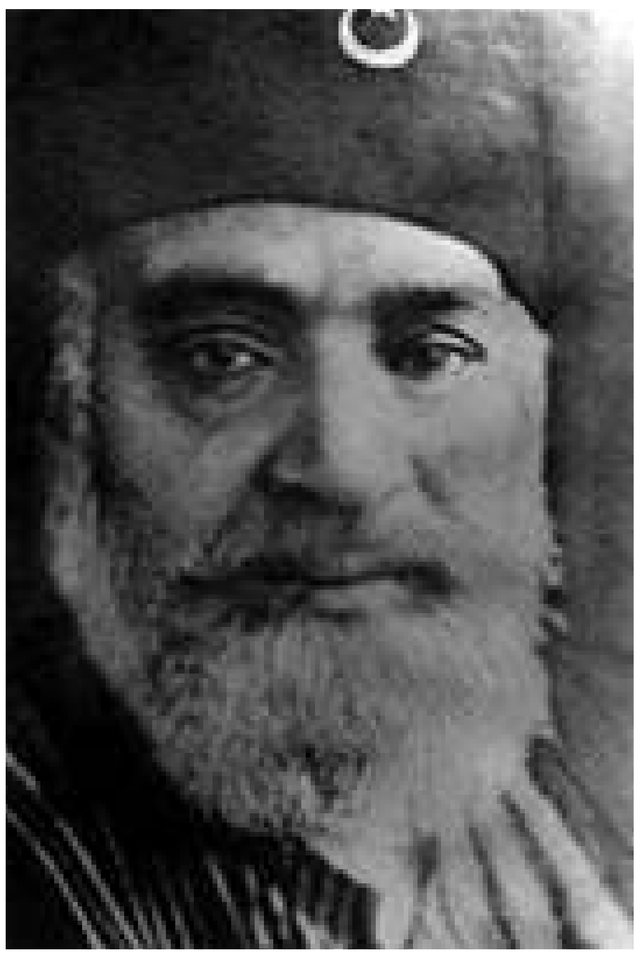

मौलाना शौकत अली

Moulana Shaukat Ali

THE KHILAFAT DAY.

SOLEMN HINDU-MOSLEM OBSERVANCE.

A COMMON PRAYER.

BUSINESS AT A STANDSTILL IN THE COUNTRY.

APPEAL TO MOSLEMS

PURSUANT TO THE RESOLUTION PASSED at the ALL-INDIA MOSLEM CONFERENCE held at LUCKNOW on the 21st day of September 1919 the KHILAFAT COMMITTEE OF BOMBAY appeal once more to the Mussalmans of this city to realise the crash through which the Moslem world is now passing owing to the proposed dismemberment of TURKEY and the consequent weakening of the Temporal Power of KHALEFAT-UL-MUSLAMEEN.

They appeal to the Moslems to observe FRIDAY the 20 day of MOHORRUM 1338 A.H. as a day of Solemn Prayer (17th October 1919). After the JUMMA prayers on that day a special prayer will be offered at the Jama Mosque for the continuance and permanence of the Temporal Power of the KHALIFA and a Resolution will be fixed confirming the Resolution passed at the ALL-INDIA MUSLEM CONFERENCE held at LUCKNOW on the 21st September 1919.

1. MIYA MAHOMMED HAJI JAN MAHOMMED CHOTANI, President.
2. MIRZA ALI MAHOMMED KHAN
3. BADRUDDIN ABDULLA KOOR
4. AHMED HAJI SIDDICK KHATRI

Honorary Secretaries of the Khilafat Committee of Bombay

"Chhotani Manzil," Khadak, BOMBAY.

MR. GANDHI'S APPEAL TO HINDUS

अख़बार की कतरन "खिलाफत दिवस"

The newspaper clippings "The Khilafat Day"

आब्दी बानो बेगम : मोहम्मद अली और शौकत अली की अम्मी

Abadi Bano Begum: Mother of Muhammad Ali and Shaukat Ali

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

चौरी चौरा की घटना - 1922

Chauri Chaura Incident - 1922

असहयोग आंदोलन सफलता की ओर बढ़ ही रहा था कि गोरखपुर जिले में चौरी चौरा में हिंसा भड़क उठी, जिसमें 22 पुलिसकर्मियों को जिंदा जला दिया गया। महात्मा गांधी के लिए अहिंसा मात्र कार्यसिद्धि का साधन नहीं बल्कि एक सिद्धांत था। दुःख और संताप की इस घड़ी में गांधी जी ने आंदोलन वापिस ले लिया।

Just when the Non-Cooperation Movement was in a rising crescendo, 22 policemen were burnt alive in mob violence at Chauri Chaura in Gorakhpur District. In this time of sorrow and anguish Mahatma Gandhiji withdrew the movement, because, to him non-violence was not just expediency, but also his principle.

चौरी चौरा में जनता का आक्रोश

Public outrage in Chauri Chaura

शहीद स्मारक, चौरी चौरा

Martyr Memorial, Chauri Chaura

गांधीजी गिरफ्तार

Gandhiji Arrested

इसके बावजूद भी गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया, देशद्रोह के लिए उन पर मुकदमा चलाया गया तथा छः वर्ष की सजा सुनाई गई। स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण गांधी जी को जेल से रिहा कर दिया गया। बहुत से राज्यों में हिंदू-मुसलमानों के बिगड़ते हुए संबंधों को देखकर गांधी जी बहुत दुःखी हुए। सांप्रदायिक एकता की पुनर्स्थापना के लिए उन्होंने 21 दिनों का आत्मशुद्धि उपवास रखा।

Despite this he was arrested, tried for sedition and sentenced to six years imprisonment. Due to his bad health Gandhiji was released from prison. Gandhiji was aghast at the deterioration of Hindu-Muslim relations in several states. He undertook a 21 day self-purificatory fast for restoration of communal harmony.

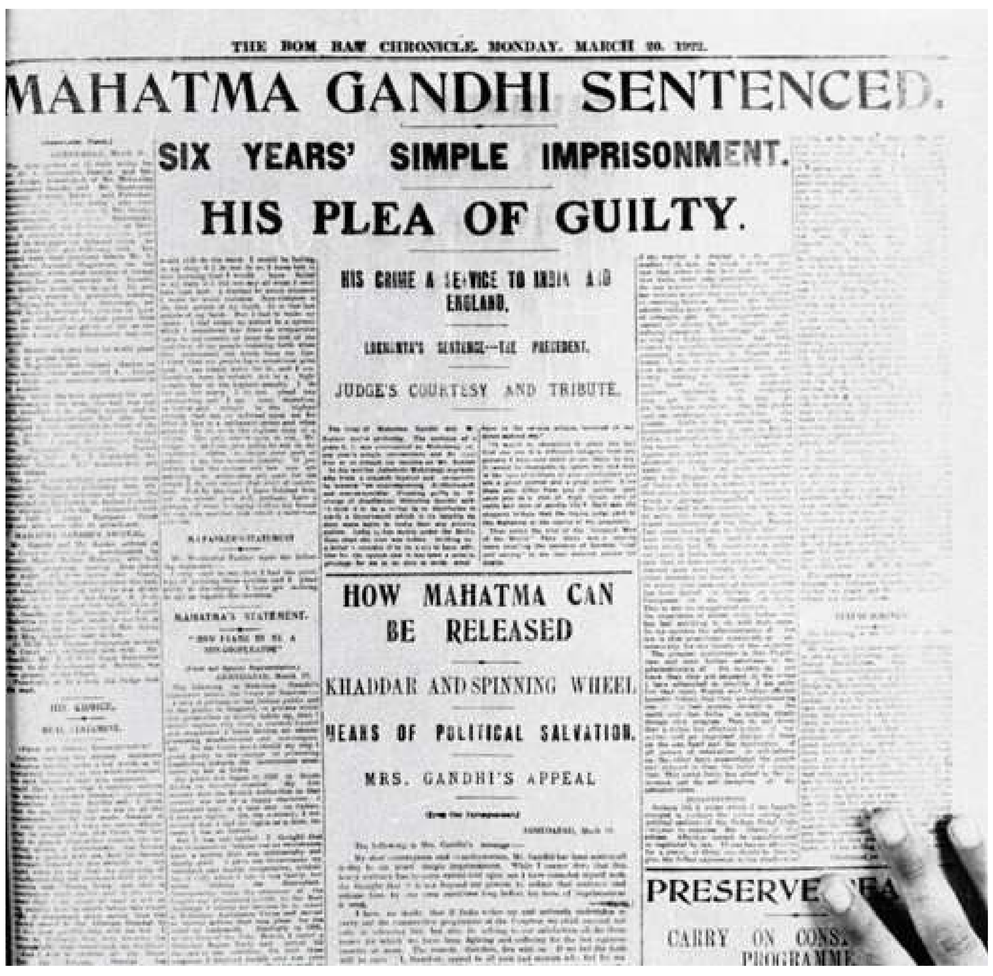

THE BOM BAY CHRONICLE. MONDAY. MARCH 20. 1922.

MAHATMA GANDHI SENTENCED.

SIX YEARS' SIMPLE IMPRISONMENT.

HIS PLEA OF GUILTY.

HIS CRIME A SERVICE TO INDIA AND ENGLAND.

LOKMANYA'S SENTENCE—THE PRESIDENT.

JUDGE'S COURTESY AND TRIBUTE.

HOW MAHATMA CAN BE RELEASED

KHADDAR AND SPINNING WHEEL

MEANS OF POLITICAL SALVATION.

MRS. GANDHI'S APPEAL

PRESERVE

CARRY ON CONS. PROGRAMME

अख़बार की कतरन

The newspaper clipping

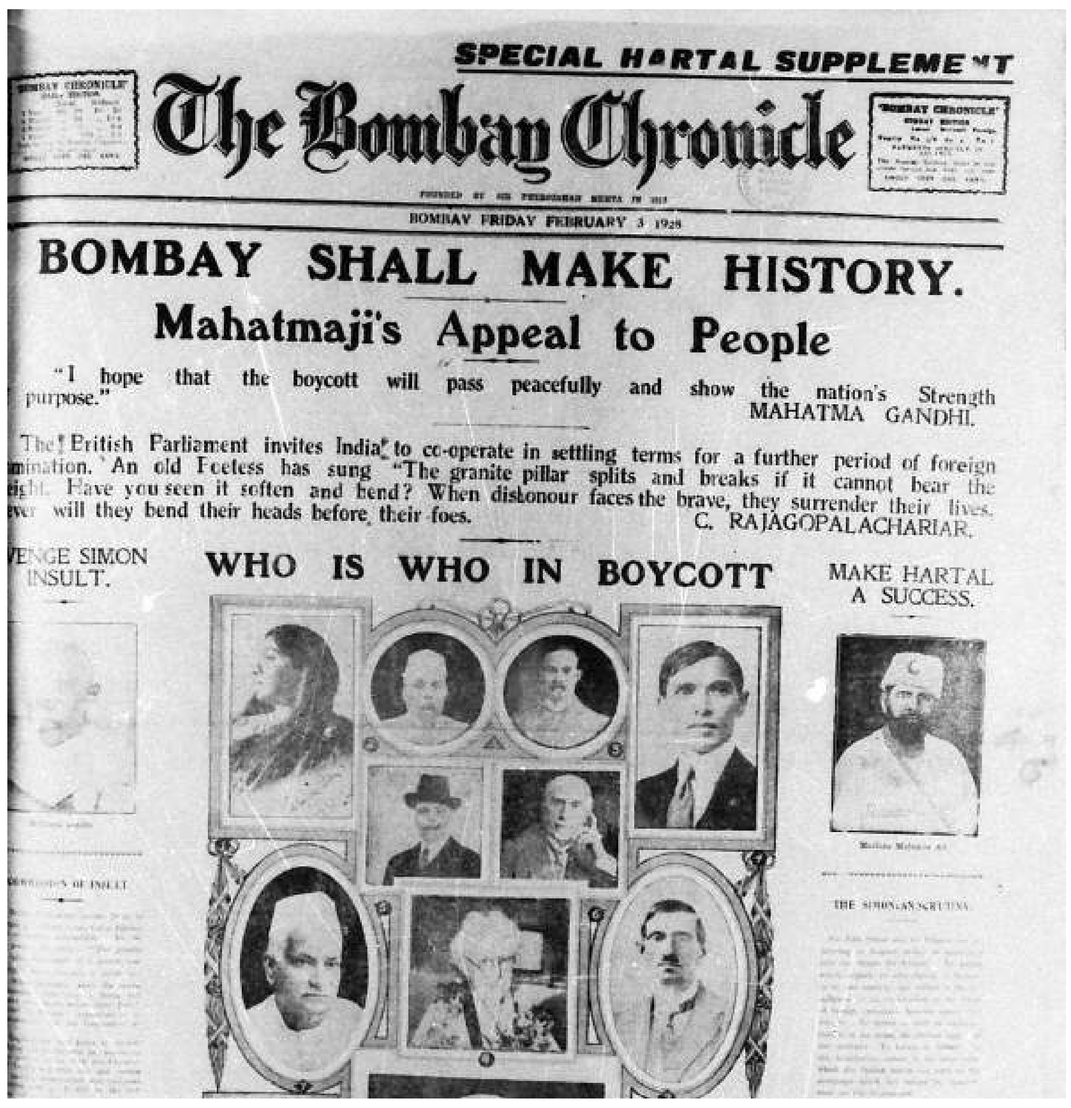

SPECIAL HARTAL SUPPLEMENT

The Bombay Chronicle

BOMBAY FRIDAY FEBRUARY 3 1928

BOMBAY SHALL MAKE HISTORY.

Mahatmaji's Appeal to People

"I hope that the boycott will pass peacefully and show the nation's Strength purpose."

MAHATMA GANDHI.

The British Parliament invites India to co-operate in settling terms for a further period of foreign mination. An old Poetess has sung "The granite pillar splits and breaks if it cannot bear the ight. Have you seen it soften and bend? When dishonour faces the brave, they surrender their lives. ver will they bend their heads before their foes.

C. RAJAGOPALACHARIAR.

VENGE SIMON INSULT.

WHO IS WHO IN BOYCOTT

MAKE HARTAL A SUCCESS.

अख़बार की कतरन

The newspaper clipping

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन और काकोरी कांड - 1924-25

Hindustan Socialist Republican Association and Kakori Kand-1924-25

देश की आज़ादी के लिए नौजवान अपने प्राण न्योछावर करने को तैयार थे। ऐसे क्रांतिकारी नौजवानों ने वर्ष 1924 में हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोशिएसन की स्थापना की। इसके संस्थापकों में सचिन्द्र नाथ सान्याल, राम प्रसाद बिस्मिल और सचिन्द्र नाथ बख्शी प्रमुख थे।

हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोशिएसन के क्रांतिकारी सदस्यों ने ब्रिटिश राज के खिलाफ युद्ध छेड़ने के उद्देश्य से ब्रिटिश सरकार का खजाना लूट लिया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में यह घटना काकोरी कांड (09 अगस्त, 1925) के नाम से प्रसिद्ध है। काकोरी कांड में राजेंद्र नाथ लाहिडी, राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक़ उल्ला खान और रोशन सिंह को फांसी की सजा दी गई।

The youth of the nation were ready to sacrifice their lives for the freedom of the country. Such revolutionary youth founded the Hindustan Socialist Republican Association in the year 1924. Its founders were Sachindra Nath Sanyal, Ram Prasad Bismil and Sachindra Nath Bakshi.

The radical members of the Hindustan Socialist Republican Association looted the treasury of the British government with the aim of waging war against the British Raj. In the history of Indian freedom struggle, this particular event became famous as Kakori incident (August 09, 1925). Rajendra Nath Lahidi, Ram Prasad Bismil, Ashfaq Ulla Khan and Roshan Singh were sentenced to death in the incident.

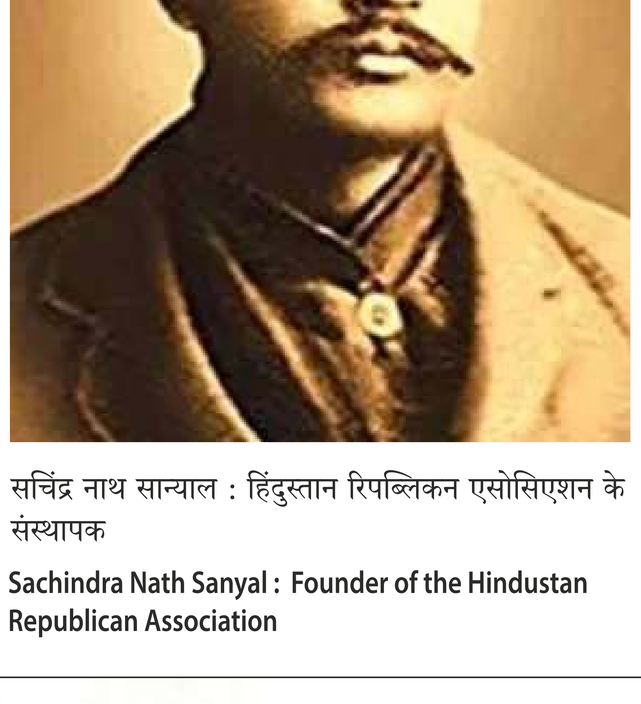

सचिंद्र नाथ सान्याल : हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के संस्थापक

Sachindra Nath Sanyal : Founder of the Hindustan Republican Association

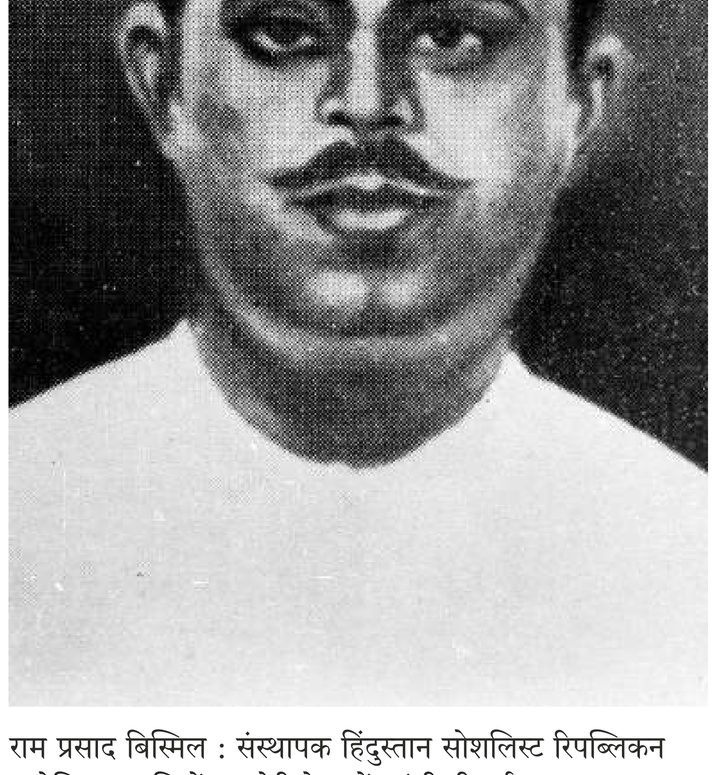

सचिन्द्र बख्शी : हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य, काकोरी केस में अभियुक्त

Sachindra Bakshi : Member of the Hindustan Republican Association, Accused in Kakori case

राम प्रसाद बिस्मिल : संस्थापक हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन, जिन्हें काकोरी केस में फांसी दी गई

Ram Prasad Bismil : Founder of Hindustan Socialist Republican Association those who were hanged in Kakori case

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन और काकोरी कांड - 1924-25

Hindustan Socialist Republican Association and Kakori Kand-1924-25

दुर्गा भाभी : जिन्हें भारत की अग्नि भी कहा जाता है. आज़ादी की लड़ाई में भाग लेकर अंग्रेजों को थर्राने वाली महिलाओं में इनका नाम आता है

Durga Bhabhi : Also known as the fire of India. Her name comes in the women who shook the British by participating in the freedom struggle.

जोगेश चंद्र चटर्जी : हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य, काकोरी केस में अभियुक्त

Jogesh Chandra Chatterjee : Member of the Hindustan Republican Association, Accused in Kakori case

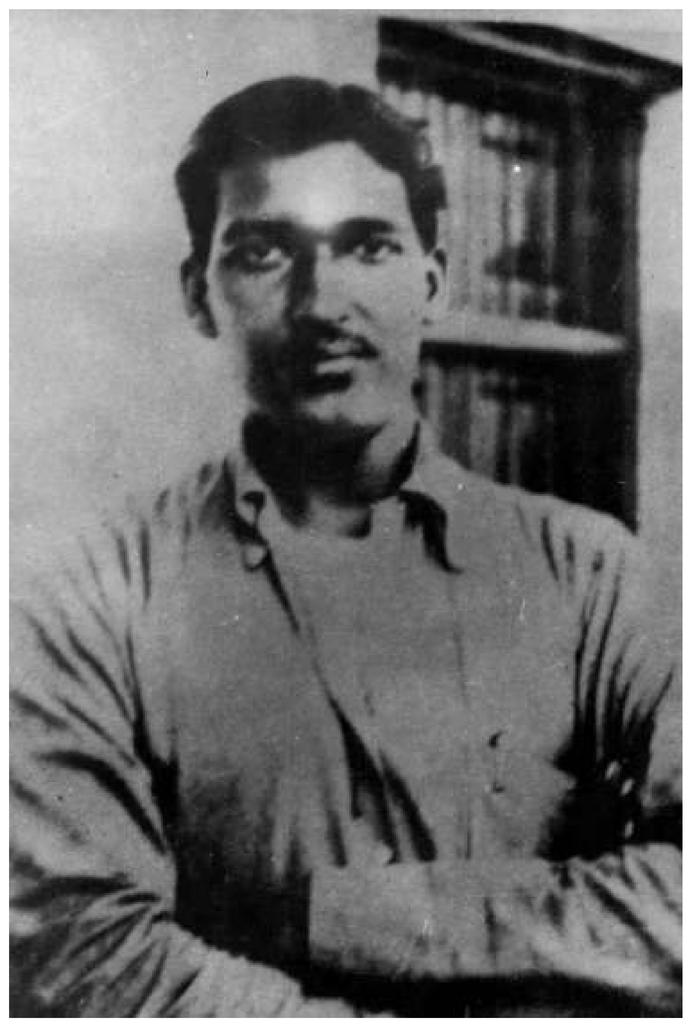

अशफाकउल्ला खान : जिन्हें काकोरी केस में फांसी दी गई

Ashfaqullah Khan : Who were hanged in Kakori case

राजेंद्र नाथ लाहिड़ी : एक भारतीय क्रांतिकारी जो काकोरी षड्यंत्र और दक्षिणेश्वर बमबारी के पीछे के मास्टरमाइंड थे। वह हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सक्रिय सदस्य थे, काकोरी केस में अभियुक्त

Rajendra Nath Lahiri : An Indian revolutionary, who was the mastermind behind Kakori conspiracy and Dakshineshwar bombing. He was active member of HSRA, Accused in Kakori case

बटुकेश्वर दत्त : अप्रैल 1929 में नई दिल्ली केंद्रीय विधान सभा में भगत सिंह के साथ बम विस्फोट करने के लिए जाने जाते हैं, हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य

Batukeshwar Dutt : He is best known for having exploded a few bombs, along with Bhagat Singh, in the Central Legislative Assembly in New Delhi on 8 April 1929, Member of HSRA

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन और काकोरी कांड - 1924-25

Hindustan Socialist Republican Association and Kakori Kand-1924-25

काकोरी केस चलने के दौरान क्रांतिकारियों का लिया गया सामूहिक फोटो

1. जोगेशचन्द्र चटर्जी 2. प्रेमकृष्ण खन्ना 3. मुकंदी लाल 4. विष्णुशरण दुबलिश 5. सुरेशचंद्र भट्टाचार्य 6. रामकृष्ण खत्री 7. मन्मथनाथ गुप्त 8. राजकुमार सिन्हा 9. ठाकुर रोशन सिंह 10. रामप्रसाद बिस्मिल 11. राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी 12. गोविन्दचरण कर 13. रामदुलारे त्रिवेदी 14. रामनाथ पांडेय 15. सचिन्द्रनाथ सान्याल 16. भूपेंद्रनाथ सान्याल 17. प्रणवेश कुमार चटर्जी

Group photo of revolutionaries taken during Kakori case

1. Jogeshchandra Chatterjee 2. Premkrishna Khanna 3. Mukandi Lal 4. Vishnusharan Dublish 5. Sureshchandra Bhattacharya 6. Ramkrishna Khatri 7. Manmathnath Gupta 8. Rajkumar Sinha 9. Thakur Roshan Singh 10. Ramprasad Bismil 11. Rajendranath Lahiri 12. Govind Charan Kar 13 . Ramdulare Trivedi 14. Ramnath Pandey 15. Sachindranath Sanyal 16. Bhupendranath Sanyal 17. Pravesh Kumar Chatterjee

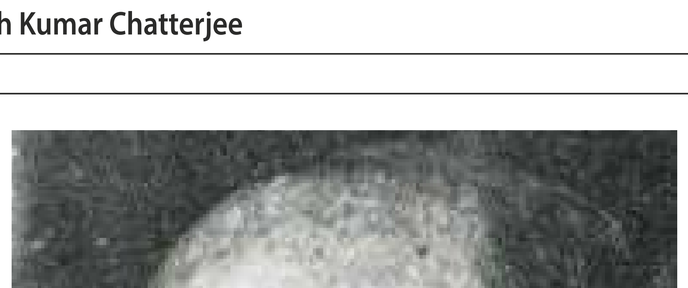

मन्मथ नाथ गुप्ता : वह 13 साल की उम्र में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गए, और हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सक्रिय सदस्य थे

Manmath Nath Gupta : Joined the Indian independence movement at the age of 13, and was an active member of the HSRA

प्रेमकृष्ण खन्ना : काकोरी काण्ड में प्रयुक्त माउजर पिस्तौल के कारतूस इन्हीं के शस्त्र-लाइसेन्स पर खरीदे गये थे

Premkrishna Khanna: The cartridges of the Mauser pistol used in the Kakori incident were purchased on his arms-license.

Central Bureau of Communication (CBC)- Ministry of Information and Broadcasting, Government of India

हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन और काकोरी कांड - 1924-25

Hindustan Socialist Republican Association and Kakori Kand-1924-25

रोशन सिंह : हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य, काकोरी केस में अभियुक्त

Roshan Singh : Member of the Hindustan Republican Association, Accused in Kakori case

भगवती चरण वोहरा : हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य

Bhagwati Charan Vohra : Member of the Hindustan Republican Association

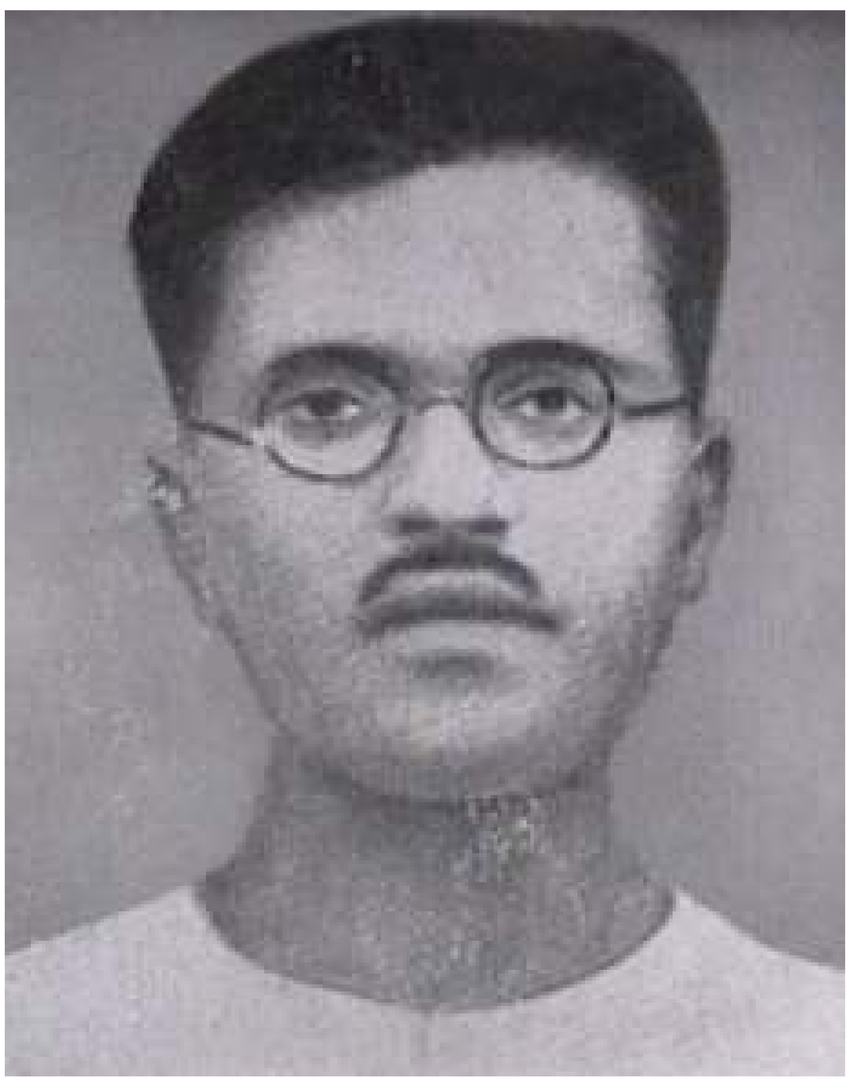

जतिन नाथ दास : हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य जिनकी 63 दिन की भूख हड़ताल के बाद लाहौर जेल में मृत्यु हो गई

Jatin Nath Das : Member of Hindustan Socialist Republican Association who died in Lahore Jail after 63 days of hunger strike

The Bombay Chronicle

VOL. XVII NO. 218 — BOMBAY SATURDAY SEPTEMBER 14 1929 — ONE ANNA

JATIN LAYS DOWN LIFE AT ALTAR OF MOTHERLAND

Glorious Martydom Crowns a Youthful Career of Service & Sacrifice

A VICTIM OF BUREAUCRATIC CALLOUSNESS

63 Days Without Food!

END OF A BRAVE FIGHT TO VINDICATE POLITICALS' RIGHTS

Lahore, September 13.

It is reported that Jatindranath Das breathed his last at five minutes past one to-day.—Free Press.

Jatin Das went on hunger-strike on July 13, in sympathy with the demands put forward by Bhagat Singh and Batukeshwar Dutt, co-accused in the Conspiracy case for better treatment to political prisoners.

THOUSANDS FOLLOW MARTYRED YOUTH'S BIER

Nation - Wide Mourning

Victim of Imperialist 'Izzat'

Jatindra Nath Das whose death in the Borstal Jail after about 63 days' Hunger Strike took place on Friday.

YOUTHFUL LIFE CROWDED WITH HEROIC DEEDS

Assembly and Jatin Das' Death

ADJOURNMENT MOTION TABLED

Pt. Motilal Pays Tribute to Jatin

I AM PROUD OF HIM

Professor's Tribute to Jatin Das

HOW CALCUTTA RECEIVED THE NEWS

मातृभूमि के लिये जतिन ने जान दे दी

Jatin lays down life at altar of Mother Land (Clippings)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

साइमन कमीशन वापस जाओ - 1928

Simon Commission Go Back - 1928

प्रशासनिक सुधारों के लिए ब्रिटिश सरकार ने साईमन कमीशन बिठाया जिसके सभी सदस्य अंग्रेज थे। इस कमीशन के विरोध में देशव्यापी हड़ताल और प्रदर्शन हुए। साइमन कमीशन के विरोध में प्रदर्शन करते समय लाला लाजपत राय पर लाठियां बरसाई गईं जिन्होंने अंततोगत्वा इनके प्राण ही हर लिए।

Came the Simon Commission, appointed by the British Government to recommend administrative reforms. All the members of this commission were Britishers. Country-wide hartals and demonstrations were organised against this. During the protest injury sustained by Lala Lajpat Rai at Lahore became the cause of his death.

साइमन कमीशन के विरोध में प्रदर्शन करते समय लाला लाजपत राय पर लाठियों से प्रहार किए गए जिन्होंने आखिरकार उनके प्राण ही हर लिए

While protesting against the Simon Commission, Lala Lajpat Rai was attacked by lathis who ultimately lost his life

भगत सिंह : जिन्होंने लाला लाजपत राय की हत्या का बदला लेने के लिए पुलिस अफसर सांडर्स की हत्या कर दी

Bhagat Singh : Who killed police officer Sanders to avenge the killing of Lala Lajpat Rai

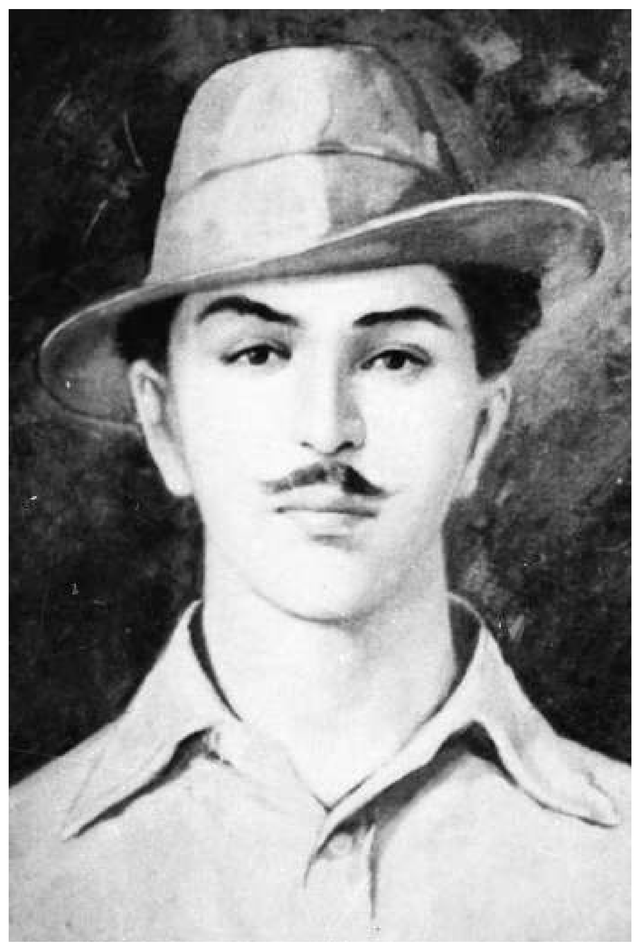

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

बारदोली आन्दोलन - 1928

Bardoli Movement - 1928

इसी समय वल्लभ भाई पटेल ने गुजरात के बारदोली जिले में एक सत्याग्रह आंदोलन का नेतृत्व किया जिसे विशेष सफलता मिली। फसलों की क्षति के समय भूमि राजस्व की बढ़ोतरी के विरोध में यह 'कर नहीं' अभियान था।

A Satyagraha Movement was led by Sardar Vallabh Bhai Patel in Bardolai District of Gujarat met with conspicuous success. It was a no-tax campaign against the increase of land revenue at the time of crop failure.

बारदोली आन्दोलन के दौरान महात्मा गाँधी और सरदार पटेल

Mahatma Gandhi and Sardar Patel during the Bardoli movement

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

पूर्ण स्वराज - 1929

Purna Swaraj - 1929

सन् 1929 में लाहौर में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसमें स्वराज के लिए स्वाधीनता आंदोलन को एक नया मोड़ दिया गया। अंग्रेज सरकार ने संवैधानिक सुधारों के लिए मोती लाला नेहरू समिति की रिपोर्ट अस्वीकृत कर दी। इसलिए कांग्रेस ने पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने का प्रस्ताव पारित किया।

The Lahore Congress Session in 1929 gave a new turn to the Gandhian Movement for Swaraj. British government denied to accept the Motilal Nehru Committee report on constitutional reforms. The Congress, therefore, passed a resolution demanding complete independence.

लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पारित किया गया

Resolution of complete swaraj was passed in Lahore session

Declare India As Indedendent N

Congress Call To Britain

A. I. C. C. Debates Working Committee Resolution

FORTIFICATION ON NEW REICH

लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पारित किया गया

Resolution of complete swaraj was passed in Lahore session

CONGRESS PRESIDENT-ELECT'S TRIUMPHANT MARCH.

Seething Crowds Display Unprecedented Enthusiasam.

A LESSON IN DISCIPLINE.

Complete Absence Of Police: A Unique Feature.

BRITISH C. I. D. ACTIVE IN NIZAM'S DOMINIONS.

MARATHA YOUTH ARRESTED.

On Eve Of Viceroy's Visit.

RUSSO-CHINESE DISPUTE.

Persia Not Prepared To Intervene.

REPLY TO U. S.

IF CONGRESS DECLARES FOR INDEPENDENCE?

Premier MacDonald And Mr. Benn At Wits End.

RESOLUTE GOVT. THREAT

How Whitehall Views Breakdown Of Viceregal Conference.

The Bombay Chronicle

THE ONLY NEWSPAPER IN THE EAST.

FREE INSURANCE

Be A Subscriber TO-DAY

राष्ट्रपति का चुनाव लाहौर में होता है

The President elect Session Lahore

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

खुदाई खिदमतगार - 1929

Khudai Khidmatgar - 1929

"खुदाई खिदमतगार" स्वयंसेवकों की वार्षिक रैली

The annual rally of the "Khudai Khidmatgar" volunteers

"खुदाई खिदमतगार" की रैली में महात्मा गाँधी और खान अब्दुल गफ्फार खान

Mahatma Gandhi and Khan Abdul Ghaffar Khan at the "Khudai Khidmatgar" rally

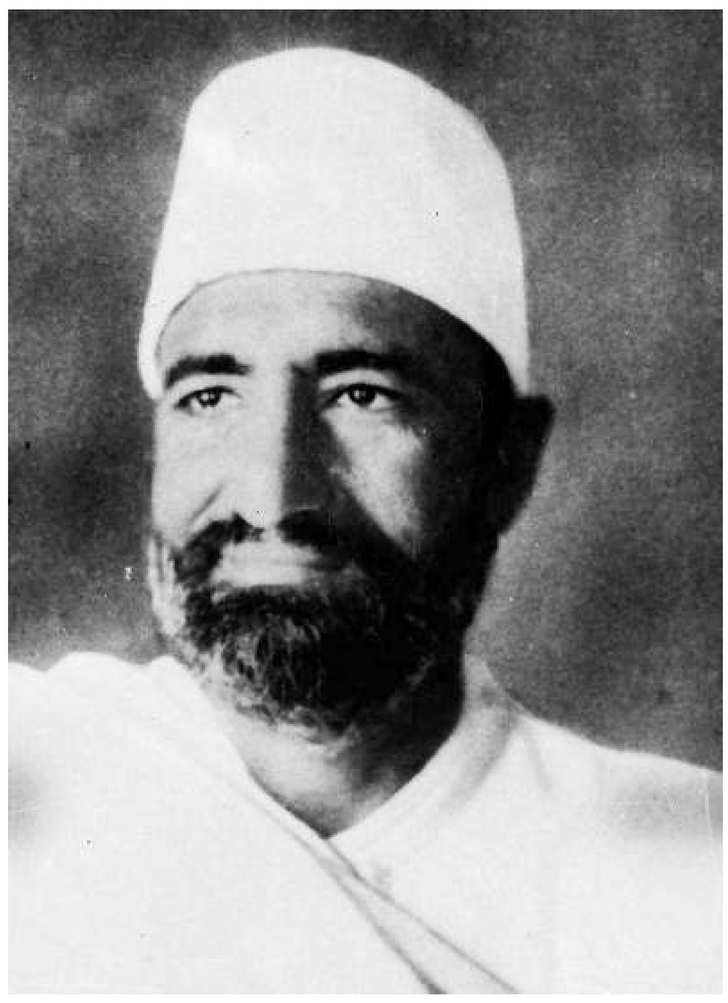

खान अब्दुल गफ्फार खान : सीमांत गांधी के नाम से प्रसिद्ध

Khan Abdul Gaffar Khan : Popularly known as Frontier Gandhi

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

चटगांव शस्त्रागार पर धावा - 1930

Attack on Chatgaon Arsenal - 1930

तीस के दशक में पूरे देश में सत्याग्रह की लहर बहने लगी थी। लेकिन कुछ देशभक्त क्रांतिकारी रास्ते पर चल रहे थे। सूर्य सेन, गणेश घोष, अनंत सिंह और प्रीतिलता वाडेडकर ने चटगांव में शस्त्रागार पर धावा बोल कर सनसनी फैला दी।

While Satyagraha sentiment was sweeping the country in thirties the patriots wedded to the cult of revolution were active in their way of fight for freedom. Surya Sen, Ganesh Ghosh, Anant Singh and Preetilata Waddeddar spread a wave of sensation by organising a raid on the armoury at Chatgaon.

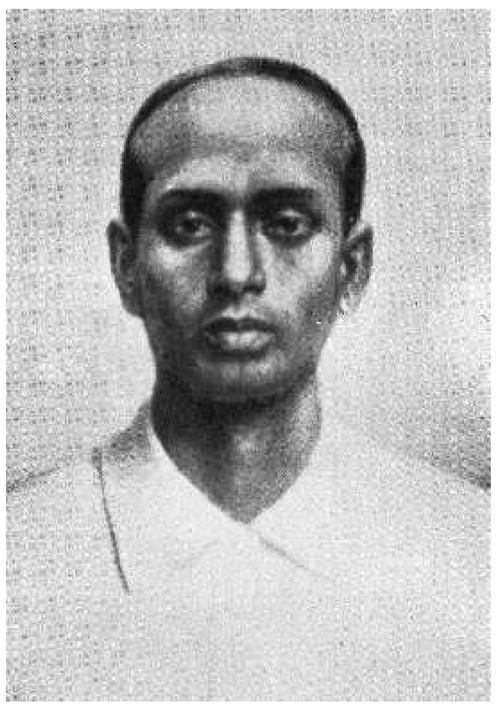

सूर्य सेन : चटगांव शस्त्रागार पर धावे के मास्टरमाइंड

Suriya Sen : The raid's mastermind at the Chatgaon armory

प्रीतिलता वाडेडकर : चटगांव शस्त्रागार पर धावा बोलने वाली प्रमुख क्रांतिकारी महिला

Preetilata Waddekar : The leading revolutionary woman who stormed the Chatgaon armory

सुबोध रॉय : चटगांव शस्त्रागार पर धावा बोलने वाले

Subodh Roy : Who attacked the Chatgaon Armory

गणेश घोष : चटगांव शस्त्रागार पर धावा बोलने वाले

Ganesh Ghosh : Who attacked on Chatgaon Armory

अनंत सिंह : वे चटगांव स्त्रागार छापे के नेताओं में से एक थे

Anant Singh : He was one of the leaders of the Chatgaon Armory Raid

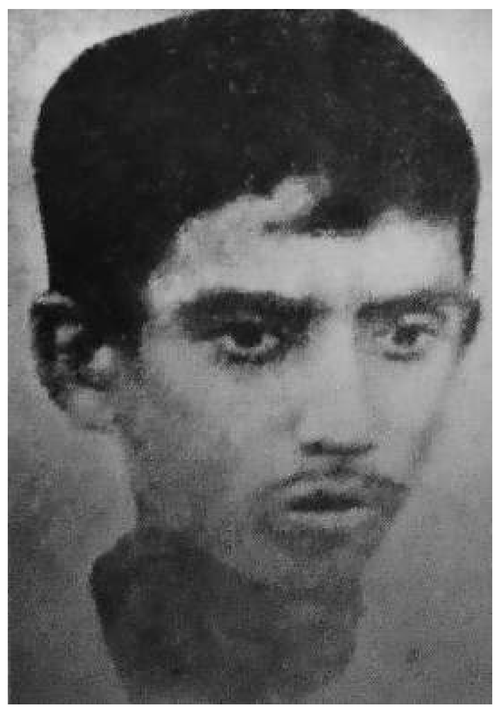

मनोरंजन भट्टाचार्य : चटगांव शस्त्रागार पर धावा बोलने वाले

Manoranjan Bhattacharya : Attack on Chatgaon Armory

कल्पना दत्ता : चटगांव शस्त्रागार पर धावा बोलने वाले

Kalpana Dutta : Attack on Chatgaon Armory

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

क्रांतिकारियों की शहादत - 1931

Martyrdom of Revolutionaries - 1931

भारतीय क्रांतिकारी नौजवान देश की आजादी के लिए मौत को गले लगाने को तैयार थे। भारतीय रिपब्लिकन आर्मी के कमांडर-इन-चीफ चन्द्रशेखर आजाद ने घोषणा कर रखी थी कि अंग्रेज़ सरकार कभी भी उन्हें जीवित नहीं पकड़ पाएगी। आजाद ने पुलिस के साथ मुठभेड़ करते हुए इलाहाबाद (अब प्रयागराज) में मौत को गले लगा लिया। उन्होंने अपने वचन को निभाया और नौजवानों के दिलों में हमेशा के लिए उनकी अमिट छाप पड़ गई। तीस के दशक में ही लाहौर में भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव को फांसी दी गई।

Indian revolutionary youth were ready to embrace death for the freedom of the country. Chandrashekhar Azad, the Commander-in-Chief of the Indian Republican Army, had declared that the British government would never be able to capture him alive. Azad embraced death in an encounter with the police in Allahabad (now Prayagraj). He kept his promise and left an indelible mark in the hearts of the youth forever. Bhagat Singh, Rajguru and Sukhdev too were hanged in Lahore in this decade only.

चंद्रशेखर आजाद : जिन्हें ब्रिटिश पुलिस कभी जीवित नहीं पकड़ सकी

Chandra Shekhar Azad : Whom the British police could never catch alive

भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी की सजा की खबर (अखबार की कतरन)

Bhagat Singh, Rajguru and Sukhdev sentenced to death (Newspaper Clipping)

सुखदेव : जिन्हें लाहौर में फांसी दी गई, 23 मार्च, 1931

Sukhdev : Hanged in Lahore, 23 March, 1931

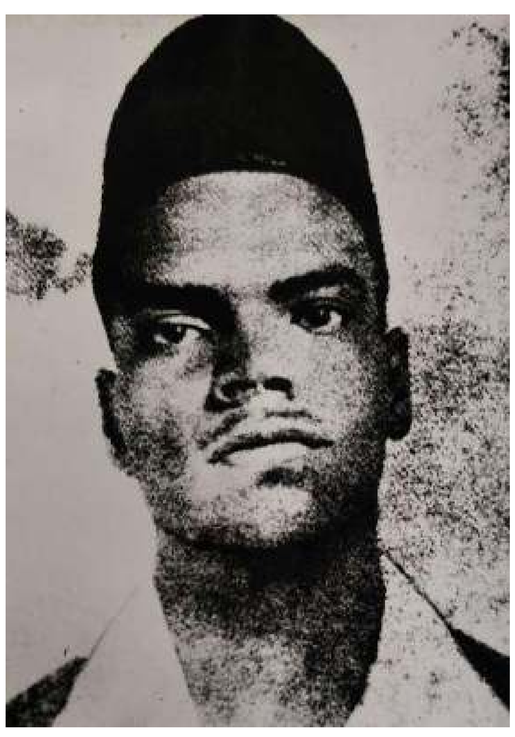

राजगुरु : जिन्हें लाहौर में फांसी दी गई, 23 मार्च, 1931

Rajguru : Hanged in Lahore, 23 March, 1931

शहादत के बाद चंद्रशेखर आज़ाद, 1931

Chandrashekhar Azad after Martyrdom, 1931

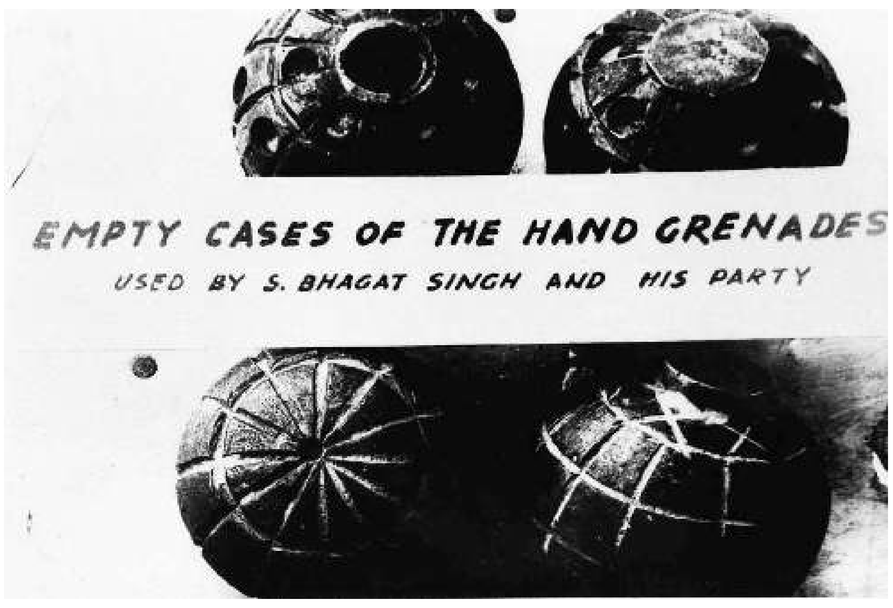

भगत सिंह और उनके सहकर्मियों द्वारा इस्तेमाल किए गए हैंड ग्रेनेड के खाली बक्से

Empty cases of Hand Grenades used by Bhagat Singh and his Colleagues

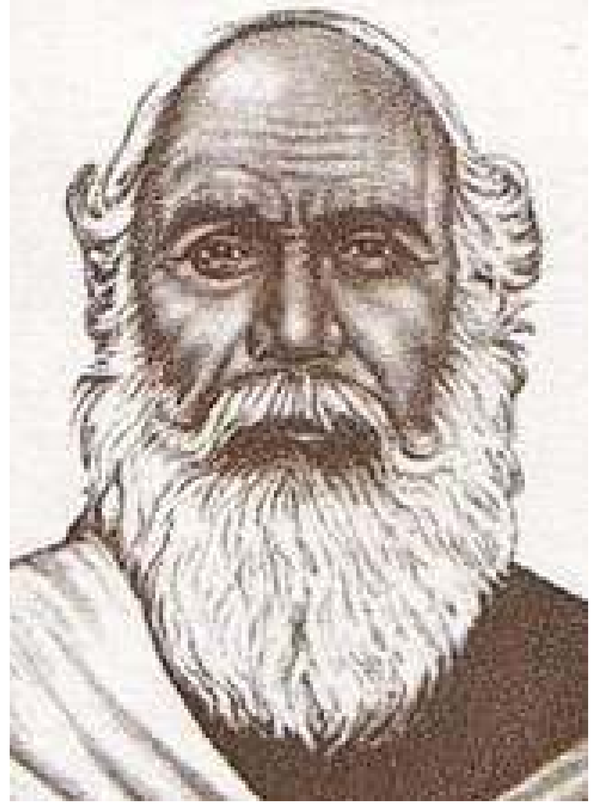

पहाड़ी गांधी बाबा कांशी राम: क्रांतिकारियों को दी गई मौत की सजा के विरोध में इन्होंने काले कपड़े पहनने की कसम खाई जिसका उन्होंने अपनी मृत्यु तक पालन किया, लोग इन्हें प्यार से सियाहपोश जरनैल कहते थे

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

दांडी यात्रा -नमक सत्याग्रह -1930

Dandi March - Namak Satyagraha -1930

गांधी जी ने नमक सत्याग्रह का संचालन किया जिसका अद्भुत प्रभाव हुआ। गांधी जी ने साबरमती में अपने आश्रम से लेकर समुद्र की ओर से गांव दांडी तक 380 कि.मी. की पैदल यात्रा शुरू की। उस समय उनकी आयु 61 वर्ष की थी। भारत, नेपाल और फिजी से चुने हुए 78 सत्याग्रहियों ने इस पदयात्रा में भाग लिया। 35 दिनों की इस यात्रा के बाद गांधी जी दांडी पहुंचे और उन्होंने समुद्र के किनारे से एक मुट्ठी नमक उठाया। यह देशव्यापी आंदोलन छेड़ने के लिए एक संकेत था।

The Salt Satyagrah launched by Gandhiji had a tremendous impact. At the age of 61 Gandhiji started 380 km foot march from his Ashram at Sabarmati to the sea-side village of Dandi.
78 selected Satyagrahis from different parts of the India, Nepal and Fiji participated in the Satyagraha. Reaching Dandi after a 35-day march Gandhiji picked up a handful of salt from the sea-bed which was the sign for a massive countrywide agitation.

भारत, नेपाल और फिजी से चुने हुए 78 सत्याग्रहियों के साथ गांधीजी ने दांडी गांव से नमक सत्याग्रह के लिए पदयात्रा शुरु की
Gandhi started a march for the Salt Satyagraha from Dandi village with 78 Satyagrahis selected from India, Nepal and Fiji

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

दांडी यात्रा -नमक सत्याग्रह -1930

Dandi March - Namak Satyagraha -1930

दांडी यात्रा में सरोजिनी नायडू भी जुड गई

Sarojini Naidu also joined in Dandi March

तितुसजि : नमक कानून भंग करने के लिए महात्मा गांधी द्वारा दांडी मार्च में भाग लेने के लिए चुने गए 78 सत्याग्रहियों में से एक

Titusji : One of the 78 Satyagrahis selected by Mahatma Gandhi to participate in the Dandi March to break the Salt Law

साबरमती आश्रम से दांडी यात्रा शुरु हुई

The Dandi journey started from Sabarmati Ashram

दांडी यात्रा के प्रति लोगों का उत्साह देखते बनता था

Dandi used to see the enthusiasm of the people towards the journey.

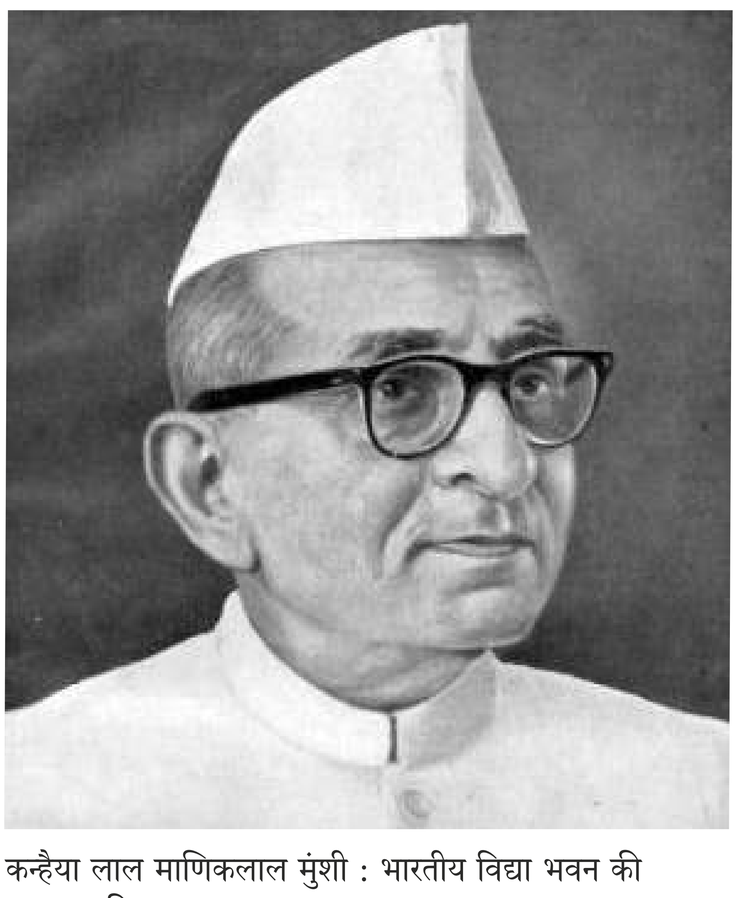

कन्हैया लाल माणिकलाल मुंशी : भारतीय विद्या भवन की स्थापना की

Kanhaiya Lal Maniklal Munshi : Founded Bharatiya Vidya Bhavan

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

दांडी यात्रा -नमक सत्याग्रह -1930

Dandi March - Namak Satyagraha -1930

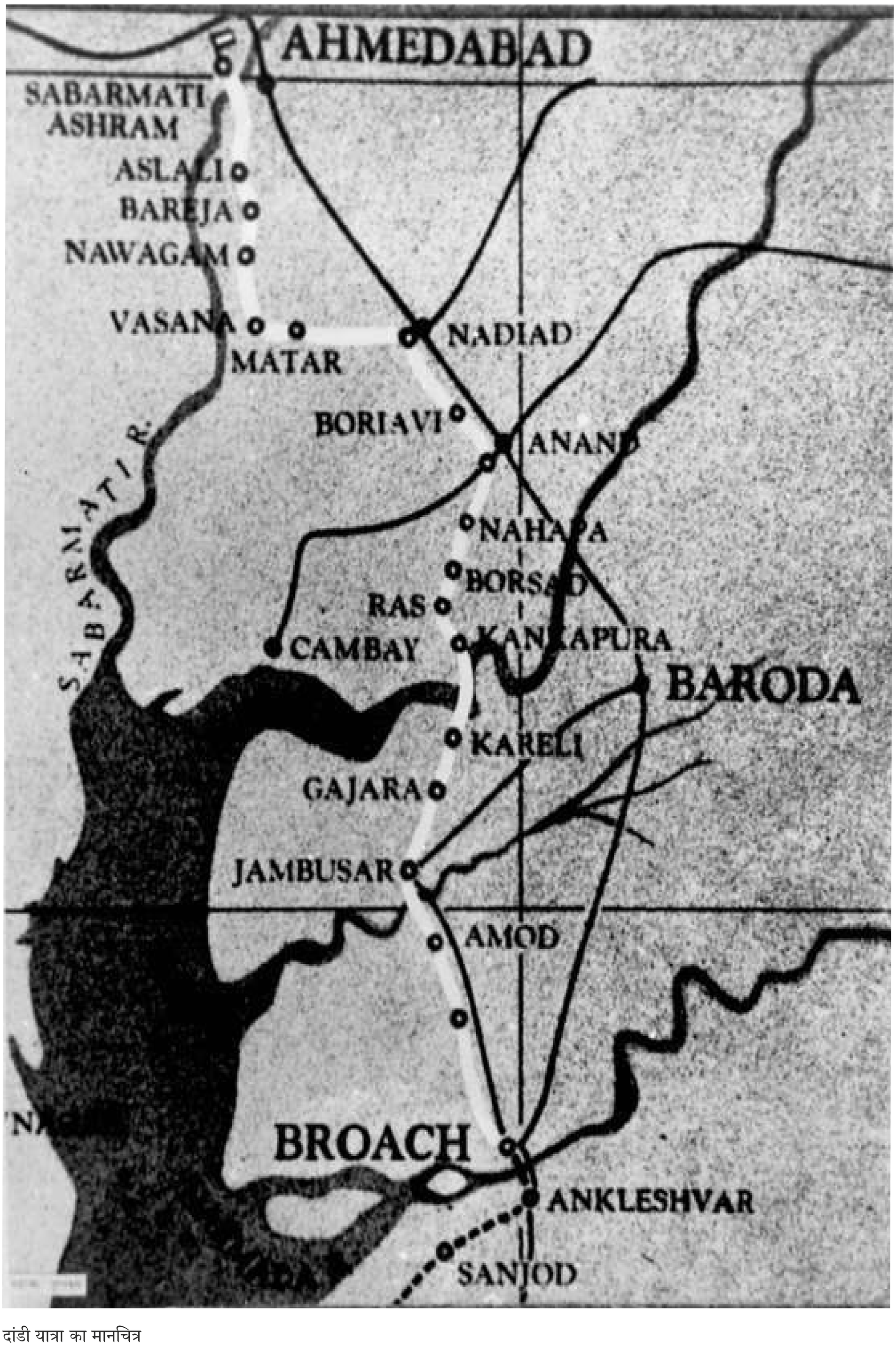

दांडी यात्रा का मानचित्र

MAP OF DANDI MARCH

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

दांडी यात्रा -नमक सत्याग्रह -1930

Dandi March - Namak Satyagraha -1930

तमिलनाडु में सत्याग्रह का नेतृत्व सी राजगोपालाचारी ने किया

C. Rajagopalachari led the Satyagraha in Tamil Nadu

CALCUTTA "VOLUNTEERS" COLLECTING SALT FROM THE EDGE OF THE SALT LAKES NEAR THAT CITY: BREAKING THE LAW THAT GIVES THE GOVERNMENT OF INDIA A TRADE MONOPOLY IN SALT.

THE HINDU, THURSDAY, MAY 1, 1930.

SATYAGRAHA IN TAMIL NAD

MR. RAJAGOPALACHARIAR SENTENCED

SIX MONTHS S. I. AND FINE

SATYAGRAHA IN MADRAS

NEED FOR STRICT NON-VIOLENCE

BOYCOTT OF FOREIGN CLOTH

ARRIVAL OF VOLUNTEERS

MR. K. SAMBAMURTI BROUGHT TO MADRAS

THE LATE MR. GOVINDASWAMI MUDALIAR

MADRAS BANKING ENQUIRY

BRUSHING

तमिलनाडु के अखबार में नमक सत्याग्रह का समाचार

Salt Satyagraha news in Tamil Nadu newspaper

THE DEFIANCE OF THE SALT LAWS: POLICE AND EXCISE OFFICERS ARRESTING FOLLOWERS OF GANDHI WHO HAD ENTERED A CANAL AT KALIKAPUR, NEAR CALCUTTA, IN AN ENDEAVOUR TO ESCAPE THE AUTHORITIES.

THE ARREST OF A SALT-MAKER AT KALIKAPUR: A GANDHI VOLUNTEER IN THE HANDS OF A POLICEMAN AFTER AN OFFICIAL RAID ON A SALT "FACTORY."

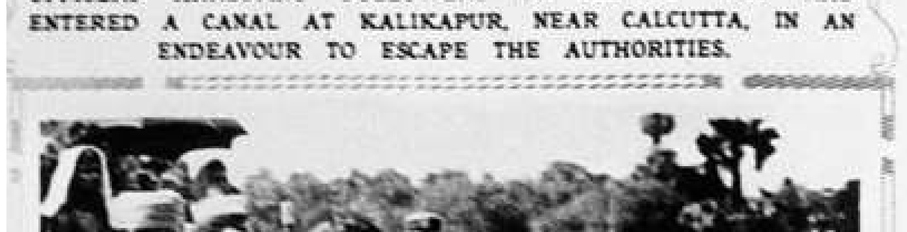

Central Bureau of Communication (CBC)- Ministry of Information and Broadcasting, Government of India

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

दांडी यात्रा -नमक सत्याग्रह -1930

Dandi March - Namak Satyagraha -1930

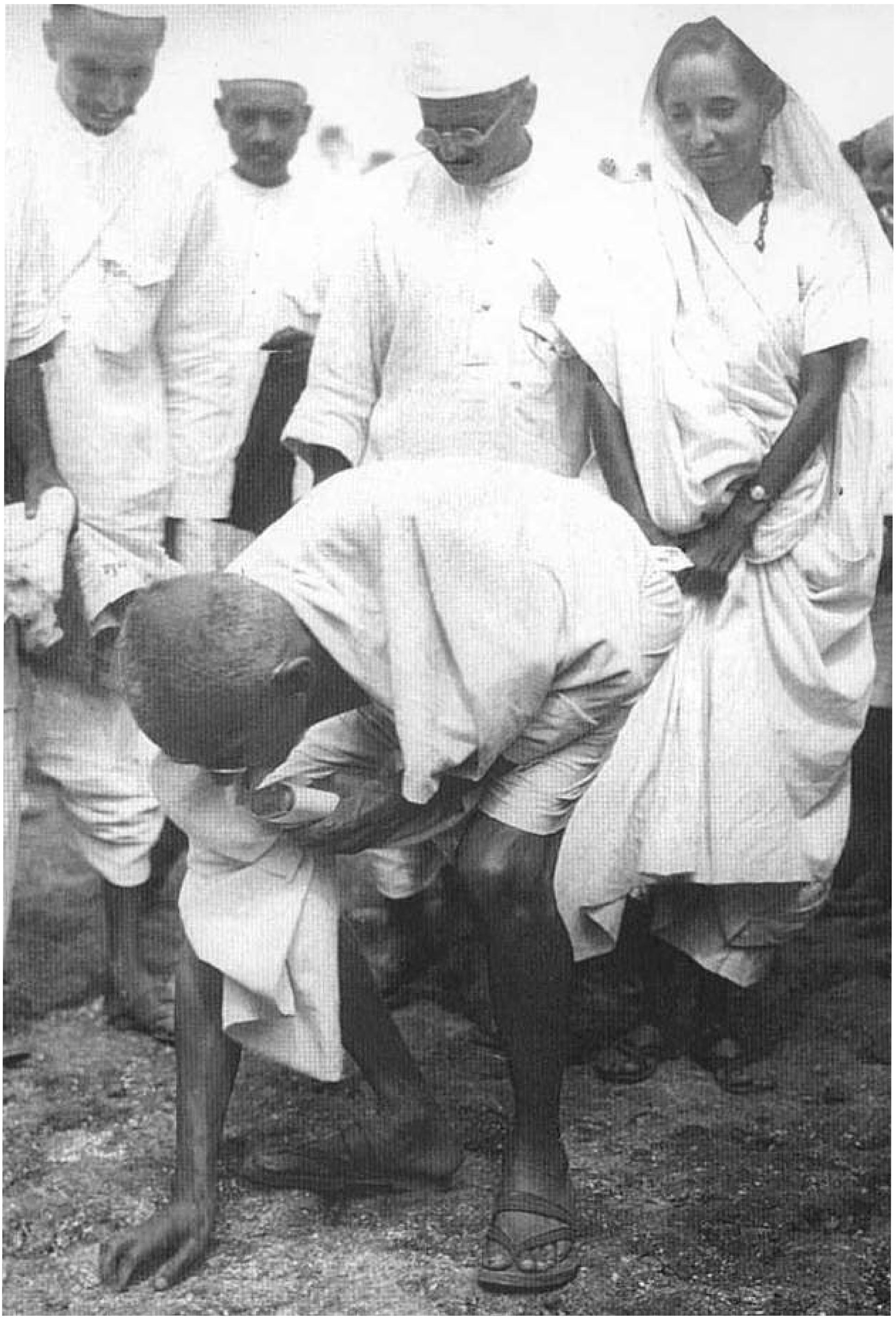

नमक उठाकर 'नमक कानून' का विरोध करते हुए गांधीजी

Gandhiji opposing the 'Salt Law' by picking up salt

Central Bureau of Communication (CBC)- Ministry of Information and Broadcasting, Government of India

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

दूसरी गोलमेज कांफ्रेंस -1931

Second Roundtable Conference -1931

दूसरी गोलमेज़ कांफ्रेंस में हो रहे विचार-विमर्शों के परिणाम संतोषजनक नहीं थे। ब्रिटिश सरकार की ओर से किसी संवैधानिक समझौते तक पहुंचने के लिए कोई वास्तविक प्रयास नहीं किए जा रहे थे। उनका उद्देश्य केवल भारतीयों के बीच एक खाई पैदा करना था। इस कांफ्रेंस का कोई परिणाम नहीं निकला। गांधी जी खाली हाथ देश लौट आए।

The deliberations at the Second Round Table Conference were not satisfactory as there was lack of sincerity of purpose on the side of the British for arriving at a constitutional settlement. Their aim was only to divide the nation. The conference ended without any result. Gandhiji returned empty handed.

गांधी जी दूसरे गोलमेज सम्मेलन में, लंदन, सितम्बर 1931

Gandhiji at the Second Round Table Conference, London, September 1931

रंगास्वामी अय्यंगर : भारत सरकार के प्रतिनिधि

Rangaswamy Iyengar : Represented Govt. of India

मदन मोहन मालवीय : दूसरी गोलमेज कांफ्रेंस में गांधीजी के सहयोगी

Madan Mohan Malaviya : Gandhi's aides in the Second Round Table Conference

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

दूसरी गोलमेज कांफ्रेस - 1931

Second Roundtable Conference - 1931

THE BOMBAY CHRO

PROBLEM OF UNTOUCHABILITY.

EFFECTIVE METHOD OF TACKLING IT

"MISSION OF MY LIFE"

SWAMI SHRADDHANAND INTERVIEWED.

A GREAT NON-CO-OPERATOR.

THE WORK OF UPLIFT.

अस्पृश्यता की समस्या समाचार पत्र कतरन

Problem of Untouchability Newspaper cutting

BOMBAY FRIDAY, SEPTEMB

POONA "DEPRESSED" CLASS LEADER'S APPEAL TO MAHATMA

Accept Rajah-Moonje Pact

DR. AMBEDKAR HAS A SMALL FOLLOWING

POONA BREAKS BARRIERS OF ORTHODOXY

Shiva Temple Thrown Open

LOKMANYA RASHTRIYA KANYA

SWARAJYA SABHA APPEAL FOR FU

पूना डिप्रेस्ड क्लास नेताओं की महात्मा से अपील

Newspaper clipping Poona Depressed classes Leaders appeal to Mahatma

BOMBAY: THURSDAY, FEBRUARY 9, 1933

Temple Entry Is Harijans' Right

MAHATMA'S REPLY TO JAGADGURU

Bills Do Not Interfere With Religious Liberty At All

"I CANNOT BE COMPARED WITH BUDDHA"

COTTON RELIEF PLAN

NEW MOVE IN U. S. SENATE

Proposed "Pool"

SINO-JAPANESE DISPUTE

BRIGHTER PROSPECTS OF AGREEMENT

Important Proposals Before League

13 ARRESTS AT LUCKNOW

Sequel To Attempt To Open Congress Office

हरिजनों का मंदिर प्रवेश- 9 फरवरी, 1933

Temple entry of Harijans' Rights Newspaper clipping- 9 February, 1933

स्वामी श्रद्धानंद : प्रसिद्ध समाज सुधारक

Swami Sharadhanand : Famous social reformer

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

दूसरी गोलमेज कांफ्रेंस - 1931

Second Roundtable Conference - 1931

डॉ. भीम राव अम्बेडकर : सामाजिक न्याय के प्रणेता

Dr. Bhim Rao Ambedkar : Proponent of social justice

INSURANCE

The Bombay Chronicle

INSURANCE

VOL. XXV NO. 40 — BOMBAY: WEDNESDAY, FEBRUARY 17, 1937 — PRICE: ONE ANNA

Your Duty At Polls To-Day:

Vote Congress & Veto Slavery

It's up to Bombay to complete the picture of Congress victories achieved in Assam, Orissa, Bihar and U. P. "The thundering cry of freedom reverberates through the whole of Hindustan. What echo does that find in your hearts? India awaits your brave response. Answer it at the polls" says Pt. Jawaharlal. The City of Bombay is on trial, says Sardar, but is confident that Congress will come out triumphant at to-day's polls

Pt. JAWAHARLAL IN BOMBAY

FOR CONGRESS CABINET MEETING

BAKHLE FOR TOKYO!

Sardar Patel

Line Up With The Congress

President's Clarion Call To Bombay Voters

Away With Reaction And Enemies Of Freedom

CONGRESS ARRANGEMENTS COMPLETE FOR POLLING

10,000 Volunteers And A Caravan Of Moving Cars Will Help Voters To Do Their Duty To Nation

ALL CITY VOTERS TO NOTE

Divide Your Votes Equally

How To Ensure Victory Of Congress

SARDAR'S CALL TO CITY VOTERS

City On Trial

बॉम्बे क्रॉनिकल (फ़रवरी -17,1937) वोट कांग्रेस और वीटो स्लेवरी

Bombay chronicle (Feb-17,1937) Vote congress & Veto Slavery

TEMPLE ENTRY SATYRAGRAHA AT NASIK

A group photograph of men, women and children, belonging to the "untouchable" class sitting at the entrance of Rama's temple which has been closed to them by the "higher" classes with the aid of the police.

Mr. Justice Madgaokar

नासिक में मंदिर प्रवेश सत्याग्रह, न्यूज पेपर कतरन

News paper cutting Temple Entry Satyragraha at Nasik

तेज बहादुर सप्रू: भारत के अछूतों के लिए अलग निर्वाचक मंडल के मुद्दे पर गांधीजी, डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर और अंग्रेजों के बीच मध्यस्थता की|

Tej Bhadur Sapru : Mediated between Gandhiji, Dr. B.R. Ambedkar and the British over the issue of separate electorates for India's Untouchables

मीराबेन: इन्होंने अपना जीवन मानव विकास और गांधी के सिद्धांतों की उन्नति के लिए समर्पित कर दिया।

Mirabehn: She devoted her life to human development and the advancement of Gandhi's principles.

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का योगदान - 1921-1945

Netaji Subhash Chandra Bose's contribution - 1921-1945

सुभाष चन्द्र बोस भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के ऐसे नायक हैं जो अब किंवदंती बन चुके हैं। आज़ाद हिन्द फौज के माध्यम से इन्होंने देश को आज़ाद करवाने का स्वप्न देखा। 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा' का इनका नारा नौजवानों को उद्वेलित कर रहा था। 'दिल्ली चलो' और 'जय हिन्द' इनके अन्य प्रमुख नारे थे। बोस ने देश की आज़ादी के लिए विदेशियों से मदद लेने में भी किसी तरह की हिचक नहीं दिखाई। एक दुखद विमान दुर्घटना में हुई इनकी मृत्यु को अभी भी देशवासी मानने को तैयार नहीं हैं।

Subhash Chandra Bose is such a hero of the Indian independence movement who has now become a legend. By forming the Azad Hind Fauj, he dreamt the independence of the country. The slogan he coined, 'You give me blood, I will give you freedom' was stirring up the youth. His other prominent slogans were 'Delhi Chalo' and 'Jai Hind'. He did not hesitate in taking help from other countries for the independence of the country. The countrymen are still not ready to accept his death which is considered to have happened in a tragic plane crash.

पिता जानकी नाथ बोस के साथ सुभाष चंद्र बोस

Subhash Chandra Bose with his father Janki Nath Bose

प्रथम सी.पी. और बिहार प्रांतीय युवा सम्मेलन में भाग लेते सुभाष चंद्र बोस, नवंबर 1929

Subhash Chandra Bose participating in the first C.P. and Bihar Provincial youth conference. (November 1929)

जुलूस में माला पहने सुभाष चंद्र बोस जिसके चलते उनकी गिरफ़्तारी हुई, 15 फरवरी, 1931

Subhash Chandra Bose being garlanded at the procession which led to his arrest on 15.02.1931

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

हरिपुरा सम्मेलन - 1938

Haripura Conference - 1938

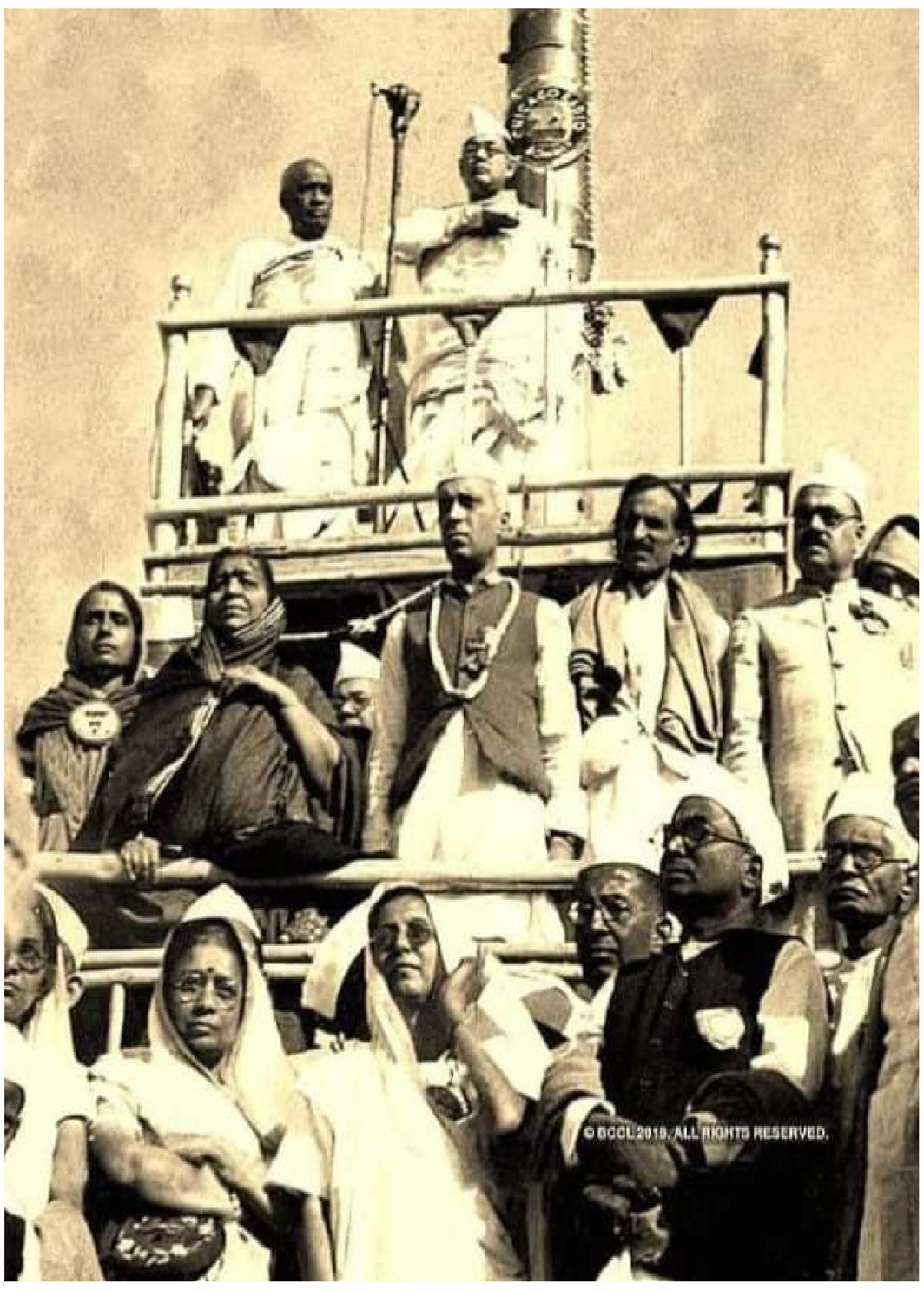
© BCCL 2019. ALL RIGHTS RESERVED.

हरिपुरा के एक ध्वजारोहण समारोह में सुभाष चंद्र बोस

Subhash Chandra Bose at a flag hoisting ceremony at Haripura

हरिपुरा सम्मेलन में गांधीजी के साथ

With Gandhiji in Haripura Conference

हरिपुरा सम्मलेन में महात्मा गाँधी के साथ नेताजी सुभाष चंद्र बोस

Netaji Subhash Chandra Bose with Mahatma Gandhi at Haripura Conference

हरिपुरा सम्मलेन में सरदार पटेल और अन्य नेताओं के साथ नेताजी सुभाष चंद्र बोस

Netaji Subhash Chandra Bose with Sardar Patel and other leaders at Haripura Conference

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना -1939

Establishment of the Forward Block -1939

मद्रास आगमन पर ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक अध्यक्ष का स्वागत करते हुए, 1939

Subhash Chandra Bose, President of All India Forward Bloc being welcomed on his arrival in Madras, 1939

फॉरवर्ड ब्लॉक का चिह्न

Forward block symbol

फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना के समय अन्य सहयोगियों के साथ नेताजी, 1939

Netaji along with other colleagues at the inception of the forward bloc, 1939

पट्टाभि सीतारमैया, जो त्रिपुरी सम्मलेन में नेताजी सुभाष चंद्र बोस के प्रतिद्वंद्वी के रूप में चुनाव में खड़े हुए थे

Pattabhi Sitaramayya, who stood in the election as a rival of Netaji Subhas Chandra Bose at the Tripuri Conference

आज़ादी का अमृत महोत्सव
#AmritMahotsav

आजाद हिन्द फौज की स्थापना - 1942

Azad Hind Fauj Establishment - 1942

मेजर जनरल ए.सी.चटर्जी, मेजर जनरल एम.ज़ेड. किदवई और कर्नल हबीबुर रहमान के साथ सुभाष चंद्र बोस

Subhash Chandra Bose with Major General A.C. Chatterji, Major General M.Z. Kidwai and col. Habibur Rehman

Central Bureau of Communication (CBC)- Ministry of Information and Broadcasting, Government of India

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

आजाद हिन्द फौज

Azad Hind Fauj

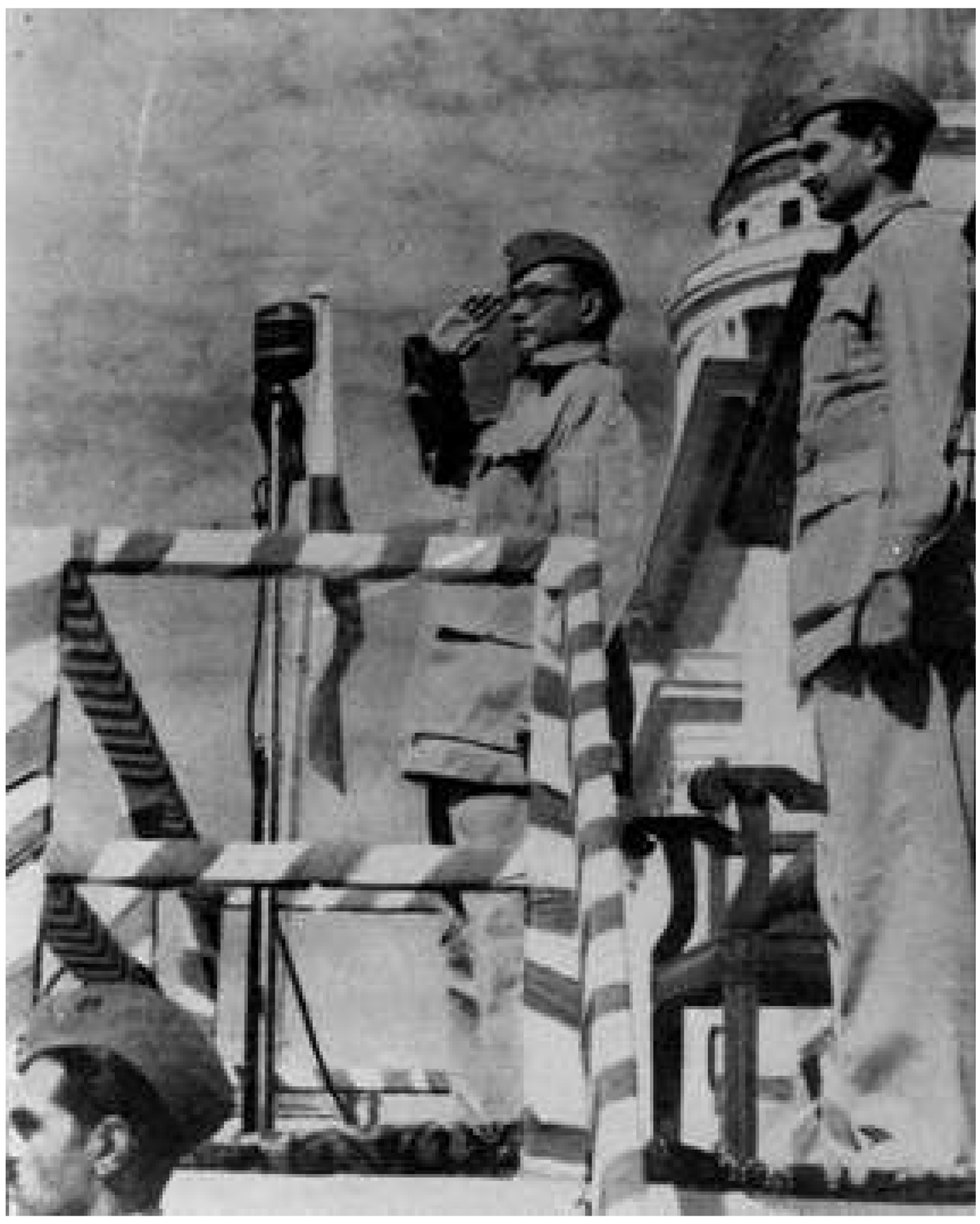

सिंगापुर में जुलाई 1943 में पहली आईएनए परेड की सलामी लेते सुभाष चंद्र बोस, नेताजी के बाई ओर हैं मेजर जनरल एम.ज़ेड.कियानी

Netaji reviewing the first parade of I.N.A. at Singapore, July 1943. Major General M.Z. Kiani is in the left of Netaji

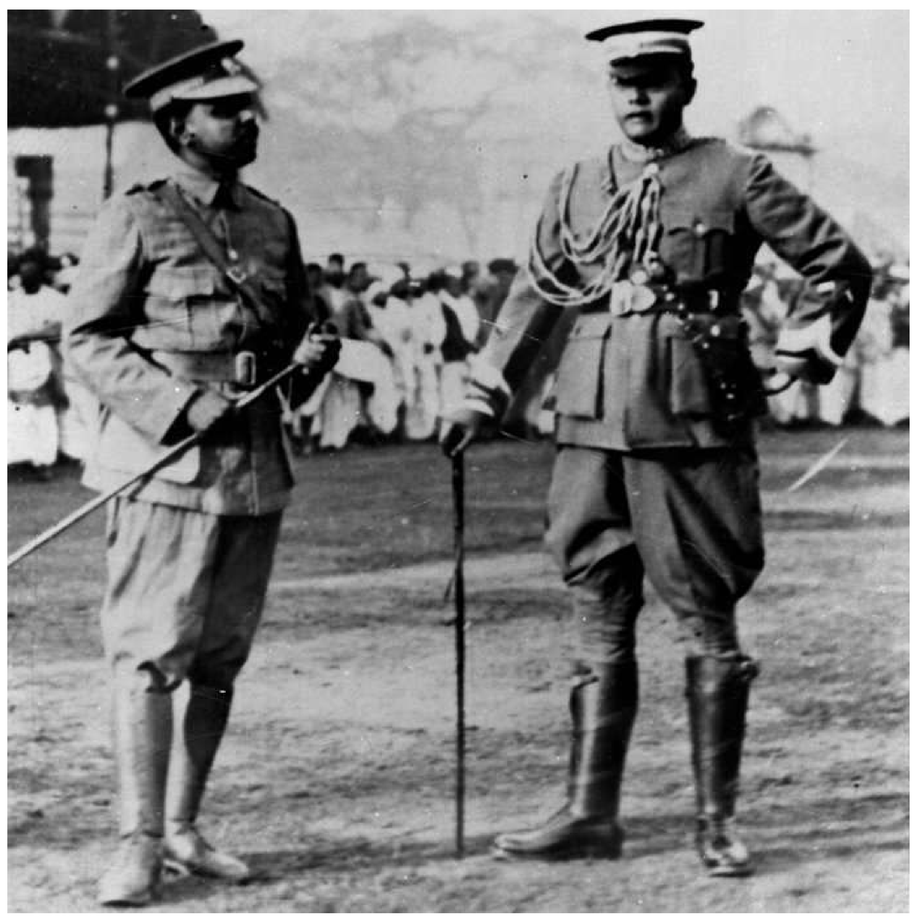

जी.सी.सी.वर्दी में जनरल ऑफिसर कमांडिंग के रूप में सुभाष चंद्र बोस

Subhash Chandra Bose as General officer commanding in G.C.C. uniform

सिंगापुर में रानी झाँसी रेजिमेंट की कमांडर कैप्टेन लक्ष्मी सहगल के साथ रेजिमेंट का निरीक्षण करते नेताजी, जुलाई 1943

Netaji inspecting the regiment with Captain Laxmi Sehgal, Commander of Rani Jhansi Regiment in Singapore, July 1943

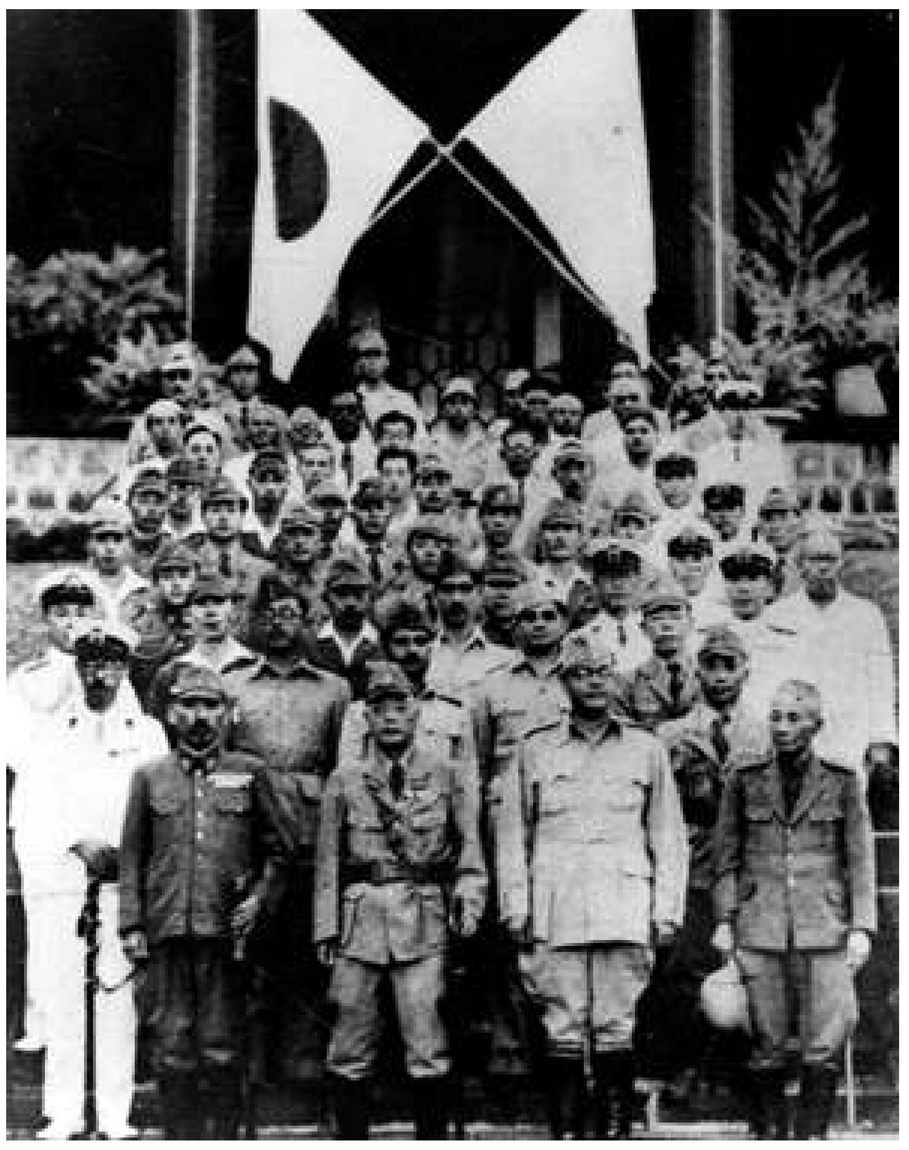

आज़ाद हिन्द फौज के सैनिकों के साथ नेताजी सुभाष चंद्र बोस

Netaji Subhash Chandra Bose with the soldiers of Azad Hind Fauj

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

आजाद हिन्द फौज

Azad Hind Fauj

आज़ाद हिंद पार्टी द्वारा आयोजित चाय पार्टी में सुभाष चंद्र बोस

Subhash Chandra Bose in a tea party hosted by Azad Hind Party

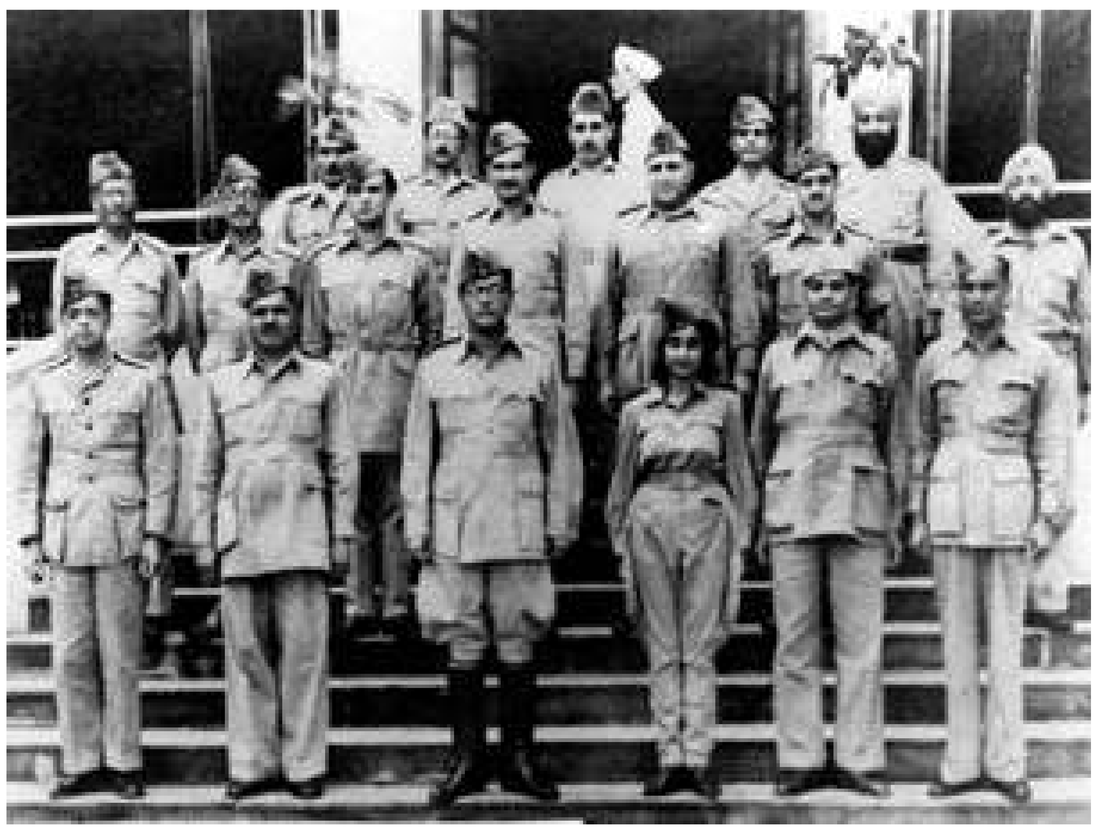

आज़ाद हिन्द फौज के कोर कमांडरों के साथ

Netaji Subhash Chandra Bose with core commanders

अखबार की कतरन

Newspaper Clipping

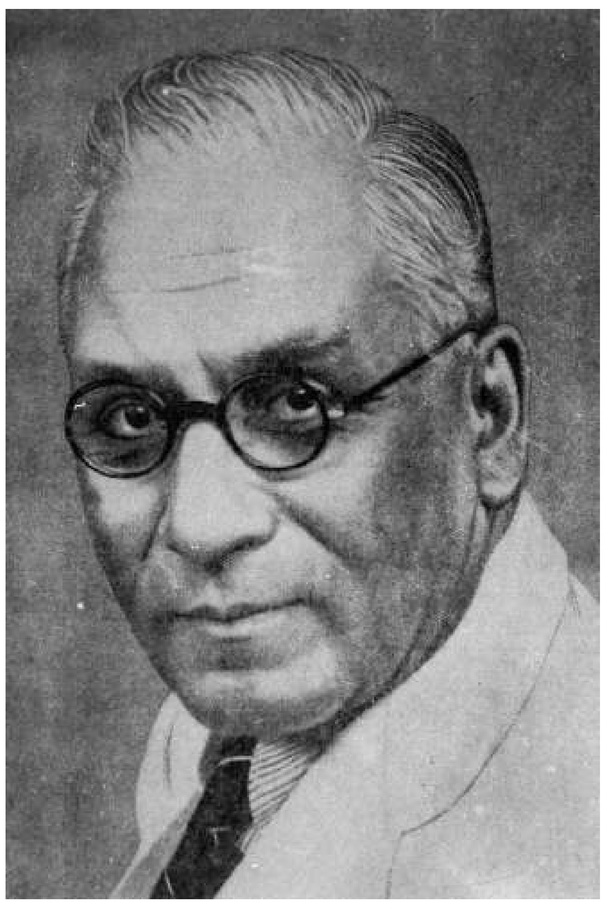

टी. बी. सप्रू : जिन्होंने आज़ाद हिन्द फौज के लिये केस लड़ा

T. B. Sapru : Who fought the case for the Azad Hind Fauj

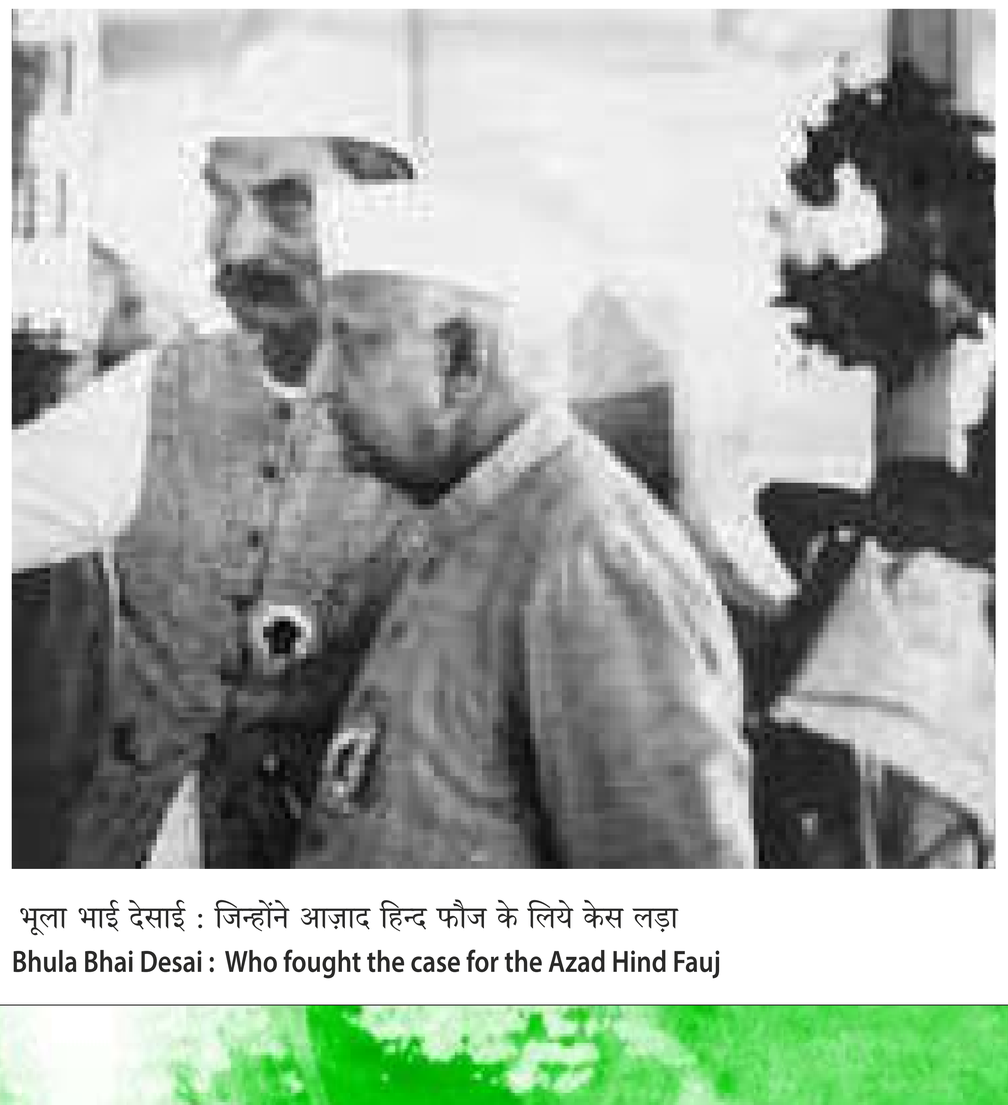

भूला भाई देसाई : जिन्होंने आज़ाद हिन्द फौज के लिये केस लड़ा

Bhula Bhai Desai : Who fought the case for the Azad Hind Fauj

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

आंदोलन की तैयारियां -1940

Preparation for the Movement -1940

शांतिनिकेतन में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के साथ महात्मा गांधी और कस्तूरबा गांधी, 1940

Mahatma Gandhi and Kasturba Gandhi with Gurudev Ravindranath Tagor at Shanti Niketan, 1940

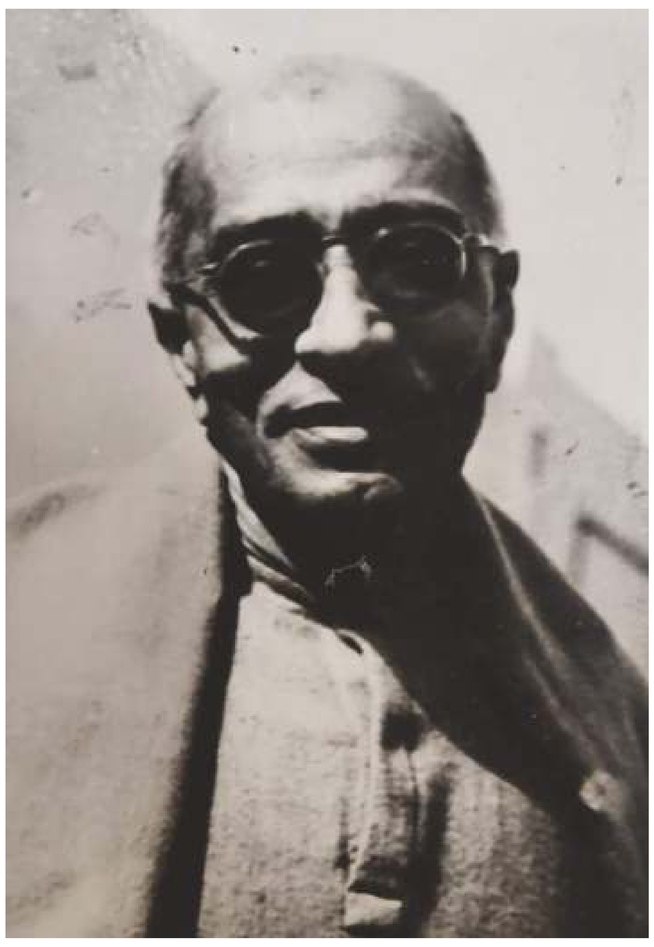

सी. राजगोपालाचारी

C. Rajagopalachari

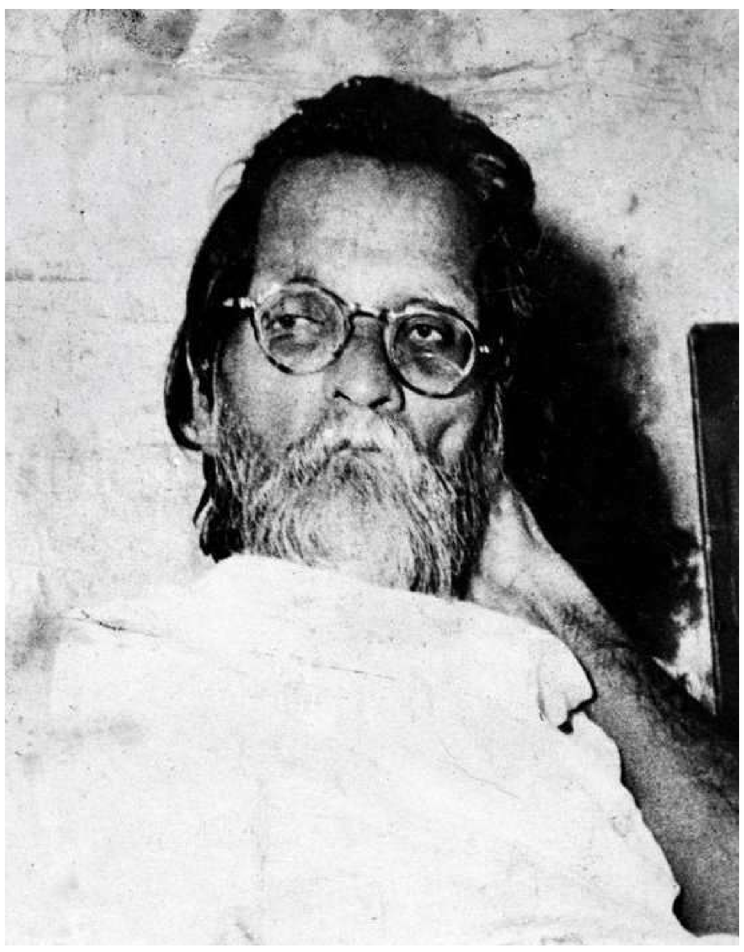

आचार्य विनोबा भावे : 1940 के सत्याग्रही

Acharya Vinobha Bhave : Satyagrahis of the 1940

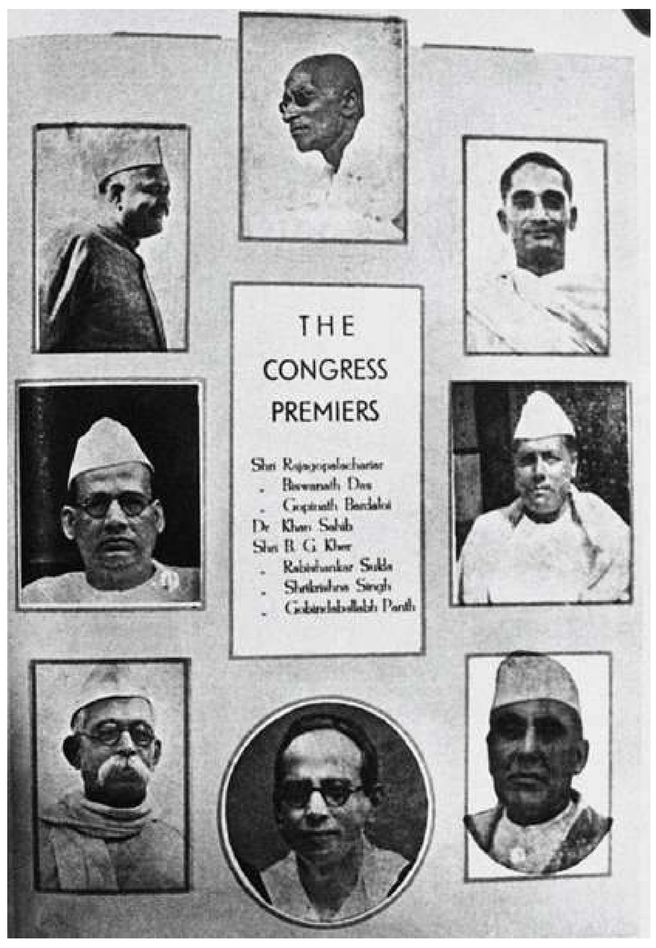

सी. राजगोपालाचारी, बिश्वनाथ दास, गोपीनाथ बारदोलई, डॉ. खान साहिब, बी.जी. खेर, रविशंकर शुक्ला , श्रीकृष्ण सिंह, गोविंदबल्लभ पंत

C. Rajagopalachari, Bishwanath Das, Gopinath Bardolai, Dr. Khan Sahib, B.G. Kher, Rabishanker Sukla, ShriKrishna Singh, Govindballabh Pant

Central Bureau of Communication (CBC)- Ministry of Information and Broadcasting, Government of India

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

भारत छोड़ो आंदोलन - 1942

Quit India Movement - 1942

8 अगस्त, 1942 को आल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई जिसमें ऐतिहासिक “भारत छोड़ो” प्रस्ताव रखा गया । सरदार पटेल ने प्रस्ताव का समर्थन किया। आल इंडिया कांग्रेस कमेटी ने ‘भारत को सत्ता हस्तांतरण’ और ‘भारत छोड़ो’ की अपनी राष्ट्रीय मांग रखी। इस मांग को एक महीना पहले वर्धा में वर्किंग कमेटी ने तैयार किया था। गांधी जी से अहिंसक संघर्ष का नेतृत्व करने का अनुरोध किया गया। उन्होंने नारा दिया ‘करो या मरो’ ।

The All India Congress Committee meeting held on 8th August 1942 placed a historic "Quit India" resolution. Sardar Patel supported the proposal. The All India Congress Committee put forth its demand for 'transfer of power to India' and asked the British to 'Quit India'. This demand was prepared a month ago by the Working Committee of the party in Wardha. Gandhiji was requested to lead a non-violent struggle. He gave the slogan 'Do or Die'.

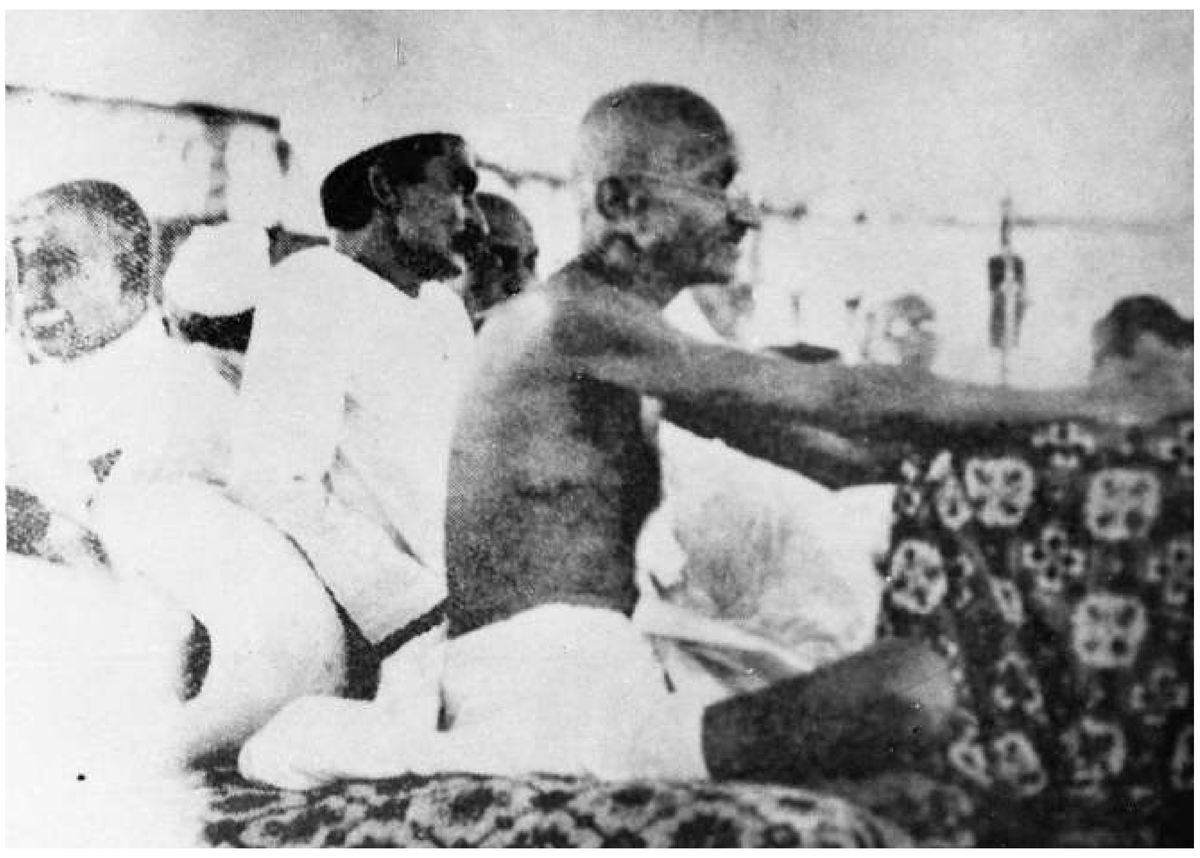

‘अंग्रेजों भारत छोड़ो’ के साथ गांधीजी ने ‘करो या मरो’ का आह्वान किया

‘British Quit India’, Gandhiji gave a call to ‘Do or Die’

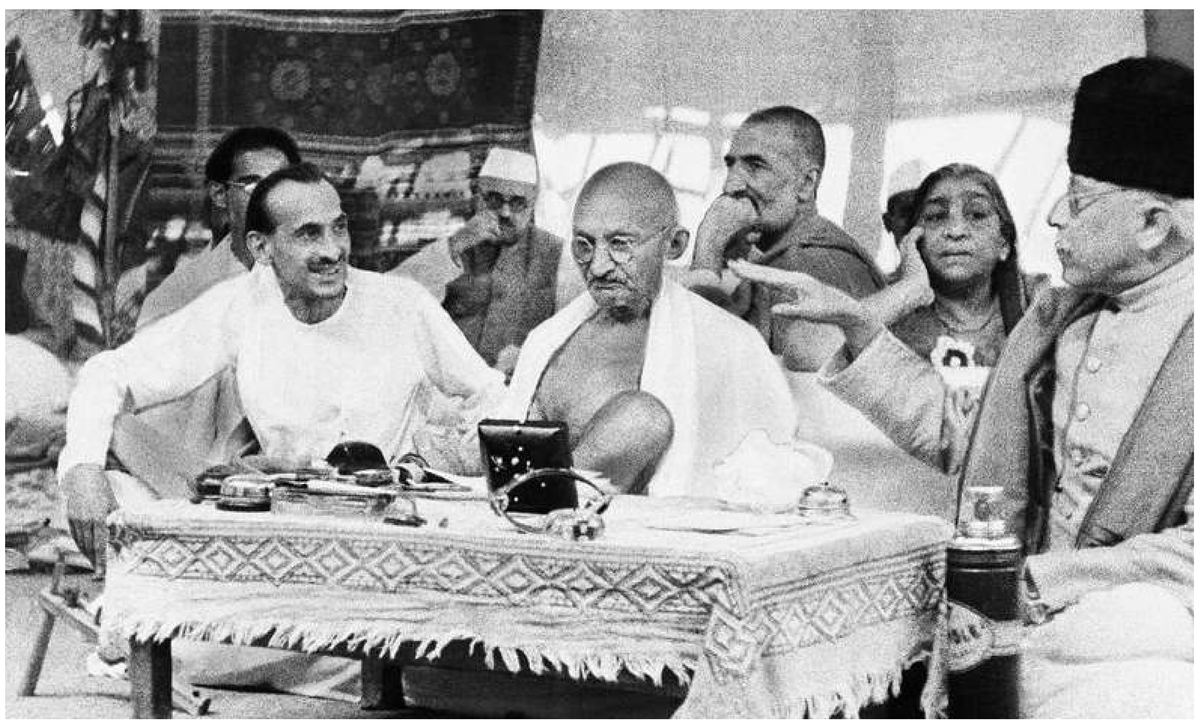

‘अंग्रेजों भारत छोड़ो’ के साथ गांधीजी ने ‘करो या मरो’ का आह्वान किया उनके साथ दिखाई दे रहे हैं आचार्य कृपलानी, मौलाना आज़ाद, सरोजिनी नायडू और खान अब्दुल गफ्फार खान

‘British Quit India’, Gandhiji gave a call to ‘Do or Die’ with Acharya Kripalani, Maulana Azad, Sarojini Naidu and Khan Abdul Ghaffar Khan are seen with them.

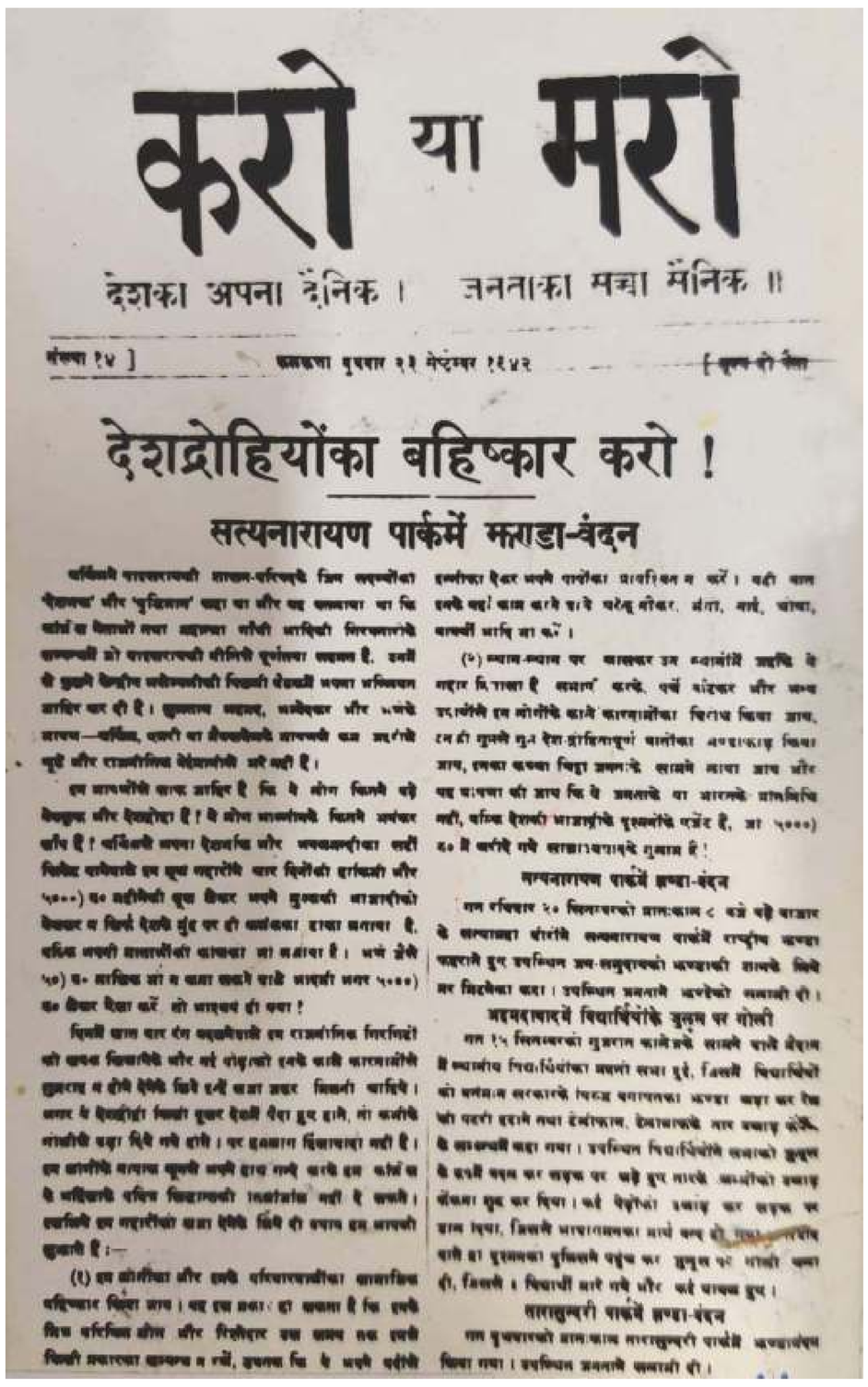

करो या मरो

देशका अपना दैनिक । जनताका सच्चा सैनिक ॥

देशद्रोहियोंका बहिष्कार करो !

सत्यनारायण पार्कमें झण्डा-वंदन

करो या मरो (समाचार पत्र की कतरन)

Karo Ya maro (Newspaper Clippings)

Central Bureau of Communication (CBC)- Ministry of Information and Broadcasting, Government of India

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

भारत छोड़ो आंदोलन - 1942

Quit India Movement - 1942

महात्मा गांधी, सरदार पटेल और पंडित नेहरू, 1942

Mahatma Gandhi, Sardar Patel and Pandit Nehru, 1942

ब्रिटिश गोलियों के शिकार बने पहले आन्दोलनकारी का अंतिम संस्कार, बंबई

Funeral of the first agitator, victim of British bullets, Bombay

बंबई में जन सैलाब, 1942

Mass in Bombay, 1942

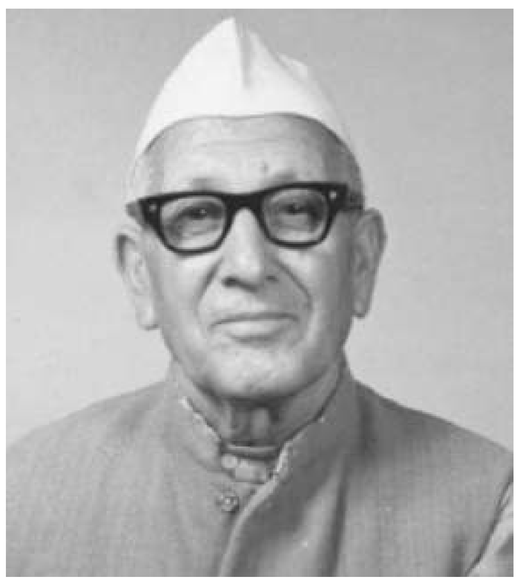

वैद्य सूरत सिंह : पझोटा आंदोलन (सिरमौर) के नायक, जो भारत छोड़ो आंदोलन, 1942 का एक हिस्सा था

Vaidya Surat Singh: Hero of the Pajota Movement (Sirmaur), which was a part of the Quit India Movement, 1942

बलवंतराय मेहता: 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में उन्हें तीन साल के कारावास की सजा सुनाई गई थी।

Balwantrai Mehta: He was sentenced for three years imprisonment in Quit India Movement of 1942.

भारत छोड़ो आंदोलन में लोग सड़कों पर उतर आये, 1942

People came out on the streets in Quit India Movement, 1942

आज़ादी का अमृत महोत्सव
#AmritMahotsav

भारत छोड़ो आंदोलन - 1942
Quit India Movement - 1942

ब्रिटिश सरकार ने बड़ी ही तत्परता से काम लिया और गांधी जी तथा अन्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। जयप्रकाश नारायण (जेल से भागने के बाद), राम मनोहर लोहिया, श्रीमती अरुणा आसफ अली जैसे कांग्रेसी समाजवादी भूमिगत हो गए। वे अपने छिपे हुए स्थानों से आंदोलन को चलाते रहे।

British Government acted fast and arrested Gandhiji and other leaders. The Congress socialists like Jaya Prakash Narayan (after his escape from Jail), Ram Manohar Lohia and Smt. Aruna Asaf Ali were among those who had gone underground. They continued to led the movement from their hideouts.

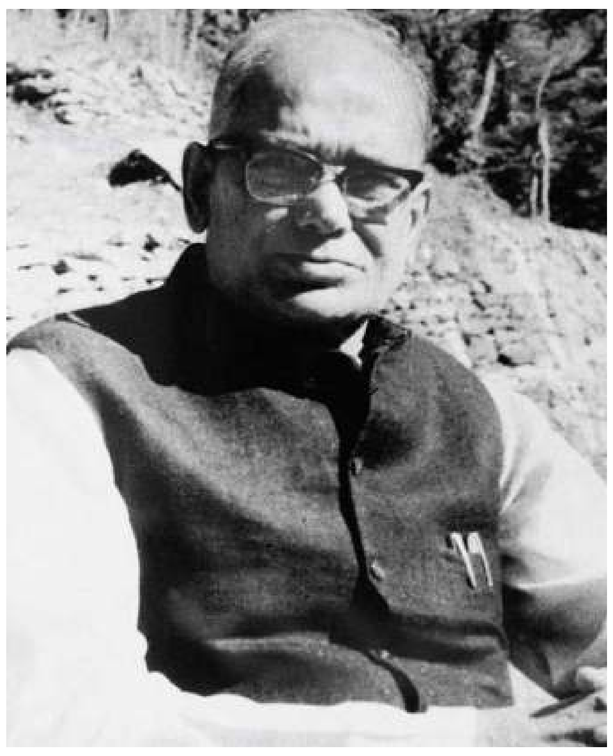

जय प्रकाश नारायण : इन्हें भारत छोड़ो आंदोलन के नायक के रूप में याद किया जाता है

Jai Prakash Narayan : He is remembered as the hero of Quit India Movement.

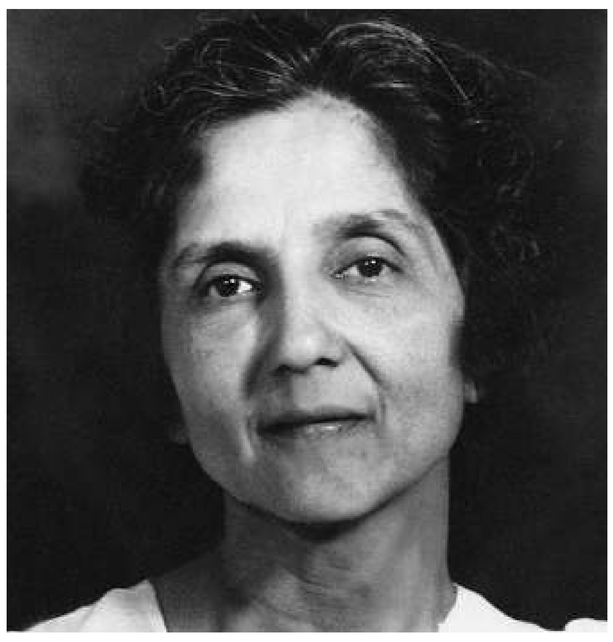

अरुणा आसफ अली : भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए याद किया जाता है

Aruna Asaf Ali : She is remembered for hoisting the Indian National Flag at Gwalia Tank Maidan in Bombay during the Quit India Movement.

राम मनोहर लोहिया : इन्होंने कांग्रेस रेडियो के साथ काम किया, जिसे 1942 तक बम्बई के विभिन्न स्थानों से गुप्त रूप से प्रसारित किया गया था

Ram Manohar Lohia: He worked with Congress Radio, which was broadcast secretly from various places in Bombay till 1942

डॉ. उषा मेहता : भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए याद किया जाता है

Dr. Usha Mehta : She is remembered for hoisting the Indian National Flag at Gwalia Tank Maidan in Bombay during the Quit India Movement.

सुचेता कृपलानी : भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान सबसे आगे रहीं

Sucheta Kriplani : She was at the forefront during the Quit India Movement

भाग मल सौथा : 'हिमालयी रियासती प्रजा मंडल' के संस्थापक सदस्य, उन्होंने हिमालयी राज्यों में स्वतंत्रता आंदोलन और विलय आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया

Bhag Mal Sautha : Founder Member of 'Himalayan Riyasti Praja Mandal', he actively participated in the freedom movement and merger movement in the Himalayan States

आज़ादी का अमृत महोत्सव
#AmritMahotsav

भारत छोड़ो आंदोलन - 1942

Quit India Movement - 1942

भारत छोड़ो आंदोलन में तारा रानी श्रीवास्तव ने अपने पति के साथ सीवान में एक जुलूस का नेतृत्व किया।

In Quit India Movement, Tara Rani Srivastava along with her husband led a procession in Siwan

दीन दयाल उपाध्याय : एकात्म मानववाद की अवधारणा के सिद्धांतकार

Deen Dayal Upadhyay: Theorist of the concept of Integral Humanism

मातंगिनी हाजरा : एक भारतीय क्रांतिकारी, जिन्होंने 29 सितंबर 1942 को तमलुक पुलिस स्टेशन के सामने ब्रिटिश भारतीय पुलिस द्वारा गोली मारकर हत्या करने तक भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था।

Matangini Hazra was an Indian revolutionary who participated in the Indian independence movement until she was shot dead by the British Indian police in front of the Tamluk Police Station on 29 Sept. 1942.

प्रभाती गिरी : ओडिशा की प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी

Parbati Giri prominent freedom fighters of Odisha

लक्ष्मण नायक ने मैथिली पुलिस स्टेशन के सामने 21 अगस्त 1942 को एक शांतिपूर्वक प्रदर्शन का नेतृत्व किया।

Laxman Nayak led a peaceful demonstration on 21 August 1942 in front of Maithili Police Station.

शिमला सम्मेलन - 1945

Shimla Conference - 1945

वायसराय लार्ड वावेल द्वारा बुलाई गई शिमला बैठक जिन्ना की कट्टरता की वजह से असफल हो गई थी। ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने तीन सदस्यीय कैबिनेट मिशन भेजने का फैसला किया। ए.वी. अलैक्जेंडर, लार्ड लारेंस और सर स्टाफोर्ड क्रिप्स बातचीत के लिए आए। ब्रिटिश सरकार की ओर से अधिकारिक तौर पर सत्ता परिवर्तन के फैसले की घोषणा भी की गई।

The Simla Conference, called by Viceroy Lord Wavell had failed because of Jinnah's intransigence. British Prime Minister Attlee now decided to send a cabinet Mission consisting of Sir Stafford Cripps, A.V. Alexander and Lord Pethick Lawrence to negotiate a settlement. There came a categorical declaration by the British Government of its decision to transfer power also.

शिमला सम्मेलन 1945 के दौरान लोगों के साथ गांधीजी
Gandhiji with people during Shimla Conference 1945

The Sunday
Amrita Bazar Patrika

SIMLA CONFERENCE FAILS

LEAGUE OBSTINACY SUCCEEDS
WIDESPREAD REGRET
Hopes Of Forming New Govt. Recede To Background
VICEROY TO MAKE STATEMENT TO-DAY
Wavell's Personal Appeal To Gandhiji And Azad To Continue Co-Operation

LIST PREPARED BY VICEROY

De Valera Preparing Statement

FRESH ALLIED LANDING IN BORNEO
AUSTRALIANS FORGE ON
All-out Progress: Kiamnis 21 Miles North Of Beaufort Entered
FURTHER GAINS IN BALIK PAPAN

LEOPOLD TO ABDICATE

RECOVERY OF MANCHURIA IMMINENT?

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

शिमला सम्मेलन - 1945

Shimla Conference - 1945

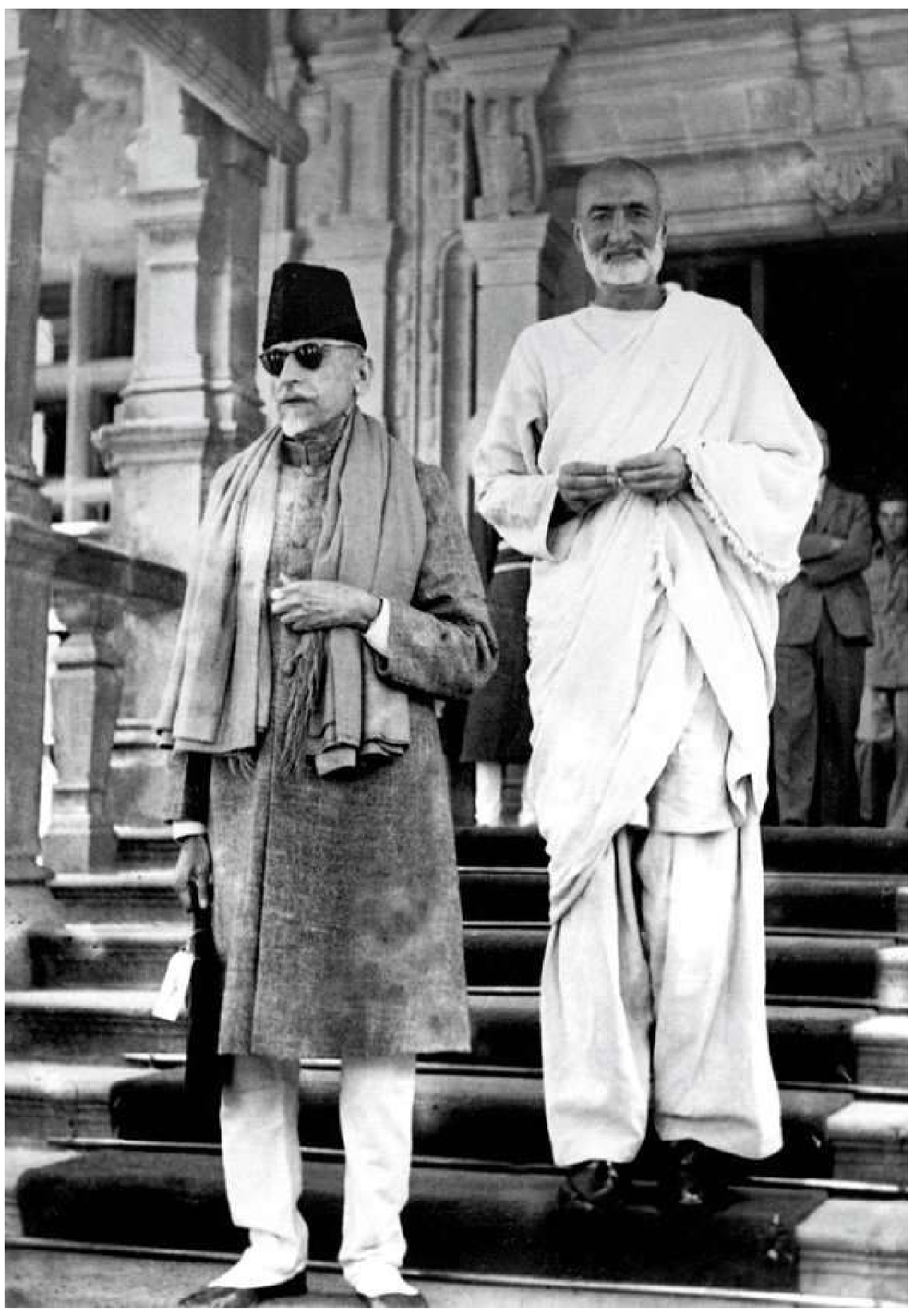

शिमला में मौलाना अबुल आजाद और खान अब्दुल गफ्फार खान

Moulana Abul Azad and Khan Abdul Gaffar Khan at Shimla

आगा खान प्लेस जहाँ गांधी जी को अगस्त 1942 से मई 1944 तक बंदी बना कर रखा गया था

Aga Khan Place where Gandhiji was imprisoned from August 1942 to May 1944

Amrita Bazar Patrika

SATURDAY, JUNE 16, 1945

THEY WALK OUT OF THE PRISON

MOULANA AZAD RELEASED

Nehru, Patel, Deo, Kripa- lani & Shukla Also Set Free

Maulana Azad | Pt. Jawaharlal Nehru | Sj. Sankar Rao Deo | Sj. J. B. Kripalani | Sj. Rajendra Prasad | Sardar Vallabhai Pa

मौलाना आजाद, पंडित जवाहर लाल नेहरू, शंकर राव देव, राजेंद्र प्रसाद और सरदार बल्लभभाई पटेल जेल से बाहर निकलते हुए (अमृत बाजार पत्रिका की दिनांक 15.6.1945 की हेड लाइन)

Maulana Azad, Pandit Jawahar Lal Nehru, Shankar Rao Deo, Rajendra Prasad and Sardar Vallabhbhai Patel leaving the jail (Headline of Amrit Bazar Patrika dated 15.6.1945)

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

कैबिनेट मिशन योजना -1946

Cabinet Mission Plan -1946

कैबिनेट मिशन योजना के अंतर्गत अंतरिम सरकार का स्वरूप सामने आया जिसमें जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल और अन्य नेता शामिल थे

An Interim Government consisting of Jawaharlal Nehru, Sardar Patel and others came into existence as part of the Cabinet Mission Plan.

1946 में आईएनसी-सरकार वार्ता के एक सत्र के दौरान लॉर्ड वावेल के साथ पंडित जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

Pandit Jawaharlal Nehru with Lord Wavell, Sardar Vallabhbhai Patel and Dr. Rajendra Prasad during one of the sessions of INC-Government talks in1946

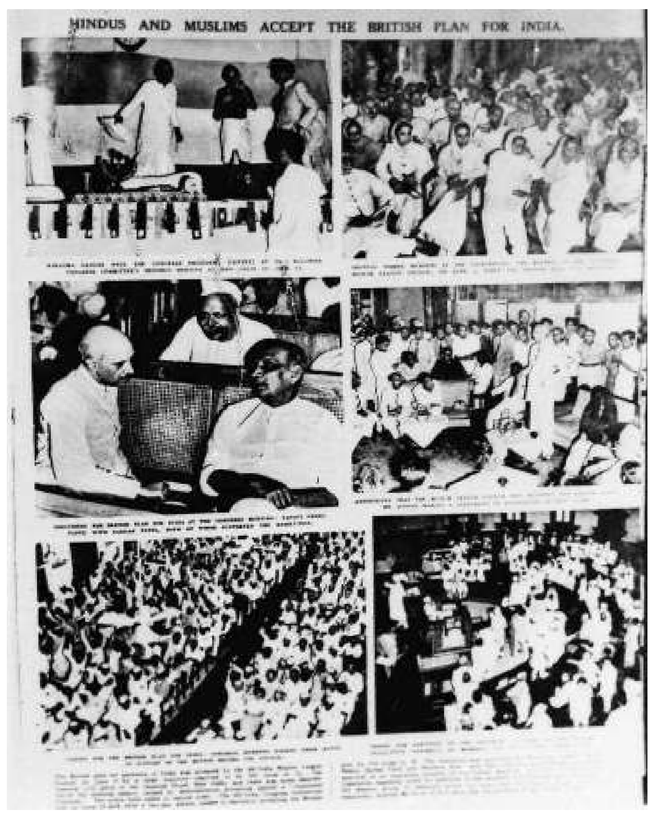

भारत के लिए ब्रिटिश योजना को हिन्दू और मुसलमान स्वीकार करते हैं (क्लिपिंग)

Hindu and Muslim accept the British plan for India (Clipping)

गांधीजी कैबिनेट मिशन के सदस्य पैथिक लॉरेंस के साथ

Gandhiji with Pathic Lawrence Member of Cabinet Mission

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

पहली अंतरिम सरकार -1946

First Interim Government -1946

ब्रिटिश कैबिनेट की तीन सदस्य समिति - लार्ड पैथिक लारेंस, सर स्टेफर्ड क्रिप्स तथा ए.वी. अलेक्जेंडर के साथ सरदार पटेल, मौलाना आजाद, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और जे. बी. कृपलानी

The three member committee of the British Cabinet - Lord Pethick Lawrence, Sir Stafford Cripps and A.V. Alexander was accompanied with Sardar Patel, Maulana Azad, Dr. Rajendra Prasad and J. B. Kripalani

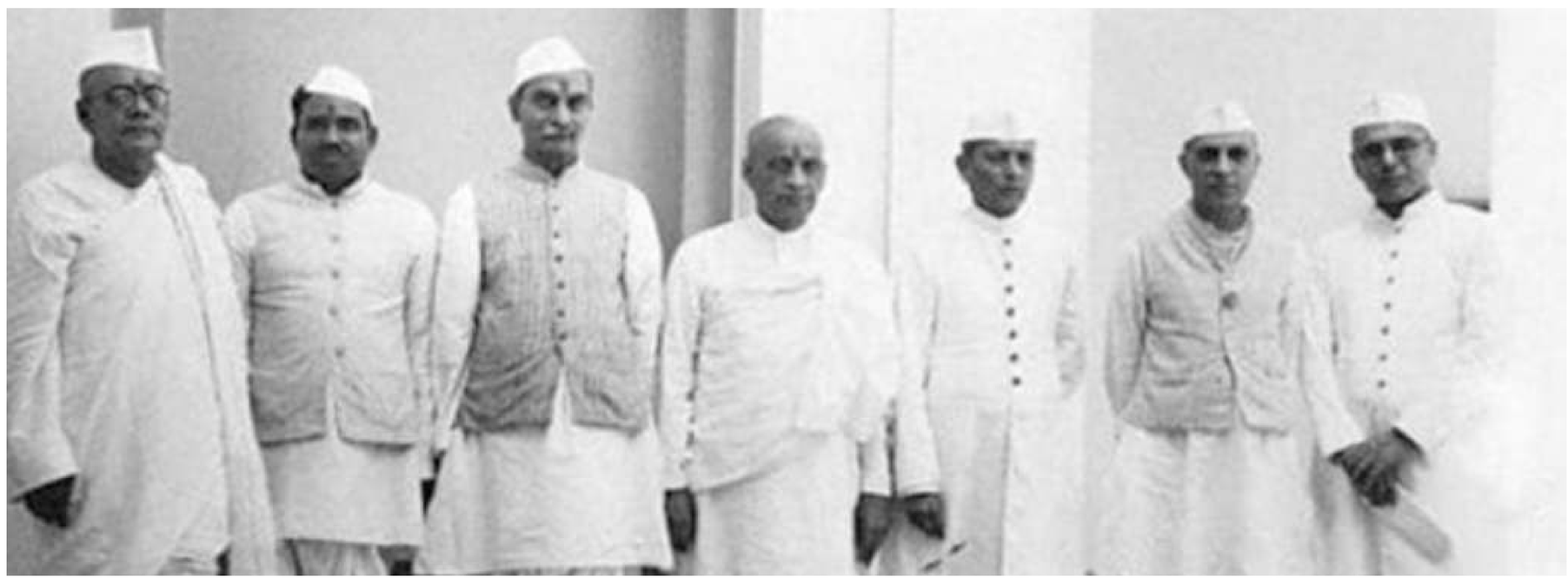

1946 में प्रथम अंतरिम सरकार
First Interim Government in 1946

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

माउंटबेटन योजना - 1947

Mountbatten Plan - 1947

ब्रिटिश सरकार ने जून, 1948 में सत्ता परिवर्तन की तारीख निश्चित की हुई थी। 3 जून की योजना में लार्ड माउंट बेटन ने पाकिस्तान बनने की संभावनाओं पर जोर दिया। इसमें न केवल भारत बल्कि पंजाब और बंगाल विभाजन की बात कही गई। उत्तर-पश्चिम सीमा-प्रांत में जनमत संग्रह होने वाला था। सत्ता परिवर्तन की तिथि 15 अगस्त, 1947 कर दी गई। भारत को राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

The British Government had fixed the deadline of June 1948 for transfer of power. Governor General, Lord Mountbatten insisted the inevitability of forming Pakistan in his plan of action for June 3rd. It envisaged partitioning not only of India, but also Punjab and Bengal. A public referendum was also planned in NWPP. Finally transfer of power was advanced to 15th August 1947.

India regained her political independence.

भारत की विभाजन योजना को स्वीकार करने के लिए बैठक आयोजित की गई

Meeting held to accept the Partition Plan of India

लॉर्ड माउंटबेटन और गांधीजी

Lord Mountbatten and Gandhi

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

भारत का विभाजन - 1947

Partition of India - 1947

कैबिनेट मिशन और भारतीय नेताओं के बीच बात चीत से यह स्पष्ट हो गया कि सांप्रदायिकता के जो जहरीले बीज ब्रिटेन ने बोए थे, वे अंकुरित होकर पाकिस्तान का रूप धारण करने लगे थे। मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की मांग का समर्थन कलकत्ता में सीधी कार्यवाही से हुआ। हिंसात्मक कार्यवाही में खून की नदियाँ बह गईं। अन्य जगहों पर भी हिंसा भड़क उठी। पंजाब और बंगाल में तो इस हिंसा का भयंकर तांडव नृत्य हुआ।

It became clear from the talks between the Cabinet Mission and the Indian leaders that the poisonous seeds of communalism that Britain had sown had sprouted would stop at nothing short of Pakistan. The demand for Pakistan by Muslim League was backed up by the unpleasant activities in Calcutta. This resulted in bloodshed. Violence spread to other parts of the country too. Worst riots took place in Bengal and Punjab.

मई 1947 में लॉर्ड माउंट बैटन के दौरे के दौरान दंगा प्रभावित इलाके कहुटा (रावलपिंडी) की तस्वीर

The Photograph of the riot affected locality Kahuta (Rawal Pinidi) taken during Lord Mount Batten's tour to the place in May 1947

1946 के दंगों के बाद भवानीपोर (कलकत्ता) की सड़कों पर शव पड़े होने के कारण जीवन अस्त-व्यस्त हो गया

Life goes on as bodies lie on the streets of Bhowanipore (Calcutta) after the 1946 riots

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

भारत का विभाजन - 1947

Partition of India - 1947

बंगाल के दंगा प्रभावित क्षेत्र नोआखली में गांधीजी -1946

Gandhiji in Noakhali, the riot affected area of Bengal - 1946

राष्ट्रवाद सांप्रदायिक दंगों की दहलीज पर

On the threshold of Nationhood Communal rioting

मौलाना आज़ाद, कांग्रेस अध्यक्ष लाहौर आए

Moulana Azad, President Congress came to Lahore

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

भारत का विभाजन - 1947

Partition of India - 1947

भारत विभाजन विश्व की सबसे बड़ी त्रासदियों में से एक है जिसमें लाखों की संख्या में लोगों को अपना घर छोड़ना पड़ा, ऐसा ही दिल्ली रेलवे स्टेशन का एक दुःखद दृश्य, 1947

Partition of India is one of the world's biggest tragedies in which Lakhs of people had to leave their homes, a sad view of Delhi Railway Station, 1947

THE ILLUSTRATED LONDON NEWS.

SATURDAY, OCTOBER 4, 1947

H.22

"A BULGING, WRITHING TARGET": TWO PICTURES OF A PAKISTAN-BOUND TRAIN, PACKED AND SWARMING WITH TERRIFIED MUSLIM REFUGEES, WHICH EXPLAIN THE HIGH CASUALTIES OF RECENT TRAIN MASSACRES IN BOTH DOMINIONS.

Central Bureau of Communication (CBC)- Ministry of Information and Broadcasting, Government of India

सत्यमेव जयते

आज़ादी का
अमृत महोत्सव
#AmritMahotsav

आज़ादी की भोर ...

The dawn of freedom ...

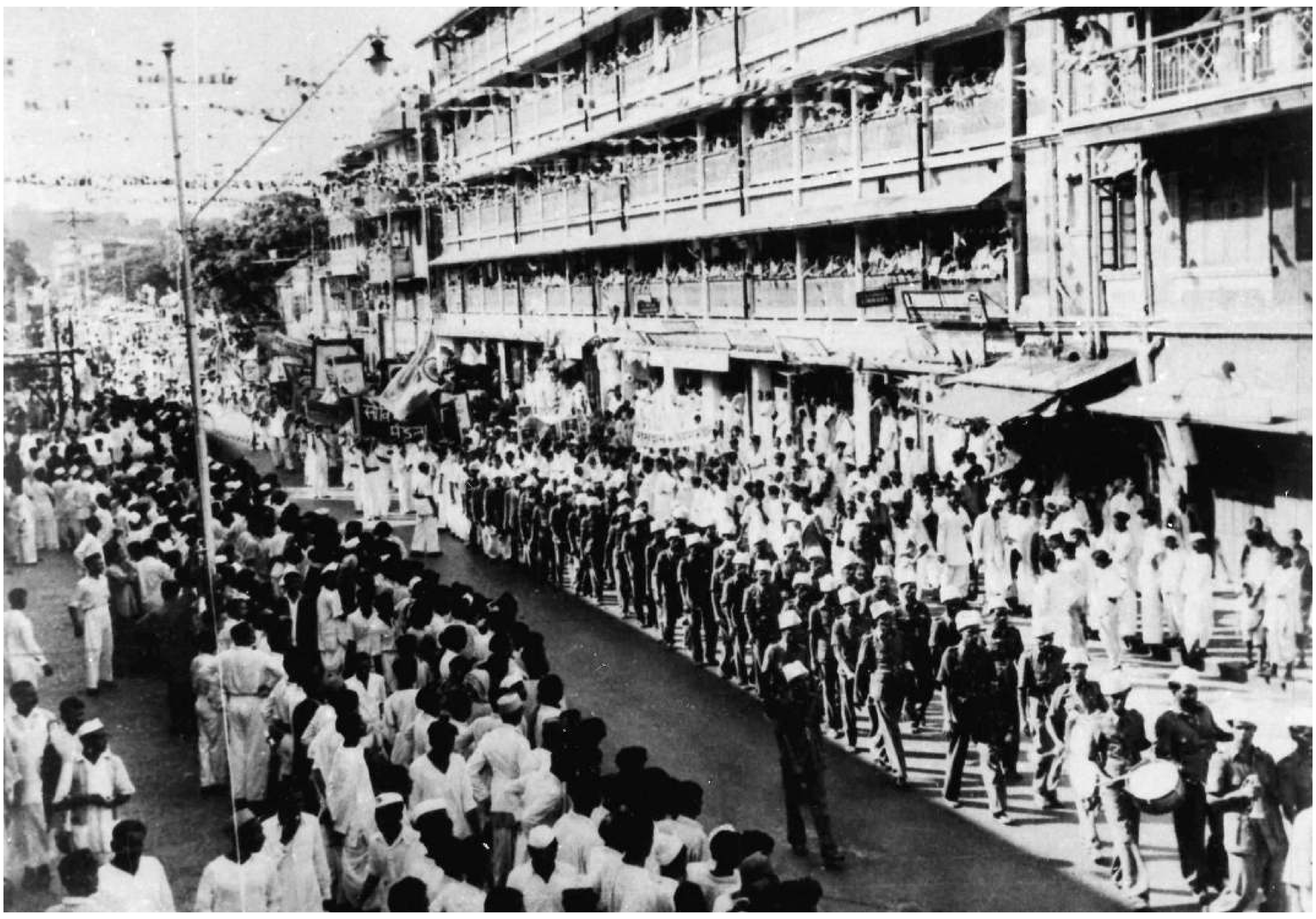

आजादी के बाद भारत छोड़कर जा रहे विदेशी सैनिक
Foreign troops leaving India after Independence

स्वतंत्रता दिवस 1947 की जयंती
Jubilation of Independence Day 1947

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

आज़ादी की भोर ...

The dawn of freedom ...

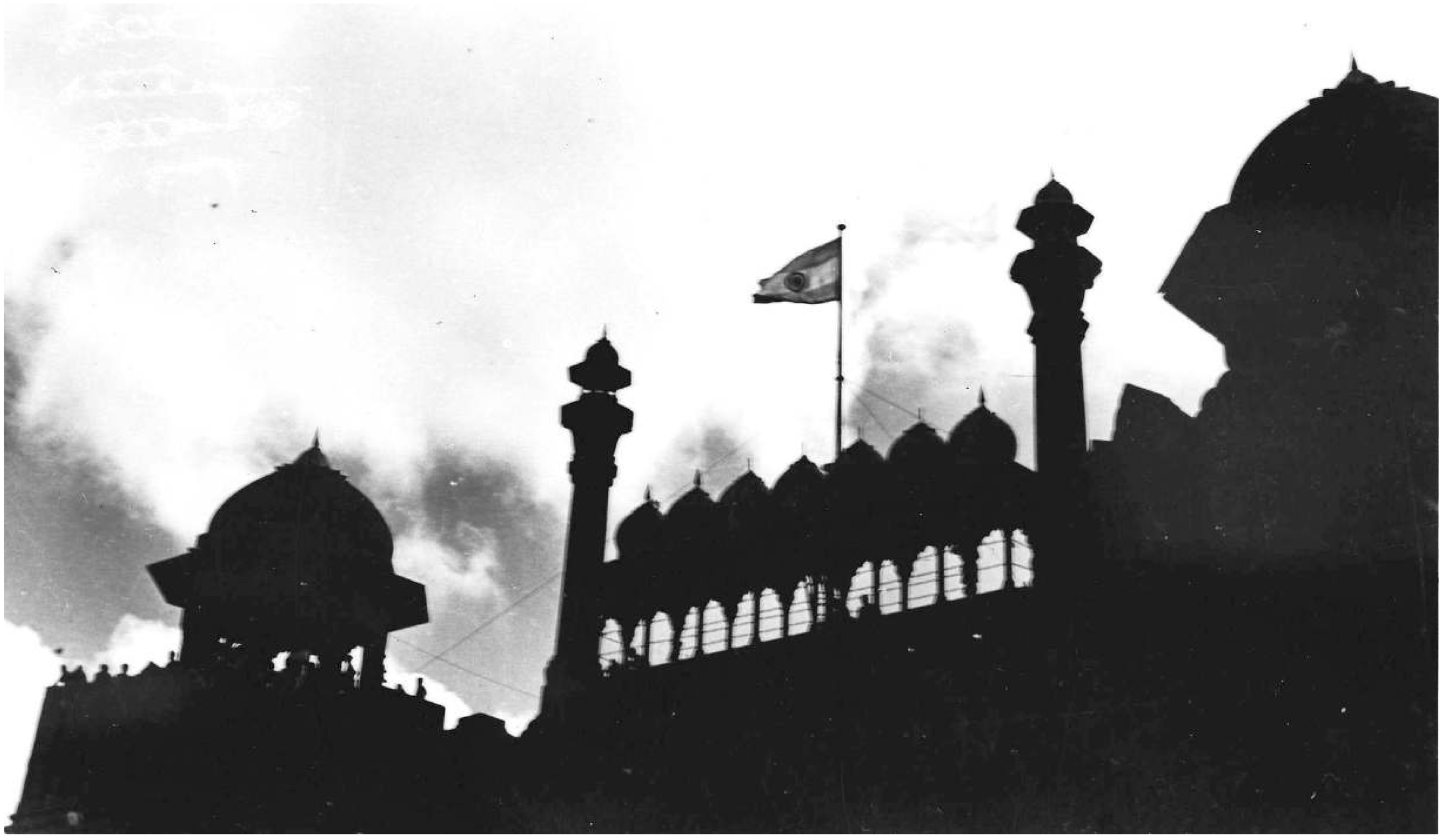

लाल किले पर शान से लहराता तिरंगा
The tricolor fluttering gracefully on the Red Fort

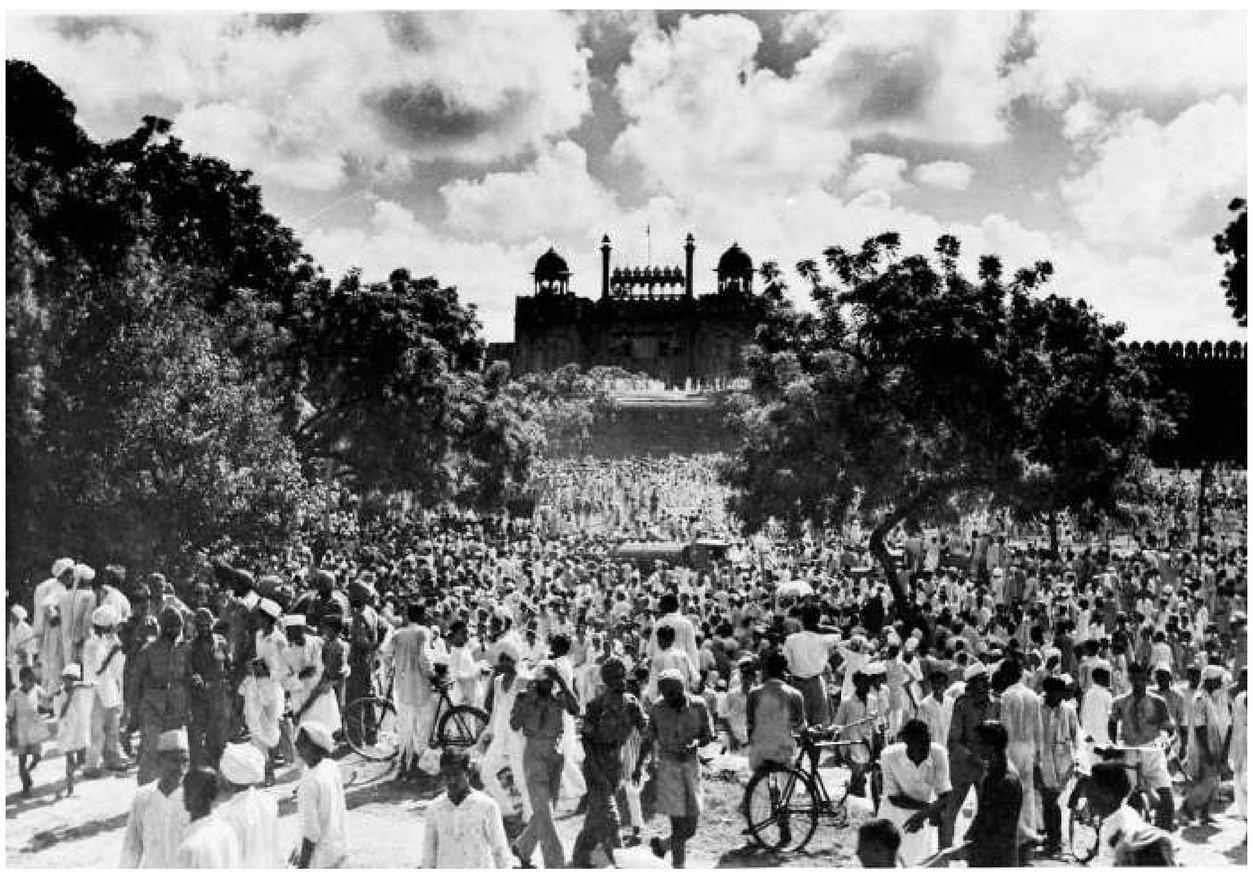

लाल किले पर स्वतंत्रता समारोह, 1947
Independence Celebrations at Red Fort, 1947

रोशनी मे नहाया गेटवे ऑफ़ इंडिया, बम्बई
Floodlit Gateway of India, Bombay

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

सरदार पटेल : भारत के एकीकरण के सूत्रधार

Sardar Patel : Architect of Unification of India

15 अगस्त 1947 को देश आजाद जरूर हो गया था, लेकिन अभी भी कुछ रियासतें अपनी जिद पर अड़ी हुई थी कि वे भारत का हिस्सा नहीं हैं| ऐसे में लौह पुरुष के नाम से विख्यात सरदार वल्लभभाई पटेल ने अपनी सूझ-बूझ, दूरदर्शिता और कूटनीति से देश के पूर्ण एकीकरण को अंजाम दिया| हैदराबाद, जूनागढ़ और कश्मीर रियासतें भारत गणराज्य का अभिन्न अंग बन गई| स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों और करोड़ों देशवासियों का स्वप्न भारत देश के रूप में साकार हुआ था|

The country became independent on 15th August 1947, but still some princely states were adamant on their insistence that they were not part of India. At this time Sardar Vallabhbhai Patel, known as Iron Man, carried out complete integration of the country with his wisdom, foresight and diplomacy. The princely states of Hyderabad, Junagadh and Kashmir became an integral part of the Republic of India. The dream of the martyrs of the freedom struggle and crores of countrymen was realized in the form of India.

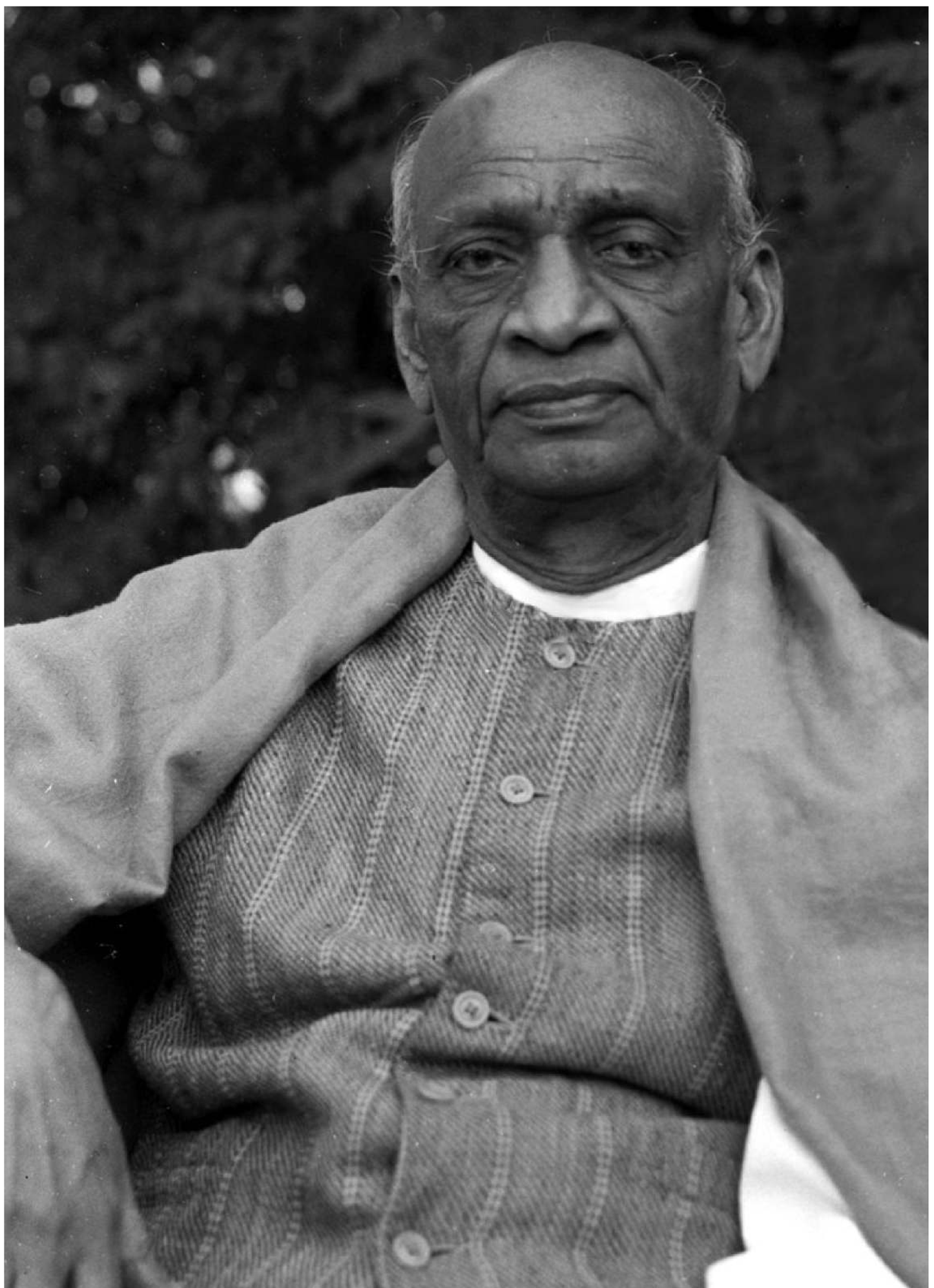

Central Bureau of Communication (CBC)- Ministry of Information and Broadcasting, Government of India

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

सरदार पटेल : भारत के एकीकरण के सूत्रधार

Sardar Patel : Architect of Unification of India

भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार करने के बाद हैदराबाद के निजाम के साथ सरदार पटेल

Sardar Patel with the Nizam of Hyderabad after accepting the proposal for merger with India

कश्मीर के शासक महाराजा हरी सिंह ने कश्मीर का भारत में विलय स्वीकार किया

The ruler of Kashmir, Maharaja Hari Singh accepted the accession of Kashmir to India.

सरदार पटेल के दबाव में जूनागढ़ के नवाब को आखिर भारत में विलय को स्वीकार करना पड़ा

Under the pressure of Sardar Patel, the Nawab of Junagadh finally had to accept the accession to India.

KASHMIR ACCEDES TO INDIA

PLEBISCITE SOON ON RULER'S DECISION

SHEIKH ABDULLA TO FORM INTERIM GOVT.

कश्मीर का भारत में विलय (समाचारपत्र कतरन)

Kashmir's accession to India (Newspaper clipping)

Junagadh To Accede To India

NEW DELHI, Tues. (A.A.P.).— The Junagadh authorities have announced that the predominantly Hindu population of Junagadh State in the recent referendum voted to accede to India.

Junagadh acceded to Pakistan in August, 1947, on the initiative of its Moslem ruler.

Indian troops in November occupied the State. Pakistan protested and India suggested a plebiscite.

जूनागढ़ का भारत में विलय (समाचारपत्र कतरन)

Junagarh's accession to India (Newspaper clipping)

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

सरदार पटेल : भारत के एकीकरण के सूत्रधार

Sardar Patel : Architect of Unification of India

सरदार पटेल को उप-प्रधानमंत्री और गृह मंत्री पद की शपथ दिलवाते हुए राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद

President Rajendra Prasad swearing in Sardar Patel as Deputy Prime Minister and Home Minister

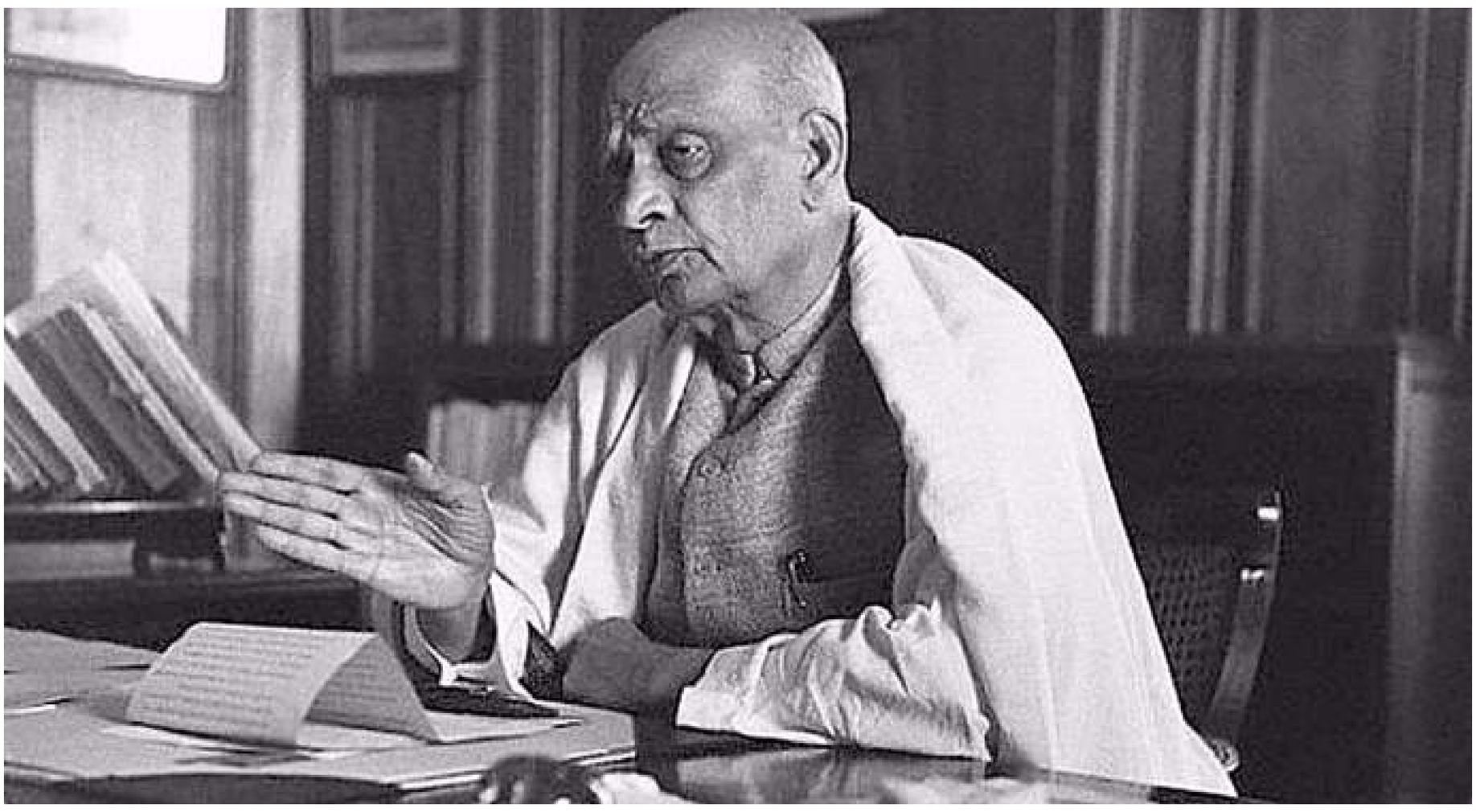

भारत के एकीकरण के सूत्रधार : सरदार पटेल

Sources of unification of India : Sardar Patel

Central Bureau of Communication (CBC)- Ministry of Information and Broadcasting, Government of India

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

सरदार पटेल : भारत के एकीकरण के सूत्रधार

Sardar Patel : Architect of Unification of India

भारत की एकता के सूत्रधार सरदार पटेल की स्मृति में केवड़िया, गुजरात में बनाई विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा

The world's tallest statue in Kevadia, Gujarat, in memory of Sardar Patel, the architect of India's unity

आज़ादी का
अमृत महोत्सव
#AmritMahotsav

स्वतंत्रता की धरोहर

Legacy of Freedom

भारतीय संविधान में हमारी एकता और स्वतंत्रता निहित है, संविधान की ड्राफ्टिंग कमिटी के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अम्बेडकर संविधान के अंतिम मसौदे को संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद को सौंपते हुए, 25 नवंबर 1949

Our unity and freedom is enshrined in the Indian Constitution, Dr. Bhimrao Ambedkar, Chairman of the Drafting Committee of the Constitution handing over the final draft of the Constitution to the President of the Constituent Assembly, Dr. Rajendra Prasad, 25 November 1949

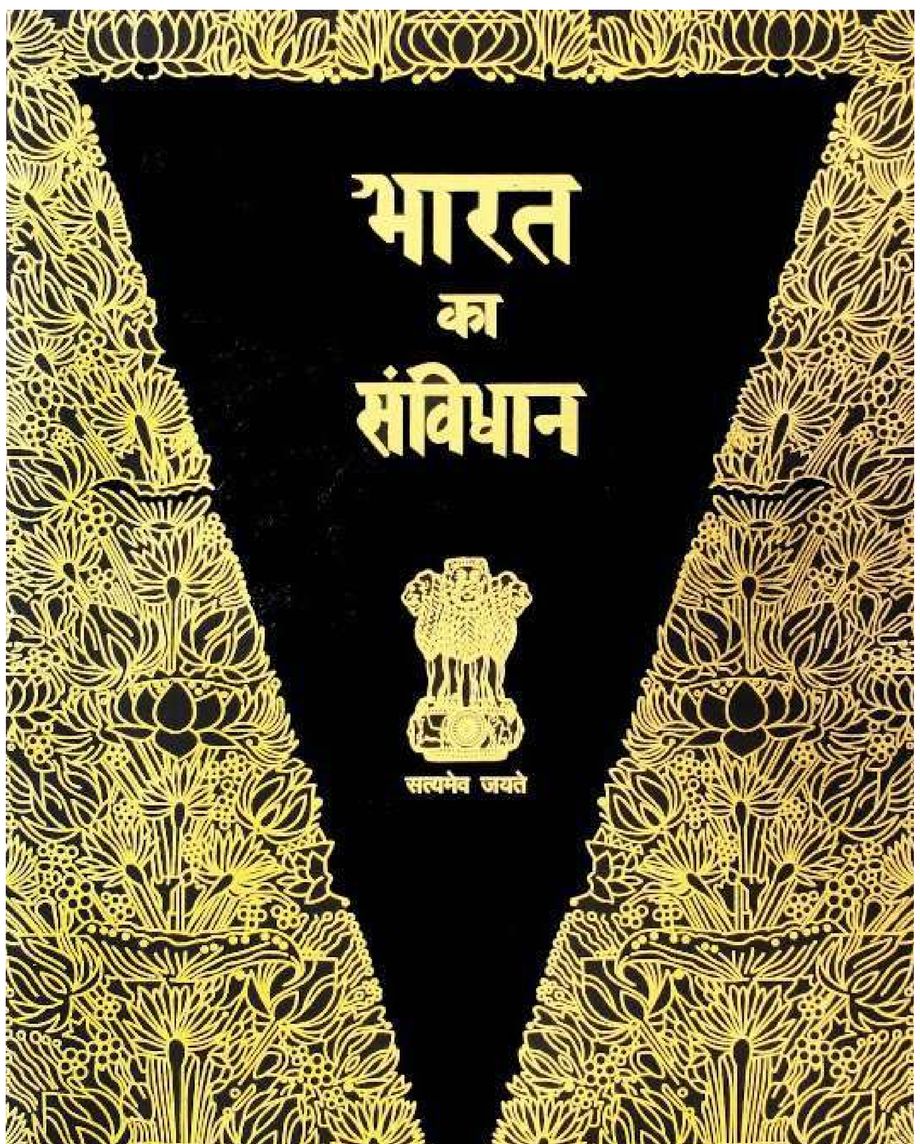

Central Bureau of Communication (CBC)- Ministry of Information and Broadcasting, Government of India

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

‘आज़ादी का अमृत महोत्सव’ के शुभारंभ पर साबरमती, गुजरात में दिनांक 12 मार्च, 2021 को बोलते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा...

आज आजादी के अमृत महोत्सव का पहला दिन है।

अमृत महोत्सव, 15 अगस्त 2022 से 75 सप्ताह पूर्व शुरू हुआ है और 15 अगस्त 2023 तक चलेगा।

मैं इस पुण्य अवसर पर बापू के चरणों में अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

मैं देश के स्वाधीनता संग्राम में अपने आपको आहूत करने वाले, देश को नेतृत्व देने वाली सभी महान विभूतियों के चरणों में नमन करता हूँ, उनका कोटि-कोटि वंदन करता हूँ:

-आज़ादी के पांच स्तम्भ

* Freedom Struggle
* Ideas at 75
* Achievements at 75
* Actions at 75 और
* Resolves at 75

ये पांचों स्तम्भ आज़ादी की लड़ाई के साथ साथ आज़ाद भारत के सपनों और कर्तव्यों को देश के सामने रखकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगे:

* आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी- आज़ादी की ऊर्जा का अमृत।
* आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी - स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणाओं का अमृत।
* आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी - नए विचारों का अमृत। नए संकल्पों का अमृत।
* आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी - आत्मनिर्भरता का अमृत।
* हमारे यहां नमक को कभी उसकी कीमत से नहीं आँका गया।
* हमारे यहाँ नमक का मतलब है- ईमानदारी।
* हमारे यहां नमक का मतलब है- विश्वास।
* हमारे यहां नमक का मतलब है- वफादारी:

- गांधी जी ने देश के इस पुराने दर्द को समझा, जन-जन से जुड़ी उस नब्ज को पकड़ा। और देखते ही देखते ये आंदोलन हर एक भारतीय का आंदोलन बन गया, हर एक भारतीय का संकल्प बन गया। उस दौर में नमक भारत की आत्मनिर्भरता का एक प्रतीक था।
- अंग्रेजों ने भारत के मूल्यों के साथ साथ इस आत्मनिर्भरता पर भी चोट की।
- भारत के लोगों को इंग्लैंड से आने वाले नमक पर निर्भर हो जाना पड़ा।
- 1857 का स्वतंत्रता संग्राम, महात्मा गांधी का विदेश से लौटना, देश को सत्याग्रह की ताकत फिर याद दिलाना, लोकमान्य तिलक का पूर्ण स्वराज्य का आह्वान, नेताजी सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिंद फौज का दिल्ली मार्च, दिल्ली चलो का नारा कौन भूल सकता है।

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

‘आज़ादी का अमृत महोत्सव’ के शुभारंभ पर साबरमती, गुजरात में दिनांक 12 मार्च, 2021 को बोलते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा...

- आजादी के आंदोलन की इस ज्योति को निरंतर जागृत करने का काम, पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण, हर दिशा में, हर क्षेत्र में, हमारे संतो-महंतों, आचार्यों ने किया था।
- एक प्रकार से भक्ति आंदोलन ने राष्ट्रव्यापी स्वाधीनता आंदोलन की पीठिका तैयार की थी।
- देश के कोने कोने से कितने ही दलित, आदिवासी, महिलाएं और युवा हैं जिन्होंने असंख्य तप-त्याग किए।
- याद करिए, तमिलनाडु के 32 वर्षीय नौजवान कोडि काथ् कुमरन को, अंग्रेजों ने उस नौजवान को सिर में गोली मार दी, लेकिन उन्होंने मरते हुये भी देश के झंडे को जमीन में नहीं गिरने दिया
- गोमधर कोंवर, लसित बोरफुकन और ऊ तिरोत सिंग जैसे असम और पूर्वोत्तर के अनेकों स्वाधीनता सेनानी थे जिन्होंने देश की आज़ादी में योगदान दिया है।
- गुजरात में जांबूघोड़ा में नायक आदिवासियों का बलिदान हो, मानगढ़ में सैकड़ों आदिवासियों का नरसंहार हो, देश इनके बलिदान को हमेशा याद रखेगा।
- आंध्र प्रदेश में मण्यम वीरुडु यानी जंगलों के हीरो अल्लूरी सीराराम राजू ने रम्पा आंदोलन का बिगुल फूंका।
- पासल्था खुन्गचेरा ने मिज़ोरम की पहाड़ियों में अंग्रेज़ो से लोहा लिया।
- तमिलनाडु की ही वेलू नाचियार वो पहली महारानी थीं, जिन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी।
- इसी तरह, हमारे देश के आदिवासी समाज ने अपनी वीरता और पराक्रम से लगातार विदेशी हुकूमत को घुटनों पर लाने का काम किया था।

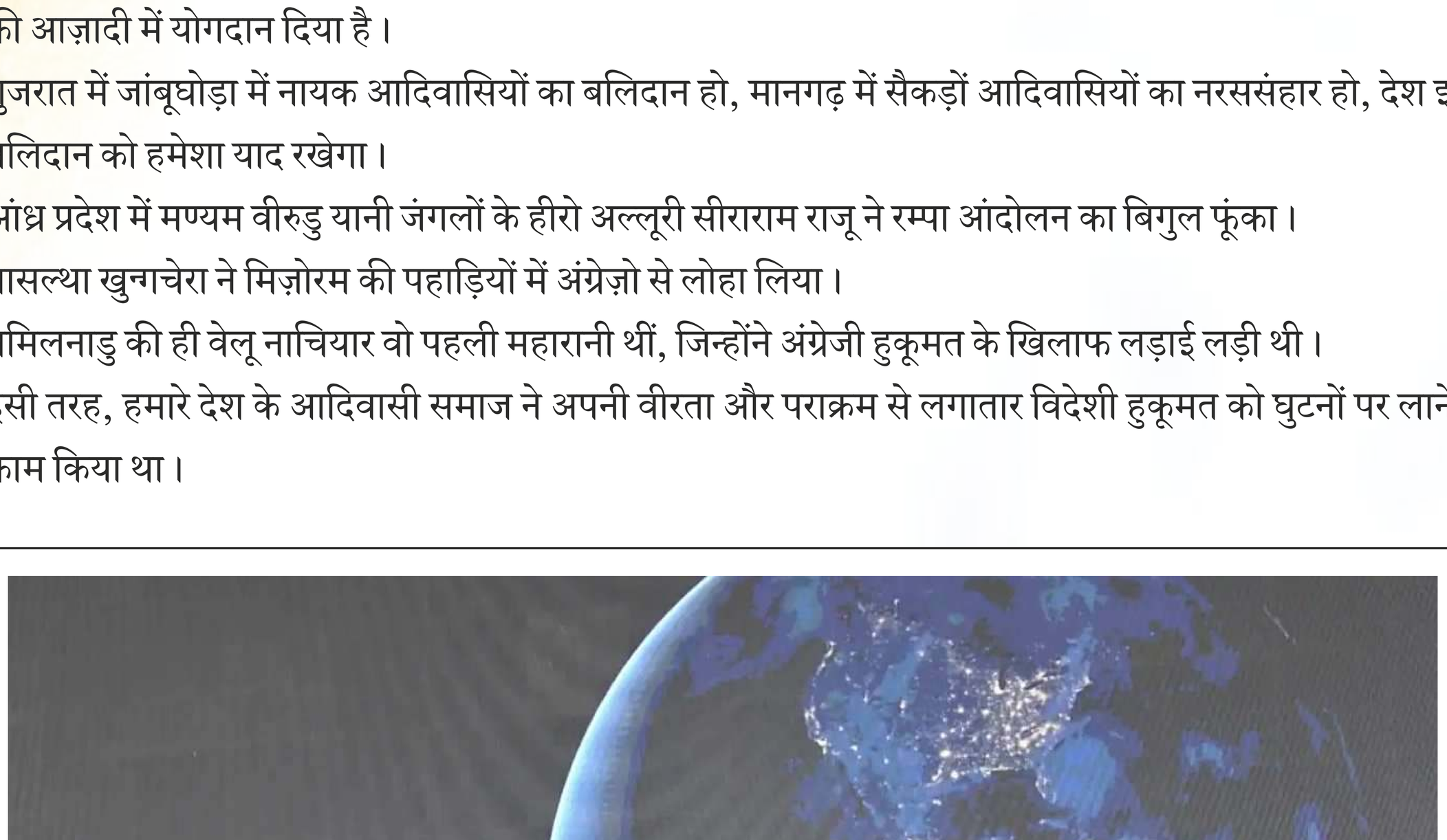

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

‘आज़ादी का अमृत महोत्सव’ के शुभारंभ पर साबरमती, गुजरात में दिनांक 12 मार्च, 2021 को बोलते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा...

- देश इतिहास के इस गौरव को सहेजने के लिए पिछले छह सालों से सजग प्रयास कर रहा है।
- हर राज्य, हर क्षेत्र में इस दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं।
- दांडी यात्रा से जुड़े स्थल का पुनरुद्धार देश ने दो साल पहले ही पूरा किया था। मुझे खुद इस अवसर पर दांडी जाने का अवसर मिला था।
- जालियाँवाला बाग में स्मारक हो या फिर पाइका आंदोलन की स्मृति में स्मारक, सभी पर काम हुआ है।
- बाबा साहेब से जुड़े जो स्थान दशकों से भूले बिसरे पड़े थे, उनका भी विकास देश ने पंचतीर्थ के रूप में किया है।
- अंडमान में जहां नेताजी सुभाष ने देश की पहली आज़ाद सरकार बनाकर तिरंगा फहराया था, देश ने उस विस्मृत इतिहास को भी भव्य आकार दिया है।
- अंडमान निकोबार के द्वीपों को स्वतन्त्रता संग्राम के नामों पर रखा गया है।
- हम भारतीय चाहे देश में रहे हों, या फिर विदेश में, हमने अपनी मेहनत से खुद को साबित किया है।
- हमें गर्व है हमारे संविधान पर।
- हमें गर्व है हमारी लोकतांत्रिक परंपराओं पर।
- लोकतंत्र की जननी भारत, आज भी लोकतंत्र को मजबूती देते हुए आगे बढ़ रहा है।
- आज भी भारत की उपल्धियां आज सिर्फ हमारी अपनी नहीं हैं, बल्कि ये पूरी दुनिया को रोशनी दिखाने वाली हैं, पूरी मानवता को उम्मीद जगाने वाली हैं।
- भारत की आत्मनिर्भरता से ओतप्रोत हमारी विकास यात्रा पूरी दुनिया की विकास यात्रा को गति देने वाली है।
- मैं कला-साहित्य, नाट्य जगत, फिल्म जगत और डिजिटल इंटरनेटनमेंट से जुड़े लोगों से भी आग्रह करूंगा, कितनी ही अद्वितीय कहानियाँ हमारे अतीत में बिखरी पड़ी हैं, इन्हें तलाशिए, इन्हें जीवंत कीजिए।
- हमारे युवा, हमारे scholars ये ज़िम्मेदारी उठाएँ कि वो हमारे स्वाधीनता सेनानियों के इतिहास लेखन में देश के प्रयासों को पूरा करेंगे।
- आज़ादी के आंदोलन में और उसके बाद हमारे समाज की जो उपलब्धियां रही हैं, उन्हें दुनिया के सामने और प्रखरता से लाएँगे।

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

स्वतंत्रता आंदोलन के विस्मृत नायक

The Unsung Hero's of the Freedom Movement

भाई परमानंद : ग़दर पार्टी के संस्थापक सदस्य

Bhai Parmanand : Founder Member of Ghadar Party

कनकलता बरुआ : भारत छोड़ो आंदोलन में हिस्सा लिया जिसमें गोली लगने से शहीद हो गईं

Kanaklata Barua : Participated in Quit India Movement in which she was martyred due to bullet injuries

राव तुला राम : 1857 में ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध स्वतंत्रता के प्रथम संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

Rao Tula Ram : Played an important role in the first war of independence against the British rule in 1857.

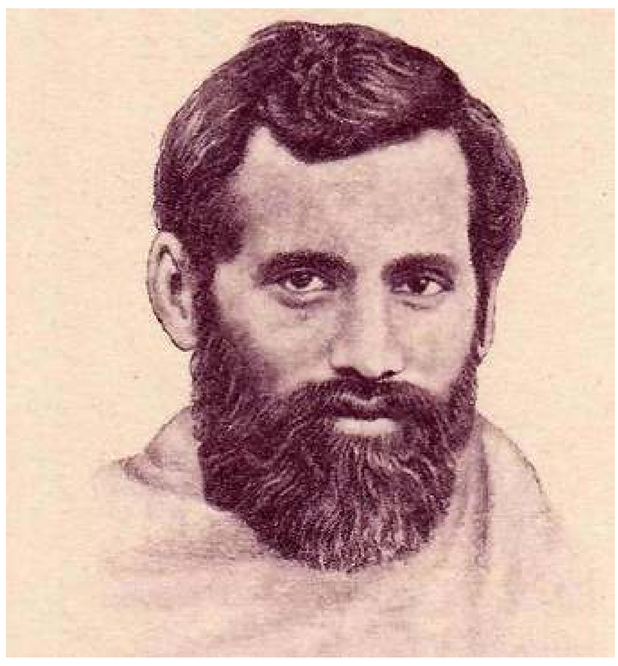

उत्कलमणि गोपाबंधु दास : असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया

Utkalmani Gopabandhu Das : Actively participated in the non-cooperation movement

कादम्बिनी गांगुली : समाज सुधार आंदोलनों में बढ़-चढ़ कर काम किया

Kadamvini Ganguly : Worked extensively in social reform movements

ब्रह्मबांधव उपाध्याय : बंगाली पत्रिका 'संध्या' के संपादक रहे, जिसने अंग्रेजी शासन के खिलाफ आवाज उठाई

Brahmbandhav Upadhyay : He was the editor of the Bengali magazine 'Sandhya', which raised his voice against the British rule.

अश्विनी कुमार दत्त : बंगाल विभाजन के विरोध में स्वदेशी आंदोलन में हिस्सा लिया

Ashwini Kumar Dutt : Took part in the Swadeshi movement against the partition of Bengal

वल्लथोल नारायण मेनन : मलयालम के 'महाकवि' जिनकी कविताओं में स्वतंत्रता संग्राम का आह्वान था

Vallthol Narayan Menon : The 'Mahakavi' of Malayalam whose poems called for the freedom struggle

पजहस्सी राजा : कोट्टयम के राजकुमार जिन्होंने 18वीं सदी में ईस्ट इंडिया कंपनी का विरोध किया

Pazhassi Raja : Prince of Kottayam who opposed the East India Company in the 18th century

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

स्वतंत्रता आंदोलन के विस्मृत नायक

The Unsung Hero's of the Freedom Movement

कालोजी नारायण राव : 'जन्म तुम्हारा है, मृत्यु तुम्हारी है लेकिन जीवन देश के लिए है' का नारा दिया

Kaloji Narayan Rao : 'Birth is yours, death is yours but life is for the country'

टंट्या भील : 'भारतीय रॉबिनहुड' के रूप में याद किया जाता है

Tantya Bheel : Remembered as 'Indian Robinhood'

एन जी चंदावरकर : जलियांवाला बाग हत्याकांड के विरोध में मुंबई में जनसभा की

N G Chandavarkar : Public meeting in Mumbai against Jallianwala Bagh massacre

प्यारेचंद मित्र : बंगाल के पुनर्जागरण में अग्रणी भूमिका निभायी

Pyarechand Mitra : Played a leading role in the renaissance of Bengal

सागरमल गोपा : असहयोग आंदोलन में भाग लिया

Sagarmal Gopa : Took part in the non-cooperation movement

वासुदेव बलवंत फड़के : इन्हें आधुनिक भारत के पहले क्रांतिकारी के रूप में जाना जाता है

Vasudeo Balwant Fadke : He is known as the first revolutionary of modern India.

महावीर सिंह : नौजवान भारत सभा और हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के सक्रिय सदस्य

Mahavir Singh: Active member of Naujawan Bharat Sabha and Hindustan Socialist Republican Association

चम्पक रमन पिल्लई : अफ़ग़ानिस्तान में स्थापित भारत की अस्थायी सरकार में विदेश मंत्री थे

Champak Raman Pillai : Foreign Minister in the provisional government of India established in Afghanistan

जगदीश चन्द्र बसु : भारत में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने में योगदान दिया

Jagdish Chandra Basu : Contributed to the development of scientific outlook in India

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

#AmritMahotsav

स्वतंत्रता आंदोलन के विस्मृत नायक

The Unsung Hero's of the Freedom Movement

अल्लूरी सीताराम राजू : आंध्र में जनजातियों का नेतृत्व किया और उनकी मांगों को असहयोग आंदोलन के साथ जोड़ा

Alluri Sitaram Raju : Led the tribes in Andhra and combined their demands with those of the Non-Cooperation Movement

कोडि काथ कुमारन : इन्होंने देशबन्धु यूथ एसोसिएशन की स्थापना की थी, अंग्रेजों ने इनके सिर पर गोली मार दी, लेकिन इन्होंने मरते दम तक देश के झंडे को जमीन पर नहीं गिरने दिया - 1932

Kodi Kaatha Kumaran : He founded the Deshbandhu Youth Association. The British shot at his head, but he did not let the country's flag fall to the ground until he died - 1932

एक नागा आध्यात्मिक और राजनीतिक नेता जिन्होंने भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया 13 साल की उम्र में उन्होंने रानी गाइदिन्लयू के रू‍प में लोकप्रियता हासिल की

A Naga spiritual and political leader who led a rebellion against British rule in India at the Age of 13 gained popularity as Rani Gaidinliu.

डॉ. महेंद्र लाल सरकार : भारत में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने में योगदान दिया

Dr. Mahender Lal Sarkar : Contributed to the development of scientific outlook in India

के. केलप्पन : पायनूर और कालीकट ने नमक सत्याग्रह का नेतृत्व किया

K. Kelappan : Payanoor and Calicut led the Salt Satyagraha

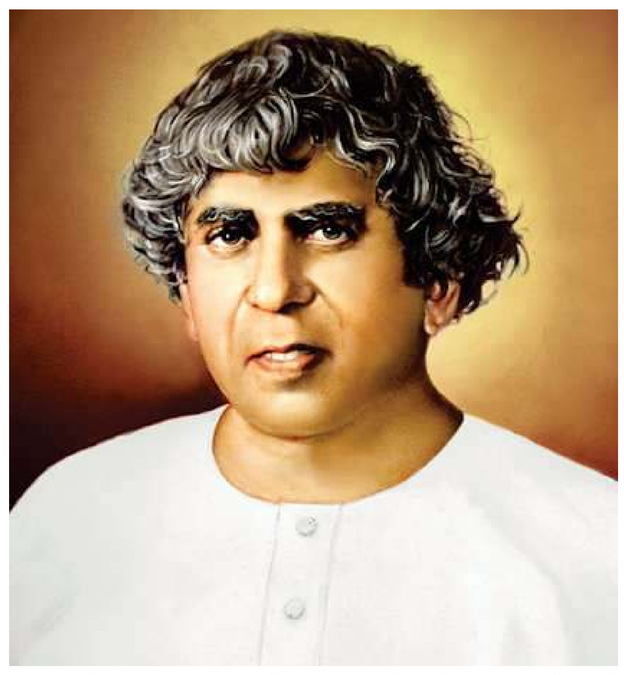

साधु टी एल वासवानी : युवाओं को मातृभूमि की सेवा के लिए प्रेरित किया

Sadhu T L Vaswani: Inspired youth to serve the motherland

पंडित हीरालाल शास्त्री : वनस्थली विद्यापीठ की स्थापना की

Pandit Hiralal Shastri: Founder of Vanasthali Vidyapeeth

वीर नारायण सिंह : पहले छत्तीसगढ़ी स्वतंत्रता सेनानी

Veer Narayan Singh: First Chhattisgarhi Freedom Fighter

पोट्टी श्रीरामुलु : व्यक्तिगत सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया

Potti Sriramulu: Participated in Individual Satyagraha and Quit India Movement